@NewsRotary
/RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

April 2017

Vol.34, Issue 10 Annual Subscription Rs.420

Rotary

साक्षरता की ओर

Act 2

Now that your District Leaders have returned from San Diego, having being further inspired, trained, equipped, to transcend barriers to lead each of you to further progress, support to development of plans to assist the global life's for a better future with better health, necessary comforts, proper educational with vocational and professional training bringing peace and tranquillity through international relations and not forgetting the youth, taking them along the correct path

supporting President Elect IAN RISELEY's - Theme

ROTARY: MAKING A DIFFERENCE

It is now possible for you to globally participate in these programs; the successful result possible through directed efforts once again for Rotary as the best organisation of its kind in the world.

While you are busy planning or executing we are with you to assist you with our expertise in international quality globally acclaimed products, the way you would want them as we have being doing since 1976 and wining laurels, recognition, respect, prestige and honour of the fraternity.

Contact us for any requirements with digital technology available. We are available almost 24/7 and only a few whispers away.

Your

ICON

in Global Rotary since 1976.

'Better Services'

which has now taken its next generic form in

"Better Services Private Limited"

every time a little better

The same it is as it was till now with a continuity that may last forever on quality and service concerns

BETTER SERVICES PRIVATE LIMITED

22, Meghna,64, S.V. Road, Santacruz (W). Mumbai - 400 054, INDIA
Tel.: +91-22-26491143, 26491826, 65818819 Fax: +91 - 22-2649 8201 Website: better.in
E- mail: better@vsnl.com madhnarang@yahoo.com better@betterservices.org

Every time a little better

विषयसूची

14 एक मिशन मोड में रोटरी

चेन्नई में आयोजित रोटरी दक्षिण एशिया साक्षरता शिखर सम्मेलन में RILM की पहल जिसके ज़रिये भारत को निरक्षरता से छुटकारा दिलाया जा सकता है, पर चर्चा की गयी।

20 चलिए मानव संवेदना का वैश्वीकरण करें

विश्व के बच्चों के लिए करुणा की वकालत करते हुए, साक्षरता सम्मेलन में नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी के भावपूर्ण भाषण का सारांश।

58 रो ई अध्यक्ष की भारत के राष्ट्रपति से भेंट

रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म और जुडी की राष्ट्रपति भवन में भारत के राष्ट्रपति से मुलाक़ात।

32 साक्षरता शिखर सम्मेलन में गुमनाम नायकों का अभिनंदन

चेन्नई साक्षरता शिखर सम्मेलन ने साक्षरता पुरस्कारों के साथ साक्षरता के नि:शब्द नायकों का जश्न मनाया।

36 टीआरएफ लक्ष्य 2017–18

मुंबई में RIDE सी बासकर द्वारा बुलाई गई नवनिर्वाचित DG ओं के लिए गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम का एक वर्णन।

46 ई-मतदान की अहमीयत

इ-वोटिंग पर RID मनोज देसाई की सोच और RIDE सी बासकर का इस विचार पर समर्थन।

54 गंगा की सफाई

रोटरी इंडिया WinS समिति और स्वच्छ गंगा राष्ट्रीय मिशन के बीच एक ऐतिहासिक MoU हस्ताक्षर सम्मेलन।

66 अमेरिका को प्राथमिकता देकर क्या ट्रम्प गलत है?

अमेरिकी के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प पर कई आलोचनाएं हैं, परंतु उनका ध्यान अमेरिका को सुधारना है और वह यही काम के लिए चुने गए हैं।

62 भारतीय कपड़ों के साथ रोमांस

इस अंक के साथ हम भारतीय कपड़ों की संपन्न विविधता एवं विरासत पर लेखों की श्रृंखला की शुरुआत करते है।

70 मेक्सिको में वेनिस का अनुभव

मैक्सिको में एक विश्व धरोहर स्थल, सओचीमिल्को की नहरों पर नाव की सवारी, आपको वेनिस के प्रसिद्ध गोंडोला-सवारी की याद दिलाता है।

कवर पर: चेन्नई साक्षरता शिखर सम्मेलन में आशा किरण मस्कॉट के शुभारंभ में स्कूल के बच्चे।

चित्र: रशीदा भगत्

दीपा प्रेरित करती है, दत्त चौंकाते है

मुझे दीपा मलिक को साक्षात् सुनने का, और ईमेल पर उनसे बातचीत करने का अवसर मिला, और प्रमुख लेख *अक्षमता से परे क्षमता* अभी तक मेरे शरीर में थरथराहट ला रहा है और एक भारतीय के रूप में मेरे अंदर प्रेरणा और गर्व भर रहा है। उनके जज्बे और साहस को सलाम। मार्च में इसे मुख्य लेख बनाना, जब हम अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाते है, नारीत्व की भावना का सम्मान है।

आपके संपादकीय में आपने अपने साथी की भूमिका को चिन्हित किया है और इसने मुझे दीपा मलिक की उपलब्धियों में उनके पति बिक्रम सिंह मलिक की भूमिका के बारे में सोचने पर विवश किया। हम सभी उनसे प्रेरणा ले सकते है क्योंकि वह वास्तव में मानवता की सेवा' का उत्कृष्ट उदाहरण है।

रोटरी समाचार, जिसे मैं हमेशा पढ़ना और साझा करना पसंद करता हूँ, का एक और अद्भुत अंक लाने के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद्।

मनोज काबरे रोटरी क्लब बैंगलोर
व्हाइटफील्ड सेंट्रल - मंडल 3190

दीपा मलिक को सलाम। इस बात की कल्पना करना मुश्किल है कि एक व्यक्ति उसके जीवन में इतनी बड़ी अग्नि-परीक्षा से गुजरा हो। उनके प्रिय परिवार को उन्हें उदार समर्थन देने और उनसे सहानुभूति रखने के लिए सलाम। यह हम रोटरी सदस्यों के लिए एक प्रेरणात्मक वाकया होना चाहिए।

यह अद्भुत है कि रो ई मंडल ने उन्हें एक श्रेष्ठ उदाहरण के रूप में चुना।

यह साहसी हिस्सा है, परन्तु मैं दिखावे वाले हिस्से को पसंद नहीं करता हूँ। मैं आशा करता हूँ कि यह केवल एक भूल हो, क्योंकि मेरे हिसाब से संजय दत्त जैसा व्यक्ति कही भी रोटरी में फिट नहीं बैठता।

श्रीकांत कोलाथाया
रोटरी क्लब पुत्तूर - मंडल 3181

मैं कवर पेज पर संजय दत्त, एक अपराधी, की तस्वीर देखकर स्तब्ध था। हम रोटरी की सार्वजनिक छवि के महत्व के बारे में बहुत बातें करते है। उसकी तस्वीर छापकर हमनें मशहूर व्यक्तियों के प्रति हमारे दुर्भाग्यपूर्ण आकर्षण का समर्थन किया है, उनकी पृष्ठभूमि या पिछले कार्यो की परवाह किये बगैर।

पीडीजी सी सुरेश
मंडल 3150

मैं मार्च अंक के कवर पेज पर एक अपराधी की तस्वीर देखकर हैरान हूँ। क्या यह रोटरी के अनुरूप है?

पीडीजी सज्जन गोयंका, मंडल 3140

मैं संजय दत्त की तस्वीर देखकर भौचक्का रह गया; क्या उसने रोटरी की कोई परियोजना प्रायोजित की है, और यदि हाँ, तो क्या यह उसे उसके पिछले कर्मो से मुक्त करता है? मंडल 3141 के सम्मेलन में उसे निमंत्रित करने का फैसला किसका था? क्या यह रोटरी के 4-तरफा टेस्ट में फिट बैठता है? मैं रोटरी का बहुत सम्मान करता हूँ और उससे प्यार करता हूँ परन्तु ऐसी घटनाएं मुझे पूरी तरह से हिला देती है।

संजय वैध्य
रोटरी क्लब ठाणे नार्थ - मंडल3142

हम मदद तो नहीं कर सकते परन्तु दीपा मलिक के चुनौतीपूर्ण मार्ग की प्रशंसा करते है (*अक्षमता से परे क्षमता*, मार्च अंक)। उनके पति विक्रम सिंह का समर्थन उत्कृष्ट है। उनका आश्वासन, "पैरों के बारे में चिंता मत करो। मैं तुम्हें पूरी ज़िन्दगी अपने हाथों में उठाऊंगा," हमारे दिलों को छू रहा है। ऐसा शानदार लेख लिखने के लिए धन्यवाद रशीदा।

पी मुरुगन रोटरी
क्लब गोल्डन सिटी
नागेरकोइल मंडल 3212

मैं मार्च का कवर पेज देखकर दुखी हूँ। उसने भले ही सजा भुगत चुकी हो परन्तु हम सभी जानते है कि उसने एक जघन्य अपराध किया था। किस कारण से रोटरी ऐसे व्यक्ति के साथ सम्बद्ध हुई? और उसकी तस्वीर इस्तेमाल करने के लिए? क्या आपके पास मानवता की सेवा के लिए की गयी रोटरी की परियोजनाओं की अच्छी तस्वीरों की कमी है?

संदीप गोइल
रोटरी क्लब करनाल
मिडटाउन मंडल 3080

मंडल 3141 के सम्मेलन में संजय दत्त एक अतिथि वक्ता थे, जिस की विस्तृत सूचना मैंने की, और पैरालम्पियन दीपा मालिक, जिनकी प्रेरणादायक कहानी को पत्रिका में बताया गया, के बाजू वह बैठे थे। यहाँ एक बड़ा अंतर नज़र आया जिसके कारण अंक का शीर्षक मनोबल और मनोरंजन' रखा गया।

संपादक

एक उत्कृष्ट पत्रिका

वर्ष 1911 में रो ई अध्यक्ष ग्लेन जी हेड ने 12-पृष्ठीय समाचार पत्र - *दी नेशनल रोटरियन* का नाम बदलकर *द रोटरियन* कर दिया। उस समय उन्होंने यह भी कहा कि पत्रिका में सामान्य रूचि की पाठन सामग्रियाँ होना चाहिए जो सभी में रूचि पैदा करेगा। मैं प्रसन्न हूँ कि 104 वर्ष पुराने कथन का *दी रोटरियन* और *रोटरी समाचार* दलों ने अनुसरण किया। मार्च अंक में मैंने अनेक रोचक लेखों को पाया जैसे *अक्षमता से परे क्षमता, गंभीर मनोरंजन, क्यों रोटरी को एक अनूठे संगठन के रूप में नामित किया गया,* और रोटरी साथियों पर संपादकीय। *रोटरी समाचार* का संपादकीय दल प्रत्येक अंक में सुधार कर रहा है। संपादक और उनके दल का अभिनंदन।

आर श्रीनिवासन
रोटरी क्लब मदुरई मिडटाउन - मंडल 3000

मार्च अंक में, *आशा का दमन* एक दिल को छू लेने वाला लेख था। रोटरी क्लब वापी, मंडल 3060, हमारे चहेते ट्रस्टी प्रमुख कल्याण बैनर्जी का गृह क्लब, ने 177 लोगों को कृत्रिम हाथ प्रदान किये। निस्संदेह, टीआरएफ के माध्यम से रोटरी संसार में अच्छा कर रही है।

एन जगथीसन, रोटरी क्लब एलुरु - मंडल 3020

मैं AKS सदस्य मनोज इसरानी के विचार से प्रभावित हूँ। संपादक के हर उस व्यक्ति से जिसका वह साक्षात्कार करती है सर्वश्रेष्ठ रूप निकालने के लिए सलाम।

जी कार्तिकेयन रोटरी क्लब मन्नारगुी -मंडल 2981

मैं दो वर्ष पहले रोटरी कोयम्बटूर ईस्ट - मंडल 3201 से जुड़ा। मुझे एक रोटरी सदस्य होने पर गर्व है। फरवरी अंक में अनेक उपयोगी सन्देश और लेख है जो मेरे जैसे युवा रोटरी सदस्य के लिए बहुत उपयोगी है।

राजेश चिन्नासामी
रोटरी क्लब कोयम्बटूर ईस्ट - मंडल 3201

चलिए अंग दान को प्रोत्साहित करें

अंग दान से बेहतर कोई और सेवा नहीं हो सकती, विशेषरूप से जब हमारी ज़िन्दगी गुमनामी की ओर हो और तब वे अन्य छह लोगों को नयी ज़िन्दगी प्रदान करती है। इस नेक कार्य के लिए रोटरियन पुनीत महाजन को बधाइयाँ।

जून 2011 में, रोटरी क्लब कैंटोनमेंट सिकंदराबाद (मंडल 3150) की रोटरियन एन वी लक्ष्मी को मस्तिष्क का हैमरेज हुआ और उन्हें ब्रेन डेड घोषित कर दिया गया। उनके सभी अंग दान किये गए। उनके परिवार ने एक गैर सरकारी संगठन - एन वी लक्ष्मी संस्थान (www.nvlakshmifoundation.org) की स्थापना की। चलिए एक कार्यवाही समूह की शुरुआत करें ताकि लोगों में अंग दान के अभिप्राय को प्रोत्साहित किया जा सकें।

एन मोहन
रोटरी क्लब कैंटोनमेंट सिकंदराबाद - मंडल 3150

क्यों रोटरी को एक अनूठे संगठन के रूप में नामित किया गया लेख प्रेरणादायक, शिक्षाप्रद और एक बार से अधिक पने लायक है। चूंकि मैं टीआरएफ का एक भूतपूर्व सदस्य हूँ (वर्ष 2008 में जीएसई दल का सदस्य), मैंने अनुभव किया है कि कैसे और क्यों रोटरी एक अनूठा संगठन हे। रोटरी अनूठी इसलिए है क्योंकि दुनिया भर में रोटरी सदस्य वैश्विक स्तर पर काम करते है, स्थानीय तौर पर प्रभावित करते है।

आर मुरली कृष्ण
प्रेसिडेंट, रोटरी क्लब बेरहमपुर - मंडल 3262

एक पुस्तकालय रोटरी समाचार का समर्थन करता है!

हमारे पुस्तकालय में *रोटरी समाचार* भेजने के लिए धन्यवाद। इस बात को अवश्य सुनिश्चित कीजिये कि हमें यह मिलती रहे क्योंकि यह हमारे पुस्तकालय के पाठकों के मध्य बहुत लोकप्रिय हो गयी है।

सूर्यवंशी, सचिव, सु-साहित्य पुस्तकालय
अमरावती, महाराष्ट्र

फरवरी अंक में जयश्री द्वारा लिखित *स्ट्रॉबेरी की धरती में* ने महाबलेश्वर की पूरी तस्वीर प्रकट की। मैं 15 वर्ष पूर्व चला गया, जब आखिरी बार मैंने उस हिल स्टेशन का दौरा किया था। मुझे ख़ुशी है कि जिस संपत्ति में लेखिका ठहरी वह एक रोटरी सदस्य की है। साथही *रोटरी समाचार* को मालिक का फ़ोन नंबर भी देना चाहिए जिससे कि इच्छुक रोटरी सदस्य उनसे सीधे संपर्क कर सकें।

एस एस नायर
रोटरी क्लब कलहाकुत्तम - मंडल 3211

फरवरी अंक की कवर पेज की तस्वीर रोटरी के मानक की पुष्टि नहीं करती है। इसके साथ ही 80 प्रतिशत लेख संपादक रशीदा भगत् ने लिखें है। वह इन सभी कार्यक्रमों और अवसरों पर मौजूद नहीं हो सकती। इसलिए, उन संवाददाताओं का नाम लिखिए जिन्होंने इन लेखों को लिखा है।

हेमंत गोगटे, मंडल 3140

वह उन **सभी** कार्यक्रमों में उपस्थित थी और उन्होंने **वे सभी** लेख वास्तव में लिखे है!

संपादक

अपने विचार संपादक को भेजें।
rotarynews@rosaonline.org; rushbhagat@gmail.com
पर इ-मेल करें।

Governors Council

RI Dist 2981	DG	A Mani
RI Dist 2982	DG	T Shanmugasundaram
RI Dist 3000	DG	M Muruganandam
RI Dist 3011	DG	Dr N Subramanian
RI Dist 3012	DG	Sharat Jain
RI Dist 3020	DG	Dr S V S Rao
RI Dist 3030	DG	Mahesh H Mokalkar
RI Dist 3040	DG	Darshan Singh Gandhi
RI Dist 3051	DG	Dinesh Kumar V Thacker
RI Dist 3052	DG	Ramesh Choudhary
RI Dist 3053	DG	Bhupendra Jain
RI Dist 3060	DG	Hitesh Manharlal Jariwala
RI Dist 3070	DG	Dr Sarbjeet Singh
RI Dist 3080	DG	Raman Aneja
RI Dist 3090	DG	Sanjay Gupta
RI Dist 3110	DG	Dr Ravi Mehra
RI Dist 3120	DG	Dr Pramod Kumar
RI Dist 3131	DG	Prashant Deshmukh
RI Dist 3132	DG	Pramod Shashikant Parikh
RI Dist 3141	DG	Gopal Rai Mandhania
RI Dist 3142	DG	Dr Chandrashekhar Kolvekar
RI Dist 3150	DG	Ratna Prabhakar Anne
RI Dist 3160	DG	Sreerama Murthy
RI Dist 3170	DG	Dr Vinaykumar Pai Raikar
RI Dist 3181	DG	Dr R S Nagarjuna
RI Dist 3182	DG	Devarunda Subbegowda Ravi
RI Dist 3190	DG	H R Ananth
RI Dist 3201	DG	Dr Prakash Chandran Arackal
RI Dist 3202	DG	Dr Jayaprakash P Upadhya
RI Dist 3211	DG	Dr John Daniel
RI Dist 3212	DG	Dr K Vijayakumar
RI Dist 3230	DG	Natrajan Nagoji
RI Dist 3240	DG	Dr Rintu Guha Niyogi
RI Dist 3250	DG	Dr R Bharat
RI Dist 3261	DG	Deepak Mehta
RI Dist 3262	DG	Narayan Nayak
RI Dist 3291	DG	Shyamashree Sen

Board of Permanent Trustees & Executive Committee

PRIP	Rajendra K Saboo	RI Dist 3080
PRIP	Kalyan Banerjee	RI Dist 3060
PRID	Sudarshan Agarwal	RI Dist 3011
PRID	Panduranga Setty	RI Dist 3190
PRID	Sushil Gupta	RI Dist 3011
PRID	Ashok Mahajan	RI Dist 3140
PRID	Yash Pal Das	RI Dist 3080
PRID	Shekhar Mehta	RI Dist 3291
PRID	P T Prabhakhar	RI Dist 3230
RID	Dr Manoj D Desai	RI Dist 3060
RIDE	C Basker	RI Dist 3000

Executive Committee Members (2016–17)

DG	M Muruganandam Chair - Governors Council	RI Dist 3000
DG	Shyamashree Sen Secretary - Governors Council	RI Dist 3291
DG	Sarbjeet Singh Secretary - Executive Committee	RI Dist 3070
DG	Natarajan Nagoji Treasurer - Executive Committee	RI Dist 3230
DG	Gopal Rai Mandhania Member - Advisory Committee	RI Dist 3141

ROTARY NEWS / ROTARY SAMACHAR

Editor
Rasheeda Bhagat

Senior Assistant Editor
Jaishree Padmanabhan

Send all correspondence and subscriptions to

ROTARY NEWS TRUST
3rd Floor, Dugar Towers, 34 Marshalls Road
Egmore, Chennai 600 008, India.
Phone : 044 42145666
e-mail : rotarynews@rosaonline.org
Website : www.rotarynewsonline.org

Printed by Mukesh Arneja at Thomson Press (India) Ltd, Plot A-9, Industrial Complex, Maraimalai Nagar 603209, India and published by Mukesh Arneja on behalf of Rotary News Trust from Dugar Towers, 3rd Flr, 34, Marshalls Road, Egmore, Chennai 600 008. Editor: Rasheeda Bhagat.

The views expressed by contributors are not necessarily those of the Editor or Trustees of Rotary News Trust or Rotary International. No liability can be accepted for any loss arising from editorial or advertisement content. Contributions – original content – is welcome but the Editor reserves the right to edit for clarity or length. Content can be reproduced, but with permission from RNT.

संपादक
का संदेश

गुलामी की जकड़ में बच्चे, अवमूल्यन की पकड़ में लड़कियाँ

लगातार दूसरे साल, चेन्नै में आयोजित दक्षिण एशिया साक्षरता शिखर सम्मेलन में उपस्थित 2,450 विशेष प्रतिनिधियों को, एक ऐसे जादू को महसूस करने का मौका मिला जिसे कोई नोबेल पुरस्कार प्रापक पैदा कर सकता है। नोबेल पुरस्कार प्रापक कैलाश सत्यार्थी ने रोटेरियनों से खचाखच भरे सभा मंडप को मंत्र मुग्ध कर दिया; अपने व्यंगपूर्ण हास्य से उन्हे हँसाया; उन्होने जिन बच्चों को गुलामी की जकड से छुडवाया था उनमे से कुछ ने जिन यातनाओं को भुगता था उनका बयान करते हुये वहाँ उपस्थित दर्शाकों की आँखों को नम करने के साथ उनकी भावनाओं को भी दहलाकर रख दिया। जो बच्चे अपनी माँ ओं के लिये रो रहे थे उन्हे पंखों पर उल्टा लटकाकर, पीटा जाता था, कभी कभी कपडे काटने के लिये इस्तेमाल किये जाने वाली कैंचियों स भी! एक ही अवस्था में बैठे रहने पर मजबूर कर दिया जाता था जिससे उनके पैर इतने विकृत हो जाते थे कि वे दोबारा चल भी हीं पायेंगे। काम करते हुये छोटी-मोटी गलतियों के लिये भी उन्हे बुरी तरह से दाग दिया या पीटा जाता था। दवाई देने या उनके ज़ख्मों पर मरहम लगाने के बजाय, कभी कभी इन ज़ख्मों पर माचीस की तीली का पावडर भरकर झुलसा दिया जाता था ताकि चरबी और त्वचा जलकर एक से एक मिल जाये।

इन कहानियों के साथ उन्होने हम में से हर एक के भीतर छिपे भले इंसान से गुजारिश की। वह भला इंसान क्यों कर छात्रावास के उस वार्डन के करतूत को माफ करने वाला है जिसने सजा के नाम पर लडकियों को बिना कपडों के चलने के लिये कहा और उनकी तस्वीरें भी ली थी? या एक 3 साल की बच्ची के नज़दीकी रिश्तेदार को, जिसने उस बच्ची पर बलात्कार किया था? ''यदि हमारी बेटियाँ अपने घरों में, पडोसी इलाकों में और सबसे बडी बात स्कूलों में सुरक्षित नहीं हो तो हमें तुरंत कार्रवाई शुरू करनी होगी, हम और इंतजार नहीं कर सकते। यह एक गंभीर चुनौति है,'' वें नि:शब्द शाँति के बीच गरज उठे। हमारे बच्चों के लिये सत्यार्थी के उत्कृष्ट पक्ष-समर्थन के बारे में जानने, इस अंक के पृष्ठ 18 में एक विस्तृत लेख पढ़ें। लेकिन हमारे बच्चों के लिये सुरक्षित घरों और पडोसी इलाकों के बाबत में उनके जोशीले निवेदन ने मुझे कन्या भ्रूण हत्या पर 2004 में आयोजित, अखिल-भारतीय सम्मेलन की याद दिलायी जिसमें मैं भी हाजिर थी।

विचार विमर्श, अनचाही बाल कन्याओं पर संकेद्रित था और जागोरी नामक महिला सशक्तिकरण की दिशा में काम करने वाली संस्था की संस्थापिका आभा भैया ने अपनी एक कार्यशाला के बारे में जिक्र किया जिसे उन्होने राजस्थान में, एक दूरवर्ती गाँव की महिलाओं को प्रशिक्षित करने के लिये आयोजित किया था। उनमे से एक महिला अपने 8 माह के बेटे और 3 साल की बेटी को साथ लेकर आयी थी; अचानक उसका बेटा तेज बुखार के साथ बीमार पड गया। ''उसे साँस लेने में बेहद दिक्कत हो रही थी; वह एक दूरवर्ती गाँव था जहाँ किसी तरह की चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध नहीं थी और उसकी माँ ने अपनी बेटी की ओर इशारा करते हुये कहा: अच्छा होता उसे यह बुखार हो जाता।'' अगले रोज उस बच्चे को अस्पताल में भरती कराया गया और वह ठीक हो गया। बाद में जब आभा ने ऐसा कहने पर उस महिला के पास जाकर आक्षेप किया तो उसने कहा: 'देखिये, यदि मेरी बेटी मर जाती तो फिर भी मैं अपने घर वापिस जा पाती थी। लेकिन यदि चार बेटियों के बाद पैदा मेरा बेटा मर गया होता तो मैं कौन सा मुँह लेकर घर जाती और मुझे तो खुदकुशी करने के अलावा कोई चारा भी नहीं रहा होता क्यों कि मेरे परिवार वाले मुझे घर में पैर भी नहीं रखने देंगे क्यों कि यह बच्चा उनके लिये बेशकीमती है,'; आभा ने आगे कहा, ''यह उसकी लाचारी है। कोई भी माँ अपने बच्चे को मारना नहीं चाहेगी, लेकिन असलीयत यही है। सचाई तो यही है कि उसका बेटा ही उसके घर लौटने का 'पासपोर्ट' है।''

इस वाकयात् का बयान करते हुये आज भी मेरे रोंगटे खडे हो जाते है जहाँ एक माँ चाहती है कि उसके बेटे के बजाय बेटी की मौत हो जाये! इसलिये नहीं कि उसे बेटी कम अच्छी लगती है बल्कि इसलिये कि उसका बेटा ही समूचे परिवार के लिये एक बहुमूल्य संपत्ति है। एक दशक से ज्यादा वक्त गुजर चुका है लेकिन कडवा सच यही है कि भारत के अनेक हिस्सों में बेटियों का अवमूल्यन किया जाता है यानि उन्हे कम आँका जाता है। और अपने ही घरों और स्कूलों में वें असुरक्षित है।

रशीदा भगत्

अध्यक्ष
की ज़बानी

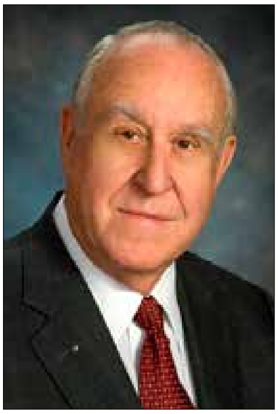

टीकाकरण के अविश्वसनीय प्रभाव

प्रिय साथी रोटरी सदस्यों,

विश्व भर में, विकसित देशों के साथ-साथ विकासशील देशों में भी, शिशु मृत्यु दर कम हो रही है और जीवन प्रत्याशा बढ़ रही है। वर्ष 1960 में, पैदा हुए प्रत्येक 1,000 बच्चों में से 182 बच्चे, पाँच वर्ष की आयु पूर्ण करने से पूर्व मर गए; आज वह दर 43 तक गिर गयी है। 1960 में पैदा होने वाला एक बच्चा औसतन केवल 52 वर्ष जीने की आशा कर सकता था; इसके विपरीत, इस वर्ष पैदा होने वाला एक बच्चा 71 वर्ष जीने की आशा कर सकता है।

तब भी और आज भी, बच्चे के भाग्य का निर्धारण करने वाले कारक जन्म पर तय होते है: लका पैदा हुआ है या लकी, परिवार की शिक्षा और आर्थिक स्थिति, स्वास्थ्य सुविधाओं की उपलब्धता। फिर भी सार्वजनिक स्वास्थ्य क्षेत्र में हुई सबसे महत्वपूर्ण प्रगतियों में से एक प्रगति जो हर देश तक पहुँची है और अब हर बच्चे तक पहुंचना चाहिए, वह है: टीकाकरण।

दुनिया के कई हिस्सों में, टीकों के इस्तेमाल ने लगभग उन बीमारियों को समाप्त कर दिया है जो एक समय व्यापक स्तर पर फैली हुई थी, जैसे कि डिप्थीरिया, टिटनेस और रूबेला। टीकों के कारण, वर्ष 2000 से अब तक खसरे की बीमारी से 20 मिलियन लोगों को बचाया जा चुका है। स्मॉल्पाक्स को मिटा दिया गया है - और अब पोलियो की बारी है।

तीस वर्ष पहले, दुनिया भर में प्रति वर्ष पोलियो के अनुमानित 3,50,000 मामलें सामने आते थे। जब *दी रोटेरियन* का यह अंक प्रेस में गया, वर्ष 2016 में पोलियो के केवल 37 मामलें दर्ज किये गए थे जो इतिहास में अब तक सबसे कम है। बाकि सभी अन्य मामले, और लकवा एवं मौत जो इनके कारण हुई होती, को एक सुरक्षित, भरोसेमंद और सस्ते टीके के व्यापक इस्तेमाल द्वारा रोक लिया गया।

कुल मिलाकर, विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि प्रति वर्ष टीकाकरण अनुमानित 2 मिलियन से 3 मिलियन मौतों को रोकता है। यह विकलांगता और आर्थिक हानि के एक जबर्दस्त बोझ से भी बचाता है। फिर भी हम और भी अच्छा कर सकते है: दुनिया भर में टीके की पहुँच को बेहतर करके अतिरिक्त 15 लाख मौतों को टाला जा सकता है।

इस माह, 24 से 30 अप्रैल तक, हम डब्ल्यूएचओ, यूनिसेफ, और यू एस रोग नियंत्रण एवं रोकथाम केन्द्रों के साथ मिलकर विश्व टीकाकरण सप्ताह' का उत्सव मनाते है, जो विश्व स्वास्थ्य पर टीकों द्वारा पड़ने वाले असाधारण प्रभाव की जागरूकता फैलाता है। इस वर्ष का विषय है टीको का कार्य - और वे करते है।

टीको के बढ़ते इस्तेमाल के सार्वजनिक स्वास्थ्य पर व्यापक अप्रत्यक्ष प्रभाव है: यह वायरल हेपेटाइटिस को नियंत्रित कर रहा है, एंटीबायोटिक दवाओं और एंटीबायोटिक प्रतिरोधी जीवाणुओं के विकास दोनों की आवश्यकता में कमी कर रहा है, और अत्यावश्यक स्वास्थ्य हस्तक्षेप के साथ अधिक बच्चों एवं किशोरों तक पहुँच रहा है। दुनिया के हर हिस्से में, नियमित टीकाकरण हमेशा से ही इस बात को सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण रहा है कि प्रत्येक बच्चे को स्वस्थ भविष्य में सर्वश्रेष्ठ मौका मिले।

एक अनिश्चित दुनिया में, टीकें कुछ अनूठा प्रदान करते है: जिंदगी भर हमारे बच्चों को बचाने का एक तरीका। सभी बच्चों को पोलियो एवं अन्य रोक सकने योग्य बीमारियों से सुरक्षित करने के लिए साथ कार्य करके, रोटरी वास्तव में *मानवता की सेवा* कर रही है - आज और आने वाली पीढ़ीयों के लिए।

जॉन एफ जर्म
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

रो ई निदेशक

का संदेशा

स्वच्छता एवं साक्षरता

हमारे सम्माननीय प्रधान मंत्री के स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत स्वच्छ गंगा अभियान के लिये एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित करने की महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए ट्रस्टी सुशील जी (सुशील गुप्ता) को बधाई। एक और बार दोस्तों, रोटरी की विश्वसनीयता सिद्ध हो गयी।

डब्ल्यू. एच. ऑडेन ने कहा था, "हजारों प्यार के बिना जिये है, परन्तु एक भी बिना पानी के नहीं।"

दोस्तों, हम सुन रहे है कि अगर तीसरा विश्व युद्ध होगा, तो वह पानी के लिए लड़ा जायेगा। यह दर्शाता है कि हमारे लिए पीने योग्य पानी पर कार्य करना एवं पानी की बचत के लिए जागरूकता पैदा करना कितना आवश्यक है।

स्वच्छता के विषय में, मैं और क्या कह सकता हूँ? पिछले बीस महीनों से, मैं WinS के जादू का साक्षी हूँ। रोटरी की यह फ्लैगशिप परियोजना प्रशंसनीय है। स्कूल ध्यानाकर्षण में है क्योंकि हम बच्चों, जो हमारा कल है, में व्यावहारिक परिवर्तन लाना चाहते है क्योंकि रोटरी उन तक बचपन में ही पहुँचने में विश्वास करती है।

मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने भारत के मिसाइल पुरुष, स्वर्गीय ए पी जे अब्दुल कलाम को श्रद्धांजलि दी और हर एक, एक तक पहुँचे और एक को पाढ़यें' के महत्व पर ज़ोर दिया। उन्होंने एक उत्कृष्ट फार्मूले का भी सुझाव दिया कि प्रत्यके विद्यार्थी को निरक्षर परिवार के सदस्यों को शिक्षित करना चाहिए और भारत को साक्षर बनाना चाहिए।

यहाँ मुझे सर विंस्टन चर्चिल की बात याद दिलाता है:

"इस सभ्य दुनिया में एक समुदाय में एक व्यक्ति बिना इसकी समस्या में शामिल होकर, बिना इसकी पीड़ाओं से हिलकर और बिना इसके कारणों से प्रेरित होकर एक नेता बनकर नहीं उभर सकता।"

दोस्तों, क्या आप नहीं सोचते - हम सही लोग है, सही समय पर, सही कारण के लिए? यदि उत्तर **हाँ** है, तो असली सार हमारे द्वारा प्रतिबद्ध किये गए कार्यो को पूरा करने की हमारी गति में है।

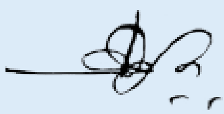

मनोज देसाई
निदेशक, रोटरी इंटरनेशनल

फाउंडेशन न्यासी

अध्यक्ष का संदेश

शताब्दी वर्ष के उत्सव का प्रचार करें

विश्वभर के समुदायों में, रोटरी संस्थान के शताब्दी वर्ष का उत्सव मनाने के लिए और दुनिया में अच्छा करने की रोटरी की सदीयों-पुरानी प्रतिज्ञा को प्रदर्शित करने के लिए रोटरी सदस्य रचनात्मक तरीकें खोज रहे है।

रोटरी सदस्यों ने पाकिस्तान में ज़ारी करने के लिए स्मारक डाक टिकटों का प्रबंध किया, डेन्यूब नदी पर एक क्रूज-पर्यटन को प्रायोजित किया जिसकी आय का कुछ भाग हमारी संस्था को जा रहा है, और वेंकूवर, बी सी में संसार में "अच्छा करते हुए 100 वर्ष "का लेबल लगी वाइन की बोतलें बेची।

और बेशक, बहुत से शताब्दी वर्ष के रात्रिभोज आयोजित किये जा चुके है। आर्च क्लम्फ के गृहनगर क्लीवलैंड में, एक दावत और क्लीवलैंड ऑर्केस्ट्रा के एक संगीत कार्यक्रम के माध्यम से शताब्दी वर्ष का उत्सव मनाने एवं रोटरी संस्थान के जनक को सम्मानित करने के लिए रोटरी सदस्य इकठ्ठा हुए। हमारे संस्थान के लिए 2.1 मिलियन डॉलर से भी ज्यादा का अनुदान इकठ्ठा करने के अलावा, समारोह ने एक बांसुरी वादक के रूप में क्लम्फ की कला-कौशलता को श्रद्धांजलि दी।

कुछ रोटरी सदस्य वैश्विक अनुदान कार्यक्रमों को प्रायोजित करके संस्थान को सम्मानित कर रहे है। वे इंडोनेशिया में डेंगू के बुखार से लड़ रहे है, कोलंबिया में शौचालय सुविधाएं प्रदान कर रहे है और तुर्की में स्तन कैंसर का शुरुआती चरण में पता लगाने को बढ़ावा दे रहे है।

शताब्दी वर्ष के सम्मान में रोटरेक्टरों एवं इंटरैक्टरों ने इस वर्ष भलाई के 100 कार्यो को करने के आह्वान को स्वीकार किया है। वे रक्त दान कर रहे है, बुजुर्गो को देखने जा रहे है, और रसोई भंडारों में स्वेच्छा से कार्य कर रहे है, और भी ऐसी अनेकों गतिविधियाँ जिन्हें इस चुनौती ने प्रेरित किया है।

इस मील के पत्थर का उत्सव मनाकर, हम दुनिया के साथ अपनी सफलता की गाथा को साझा कर रहे है। 2016 में, हमारे पोलियोप्लस कार्यक्रम और साथ ही हमारी वित्तीय दशा, उत्तरदायित्व और रिपोर्टिंग की पारदर्शिता का उल्लेख करते हुए, केबल समाचार चैनल सीएनबीसी' ने रोटरी संस्थान को दुनिया को बदलने वाले शीर्ष 10 परोपकारी संस्थानों में से एक कहा।

हमारा शताब्दी वर्ष अभी समाप्त नहीं हुआ है। आपके पास अभी भी एक विशेष कार्यक्रम की योजना बनाने का, एक शताब्दी वर्ष का योगदान देने का, और अच्छाई के और अधिक कार्यो को करने का समय है। जून में, मुझे आशा है कि आप एटलांटा में रोटरी अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन में होने वाले वर्ष के सबसे बड़े उत्सव में मेरे साथ शामिल होंगे।

कल्याण बैनर्जी

फाउंडेशन न्यासी अध्यक्ष

कैंसर की देखभाल में गुणवत्ता मामले

पूर्व की अपेक्षा अधिक बच्चे कैंसर से जीवित बच रहे हैं। अधिकांश प्रकार के कैंसर पूर्ण रूप से ठीक किए जा सकते हैं किंतु या तो उसके लिए अधिक सुविधाएँ सज्जित नहीं थीं अथवा लोग सजग नहीं थे। कारण भिन्न थे, कुछ मरीज विशिष्ट और कुछ तुच्छ थे। उदाहरण के लिए, अस्पताल तक जाने के लिए धन न होना अथवा यहाँ उनका साथ देने के लिए कोई नहीं, ऐसा नहीं कहा जाना कि बीमारी चार अथवा पाँच मुलाकातों में पूर्ण रूप से ठीक की जा सकती है, इत्यादि।

आँकड़े खुलासा करते हैं कि प्रत्येक वर्ष हमारे राज्य में लगभग 6000 से 8000 बच्चों में कैंसर की पहचान होती है। हमारे राज्य में ठीक होने की समग्र दर का आकलन 10% किया जाता है जब विश्वव्यापी मानक 90% से तुलना की जाती है।

उन बच्चों में से 40% BPL से संबंध रखते हैं। कैंसर का उपचार बहुत महँगा है और इन लोगों के लिए वहनीयता के परे है, जिसका परिणाम मृत्य होता है। वंचित वर्ग के बच्चों के पास कोई साधन अथवा वित्तीय सहायता नहीं होती है। बसावर्तकम इंडो अमेरिकन कैंसर हॉस्पिटल एंड रिसर्च इंस्टिट्यूट (BIACHRI) आप जैसे संरक्षकों के उदार दानों के माध्यम से निशुल्क उपचार प्रदान करने के पदों में ऐसे लोगों की सहातया करता है। उपचार में आवश्यकता के आधार पर कीमोथेरेपी, रेडियोथेरेपी और सर्जरी सम्मिलित होती है।

हम कैंसर से लडने वाले बच्चों की देखभाल को सुधारने के लिए हमारे प्रयास में आपकी उदार सहायता की वास्तव में प्रशंसा करते हैं। आपका योगदान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अंतर्गत खढ लाभों का पात्र है।

प्राप्त दानों का खाता पृथक रूप से रखा जाता है और उल्लेखित उद्देश्य के लिए न्यायपूवर्क खर्च किया जाता है

हम रु 50,000 और अधिक के दानदाताओं को स्वयं और दंपत्ति के लिए एक प्रशंसात्मक कैंसर चेक, रु 25,000/- और अधिक के दानदाताओं को स्वयं के लिए एक प्रशंसात्मक कैंसर चेक और रु 10,000/- हम स्वयं के लिए कैंसर जाँच पर 10% छूट प्रदान कर रहे हैं।

समय निर्धारण के लिए कृपया संपर्क कीजिए +91 95537 98500, +91 98493 98879

For those using EFT/ NEFT/ RTGS payment System INR donations to the following Bank Account.

Name of the Account: **Smt. Nandamuri Basavataraka Rama Rao Memorial Cancer Foundation Corpus Fund A/c.**

Bank Account No.: **151411100000070**

Name & Address of the Bank: Andhra Bank, Road No. 14, Banjara Hills, Hyderabad - 500 034

MICR Code No.: 500011118 | IFSC Code No.: ANDB0001514 | SWIFT Code: ANDBINBB

You can also pay Online or with your Credit Card. Visit our **www.induscancer.com**

Please download form from our website and send in duly filled along with your cheque/ DD to the below address

BASAVATARAKAM INDO-AMERICAN CANCER HOSPITAL & RESEARCH INSTITUTE

Dept. of Corporate Affairs and Strategic Alliance

BASAVATARAKAM INDO-AMERICAN
CANCER HOSPITAL AND RESEARCH INSTITUTE

Promoted by Smt. Nandamuri Basavataraka Ramarao Memorial Cancer Foundation and Indo-American Cancer Organisation

Road No. 14, Banjara Hills, Hyderabad - 500 034 India T: +91 40 2355 1235 Ext. 2315

WINNER 2015
CNBC TV18 & ICICI LOMBARD India Healthcare Awards, 2014
Best Single Speciality Hospital "ONCOLOGY"

Amongst India's 15 Best Cancer Hospitals
The WEEK-NIELSEN Survey, 2013 & 2014

www.induscancer.com **Toll-free: 1800 4253 6666**

WHERE WILL ROTARY GLOBAL REWARDS TAKE YOU?

THE MEMBER BENEFIT PROGRAMME THAT OPENS UP A WORLD OF OPPORTUNITIES.

Rotary

SEE MORE AT ROTARY.ORG/GLOBALREWARDS

District Wise TRF Contributions as on February 2017

(in US Dollars)

District Number	APF	PolioPlus*	Other Restricted	Endowment Fund	Total Contributions
India					
2981	1,35,835	3,492	0	0	1,39,327
2982	27,258	4,160	0	0	31,418
3000	1,31,350	0	69,000	57,882	2,58,232
3011	1,55,516	2,399	3,078	35,373	1,96,366
3012	1,48,623	2,179	40,381	0	1,91,183
3020	26,987	12,985	0	71,643	1,11,615
3030	47,548	0	74,507	8,500	1,30,555
3040	1,075	0	10,000	0	11,075
3051	9,970	27	0	0	9,997
3052	(24,025)	0	53,175	0	29,150
3053	1,027	0	0	0	1,027
3060	69,193	160	22,686	55,851	1,47,890
3070	58,668	1,368	6,191	0	66,227
3080	24,190	17,420	1,10,528	17,333	1,69,471
3090	38,564	0	0	0	38,564
3110	26,607	26,815	0	0	53,422
3120	16,303	149	0	0	16,453
3131	2,28,309	29,338	2,25,183	1,09,955	5,92,786
3132	40,202	1,855	11,025	0	53,082
3141	6,05,611	21,025	2,51,121	3,640	8,81,397
3142	1,01,796	0	5,250	1,000	1,08,046
3150	1,53,695	15,044	26,241	97,585	2,92,565
3160	69,679	2,198	3,000	0	74,878
3170	55,733	16,154	(444)	53,735	1,25,178
3181	1,44,810	0	27,261	0	1,72,072
3182	42,557	2,411	6,043	35,373	86,384
3190	22,714	(11,938)	64,900	0	75,676
3201	40,804	664	34,303	0	75,771
3202	20,315	200	0	0	20,515
3211	58,142	1,015	1,400	1,015	61,571
3212	67,170	1,600	49,265	1,000	1,19,034
3230	1,49,569	203	65,029	23,525	2,38,326
3240	78,416	3,679	0	2,866	84,961
3250	13,343	0	722	0	14,065
3261	9,834	100	0	0	9,934
3262	77,775	5,608	1,15,067	2,000	2,00,450
3291	78,294	1,500	57,140	8,375	1,45,309
India Total	**29,59,683**	**1,61,811**	**13,32,054**	**5,86,652**	**50,40,200**
3220 Sri Lanka	44,591	25	705	11,068	56,389
3271 Pakistan	52,938	1,11,337	20,011	100	1,84,386
3272 Pakistan	83,432	16,610	0	3,000	1,03,042
3281 Bangladesh	1,42,815	6,256	28,551	7,000	1,84,623
3282 Bangladesh	43,965	100	0	2,000	46,065
3292 Nepal	3,12,685	1,421	1,36,561	0	4,50,668
South Asia Total	**36,40,110**	**2,97,561**	**15,17,883**	**6,09,820**	**60,65,373**
World Total	**7,75,84,545**	**1,74,29,432**	**78,32,027**	**1,65,72,055**	**11,94,18,058**

** Excludes Bill and Melinda Gates Foundation.*

Source: RI South Asia Office

häcker
kitchen. germanMade.

DELHI	MUMBAI	BENGALURU	KOCHI	COIMBATORE	CHENNAI	HYDERABAD	AHMEDABAD	LUDHIANA	JAIPUR	INDORE	THRISSUR
9313134488	9322987229	9740999350	9895058285	9500210555	9442081111	9700058285	9879538977	9815048222	9414058718	9425803599	7025991000

E-mail: info@hacker-kitchens.com
Website: www.haecker-india.com / www.haecker-kuechen.com

एक मिशन मोड

रशीदा भगत्

रोटरी एक संगठन है जो एक मिशन मोड में है और आज भारत को "मिशन मोड" में रहने वाले संगठनों की आवश्यकता है। "यह प्रतिभावान और समर्पित लोगों के समूह वाला एक अनुशासित संगठन है। 110 वर्षो से आपने, सेवा की अपनी विरासत संजोय रखी है और पूरी दुनिया के लिए समाज में सेवा का प्रतीक बन गए है। रोटरी के ताज में पोलियो मुहिम एक विशेष पंख है, विशेषरूप से भारत में, जहाँ हमनें पोलियो को जड़ से मिटा दिया है और हम सभी भारत को पोलियो मुक्त करने में आपके द्वारा निभाई गयी मुख्य भूमिका को स्वीकारते है।"

मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावडे़कर, जो रोटरी भारत साक्षरता मिशन (RILM) द्वारा चेन्नई में आयोजित दक्षिण एशिया शिखर सम्मेलन' के मुख्य अतिथि थे, ने कहा कि उनके कॉलेज के दिनों से ही उन्होंने रोटरी के अनेकों कार्यक्रमों में हिस्सा लिया था "मेरे दोस्त प्रमोद जेजुरिकर की वजह से; हम एक साथ बैंक ऑफ़ महाराष्ट्र से जुड़ और उसे एक साथ छोड़ा भी। इस बीच हमने वहाँ बैंकिंग के अलावा बहुत सी चीज़ें की!"

आज रोटरी ने भारत को निरक्षरता मुक्त करने की चुनौती को हाथ में लिया है और भारत सरकार ने इस मिशन में रोटरी को एक अहम् साझेदार के रूप में देखा है। जब भारत 70 वर्ष पहले आजाद हुआ था तब उसकी साक्षरता दर केवल 17 प्रतिशत थी। "आज साक्षरता दर 75 प्रतिशत से ऊपर है और यह एक बड़ी छलांग है जो हमनें लगायी है। अंग्रेज कभी भी भारत को साक्षर होते हुए देखना नहीं चाहते थे। वे उनके शिक्षा तंत्र द्वारा केवल बाबुओं को बनाना चाहते थे, इसलिए लोकमान्य तिलक से लेकर गांधीजी तक, सभी वरिष्ठ नेताओं ने स्वराज्य आन्दोलन के साथ राष्ट्रीय शिक्षा आन्दोलन की शुरुआत की," उन्होंने कहा।

परन्तु, प्रधान मंत्री रहते हुए अटल बिहारी वाजपेयी द्वारा प्रारंभ किये गए सर्व शिक्षा अभियान और वर्ष 2006 में प्रस्तुत शिक्षा का अधिकार के कारण, आज हमारे स्कूलों में 6 वर्ष से 14 वर्ष की आयु के 98 प्रतिशत बच्चे नामांकित है, जो एक उल्लेखनीय उपलब्धि है। "अब प्यास गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की है। परन्तु सरकार सब कुछ नहीं कर सकती, समाज को हमारा साझेदार बनना पेगा और मैं रोटरी को सबसे अच्छे साझेदारों में से एक समझता हूँ। रोटरी और अन्य स्वैच्छिक संगठनों के साथ, हमें सभी को शिक्षा तंत्र के भीतर लाना है क्योंकि केवल शिक्षा ही एक व्यक्ति को वास्तविक स्वतंत्रता प्रदान कर सकती है; शिक्षा मोक्ष है।"

में रोटरी

सपने वो नहीं जिन्हें हम सोते वक्त देखते है; सपने वो है जिन्हें हम जागते हुए देखते है। रोटरी में, वास्तविक सपने वो अवलोकन एवं कल्पना है जो हम तब करते है जब हम पूरी तरह से जागृत होते है और उन्हें सच करने के लिए कार्य करते है।

टीआरएफ ट्रस्टी प्रमुख कल्याण बैनर्जी

परन्तु ऐसी साक्षरता या शिक्षा में डिजिटल, वित्तीय और लोकतान्त्रिक साक्षरता भी शामिल होना चाहिए। जहाँ हमारे पास 270 मिलियने निरक्षर लोग थे, भारत के शिक्षा संस्थानों में 270 मिलियन युवा भी थे... "के जी से लेकर पी जी तक। अगर इनमें से प्रत्येक युवा एक निरक्षर को सिखा सके, अगले 3, 4 या कम से कम पाँच सालों में, हम भारत को पूर्णतः साक्षर बना सकते है," जावड़ेकर ने आगे कहा।

मंत्री ने कहा कि एक बड़ी गलती जो भारत ने आजादी के बाद की वह लोगों को शिक्षित करने के कार्य में समुदाय को शामिल ना करने की थी। उन्होंने याद किया कि 1970 में, जब एक कॉलेज छात्र के रूप में वह किसी सर्वेक्षण के कार्य से गोवा के आदिवासी ग्रामों में गए, एक गाँव में, "गाँव वालों ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उस गाँव में शिक्षक बन सकता हूँ, क्योंकि उनके पास कोई स्कूल नहीं था। मैंने उनसे पूछा कि यदि मैं आता हूँ तो आप मुझे क्या सुविधाएं देंगे। उन्होंने कहा हमारे पास एक घर है जहाँ आप स्कूल चला सकते है और अन्य घर में आप रह सकते है। तो समुदाय उनके बच्चों को शिक्षित करने के लिए सब कुछ करने और इसमें लगने वाले हर खर्चे को उठाने के लिए तैयार था। परन्तु यह सामाजिक भागीदारी मिट गयी जब सरकार शिक्षा के क्षेत्र में आयी और कहा कि हम सब कुछ करेंगे। और हिस्सा लेने वाले एक समाज से हम एक शिकायत करने वाला समाज बन गए!"

ऊपर: (बाएं से) रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म, HRD मंत्री प्रकाश जावड़ेकर और TRF ट्रस्टी प्रमुख कल्याण बैनर्जी।

निरक्षरता के खिलाफ युद्ध

"और कहाँ आप लगभग 2500 स्वयंसेवकों को निरक्षरता के खिलाफ युद्ध हेतु 3 दिनों के लिए एकत्रित होते हुए देखेंगे? और वे भारत, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका और बांग्लादेश से आये है," RILM प्रमुख शेखर मेहता ने कहा, 3 दिवसीय शिखर सम्मलेन को संबोधित करते हुए, "ये शिखर सम्मलेन हमें जोश, शक्ति और नयी आशा से भर देते है।"

RILM के TEACH (शिक्षक प्रशिक्षण, ई-शिक्षण, वयस्क साक्षरता, बाल विकास और हैप्पी स्कूल) कार्यक्रम का एक विवरण देते हुए, उन्होंने कहा कि यह अब तेजी से बड़ा हो गया है। 5,000 शिक्षकों को शिक्षित करने के लक्ष्य के विरुद्ध, 20,000 से भी अधिक शिक्षकों को प्रशिक्षित किया जा चुका है; ई-शिक्षण के क्षेत्र में, उड़ान का मार्ग और भी ऊँचा है। "गुजरात में, 25,000 स्कूलों को स्थापित किया जा रहा था, जिनमें 10,000 पहले ही क्रियाशील हो चुके है, और शिखर सम्मलेन में, महाराष्ट्र सरकार के साथ 50:50 साझेदारी के आधार पर 36,000 ई-शिक्षण केन्द्रों को स्थापित करने के लिए एक समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया। ये दो कार्यक्रम अकेले ही 3

बाएं से: शिखर सम्मेलन सचिव ए एस वेंकटेश, जुडी जर्मेन, रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म, HRD मंत्री प्रकाश जावड़ेकर और टीआरएफ

मिलियन बच्चों को प्रभावित करेंगे और परियोजना की लागत रु 60 करोड है।

समझौता ज्ञापनों की प्रचुरता

बैठक में अन्य समझौता ज्ञापन जो हस्ताक्षरित किये जाने थे वे नंदन निलेकानी के 'एक साथ', यूनेस्को, ब्रिटिश काउंसिल इत्यादि के साथ थे। और हम जल्द ही एक एप 'लर्न इंग्लिश ईज़ीली' को लाने वाले है। इस वर्ष हजारों वयस्कों को हमारे कार्यक्रमों के अंतर्गत साक्षर बनाया जायेगा, उन्होंने कहा। भारत के 30 राज्यों में 30,000 विधवाओं को कुशल बनाने के लिए यूके के लूम्बा संस्थान के साथ एक रु 15 करोड की कीमत का समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया गया। इस कार्यक्रम का लोकार्पण प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा वाराणसी में किया गया था, जहाँ 5,000 विधवाओं को प्रशिक्षित किया जा रहा है। लेबर नेट, एक अग्रणी कौशल विकास कंपनी, के साथ एक और समझौता ज्ञापन, लोगों को केवल कुशल बनाने से कुछ अधिक करेगा। मेहता ने कहा, हमें उन्होंने आश्वासन दिया है कि प्रशिक्षित किये गए 90 प्रतिशत लोगों को या तो रोजगार मिल जायेगा या वे उनका स्वयं का उपक्रम शुरू कर पाएंगे।

आशा किरण कार्यक्रम के अंतर्गत, 45,000 बच्चों को देश भर में चल रहे 373 आशा किरण केन्द्रों में भेजा जा चुका है। "हम ना केवल ईंट भट्टों में कार्य करने वाले ऐसे कई बच्चों को पाते है जो बिहार से पश्चिम बंगाल आये है और जब वे वापस बिहार जाते है हम उन पर नज़र रखते है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे वापस स्कूलों में जा रहे है या नहीं। और इन बच्चों में से 40-50 प्रतिशत बच्चे पुनः स्कूल गए।"

मेहता ने कहा कि आरआईएलएम ने कई राज्यों में साझेदारियां बना ली है और वर्ष के अंत तक, इसे उम्मीद है कि भारत के प्रत्येक राज्य में इसकी उपस्थिति होगी।

हैप्पी स्कूल मोर्चे पर रोटरी सदस्यों एवं इनर व्हील सदस्यों द्वारा उत्कृष्ट कार्य किया गया। "पिछले माह मैंने आठ हैप्पी स्कूलों का उद्घाटन किया और बच्चों के चेहरों पर मुस्कुराहटें

ट्रस्टी प्रमुख कल्याण बैनर्जी, RILM चेयर शेखर मेहता, राशि मेहता, मार्लीन कामदार, शिखर अध्यक्ष, जे बी कामदार और शर्मिष्ठा देसाई।

देखकर आनंदित महसूस किया। उन्हें किताबों एवं स्टेशनरी के साथ-साथ पहली बार जूते और खेल सामग्रियाँ भी मिल रही थी। हमनें पिछले वर्ष 1,500 हैप्पी स्कूल बनाये और सीआईआई की खेल समिति के साथ हस्ताक्षरित किया जा रहा समझौता ज्ञापन इस बात को सुनिश्चित करेगा कि हम 50,000 स्कूलों में खेल सुविधाएं उपलब्ध करवा सकें।"

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस पर, मानव संसाधन विकास मंत्री जावड़ेकर ने RILM के 5,000 पुस्तकालयों को स्थापित करने के कार्यक्रम का लोकार्पण किया था। "हमनें कहा था कि हम यह पाँच वर्षो में करेंगे परन्तु 1,600 पुस्तकालयों के पूर्ण होने के साथ, अब ऐसा लगता है कि यह दो वर्षो में पूर्ण हो जायेगा। हमनें एक गैर सरकारी संगठन के साथ 10,000 पुस्तकालयों की स्थापना के लिए भी एक अन्य समझौता ज्ञापन हस्ताक्षरित किया है। उन्होंने 3,50,000 पुस्तकें इकठ्ठा कर ली है और पुस्तकालयों की स्थापना में हमारी मदद कर रहे है।"

दृष्टिहीन विद्यार्थियों के लिए आभासी आँखें

मेहता ने कहा कि रोटरी क्लब ठाणे हिल्स के ट्राइअम्फ संस्थान के साथ, "हम भारत के सभी 410 दृष्टिहीन स्कूलों के नेत्रहीन बच्चों के लिए आभासी आँख' या ब्रेल-रहित कंप्यूटर प्रदान कर रहे है। पीआरआईडी अशोक महाजन ने यह कहने के लिए केवल एक मिनट लिया कि ठीक है, मैं इस कार्यक्रम के प्रायोजन का उत्तरदायित्व लेता हूँ। लागत: रु 8 करोड या 10 लाख डॉलर से अधिक, परन्तु उन्होंने यह किया।"

उन्होंने आगे कहा, यह सब कार्य संभव हुआ क्योंकि "हमनें PPP मॉडल को एक नया आयाम दिया है और यह परियोजना अब रोटरी सदस्यों का जूनून बन गयी है और इसलिए प्रगति पर है।"

मगर अब एकीकरण का समय था। अब तक पृथक परियोजनाएं - कुछ हैप्पी स्कूल कर रहे थे, अन्य ई-शिक्षण केन्द्रों की स्थापना, और भी बहुत सी - की जा रही थी। परन्तु अब समय था एक बड़े प्रभाव को जन्म देने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को अपनाने का। "चलिए हम दो या तीन परियोजनाएं एक स्थान पर करें - एक हैप्पी स्कूल बनाएं, शिक्षकों को प्रशिक्षित करें, वहाँ ई-शिक्षण की सुविधाएं दें और यदि आप उस क्षेत्र के सभी बच्चों को उन स्कूलों में भेजने का चौथा तत्व शामिल कर सके, तो यह एक अद्भुत एकीकरण होगा। और हम उन क्लबों को सलाम करेंगे जो पाँचवा तत्व शामिल कर सकेंगे - शाम के समय उन्ही स्कूलों का इस्तेमाल वयस्क साक्षरता के लिए करने में।"

अगर रोटरी सदस्य भारत में ऐसे 50 उत्कृष्टता के द्वीप बना सके, यह एक ऐसा मॉडल होगा जो साझेदारों के रूप में कॉर्पोरेट एवं गैर सरकारी संगठनों को आकर्षित करेगा। यदि TEACH ठीक से कार्य कर रहा था, तो यह सभी डीजीयों एवं मंडल साक्षरता प्रमुखों के कठिन परिश्रम और समर्पण का फल था, उन्होंने स्वीकार किया।

सही नेतृत्व

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए, रोई अध्यक्ष जॉन जर्म, जो पूरे तीन दिवसीय समारोह में बैठे, ने कहा कि इस विशाल परियोजना के माध्यम से, भारतीय रोटरी सदस्यों ने यह दिखाया है कि "आप उस प्रकार के नेतृत्वकर्ता है जिनकी भारत में आवश्यकता है।" रोटरी के छह ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में से शिक्षा एक अहम घटक था। हमने अनुभव से यह पाया है कि जिस प्रकार का कार्य हम रोटरी में करते है उस प्रकार के कार्य को दुनिया भर में किये जाने की आवश्यकता है। रोटरी, शांति को बढ़ावा देकर, बीमारियों से लकर, पानी और शौचालय, स्वच्छता प्रदान कर, माताओं एवं बच्चों को बचाकर, स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को बढ़ाकर

भारत के पास एक रोटरी है जो कहती है कि वह देश को आगे ले जाने के लिए समर्पित है। इसके पास एक रोटरी है जिसने पोलियो उन्मूलन की चुनौती को अपने हाथों में लिया।

रो इ अध्यक्ष जॉन जर्म

और शिक्षा का समर्थन करके, लोगों की जिंदगियों में अतुलनीय परिवर्तन ला रहा था।

निरक्षरता से लने के लिए शिक्षा सबसे ताकतवर हथियार था। यदि आप पढ़ नहीं सकते है, बुनियादी गणित नहीं कर सकते, तो आगे बने का कोई रास्ता नहीं है। "यदि आप अंकडों को नहीं समझते है तो आप वित्तीय फैसलें नहीं ले सकते, और आपका शोषण किया जा सकता है। परन्तु शिक्षा आपको प्रथम सोपान प्रदान करती है... आपके परिवेश और आपकी पूरी ज़िन्दगी पर अधिक नियंत्रण।" साक्षरता एक सकारात्मक प्रभाव बना सकती है जो एक व्यक्ति से परे दूर तक फैलता है और अधिक वित्तीय स्थिर और सुरक्षित परिवारों को बनाने में मदद करता है, उन्होंने आगे कहा।

इस बात को जारी रखते हुए जर्म ने कहा कि शिक्षा से पूरा समाज लाभान्वित होता है, शिक्षा की ताकत इतनी अधिक है कि शिक्षा के लिए जुड़ा हुआ प्रत्येक वर्ष GNP(सकल राष्ट्रीय उत्पाद) को 18 प्रतिशत के मध्यस्थ मूल्य से बाता है। "कितना चौंकाने वाला अंक और कितना बड़ा निवेश।"

दुर्भाग्यवश, दुनिया भर में बहुत से लोग निरक्षर है; 15 वर्ष की आयु से अधिक 775 मिलियन लोग निरक्षर है। "यह दुनिया की वयस्क जनसंख्या का 17 प्रतिशत है। ऐसा अनुमान है कि दुनिया में 250 मिलियन बच्चे नहीं पढ़ सकते, लिख नहीं सकते या बुनियादी गणित नहीं कर सकते और इनमें से, 130 मिलियन स्कूल गए है! रोटरी साक्षरता पर इसलिए इतना अधिक ध्यान देती है क्योंकि गरीबड़ीमिटाने के लिए यह पहला कदम है।"

उन्होंने रोटरी सदस्यों को याद दिलाया कि "स्कूलों का समर्थन करके बच्चों को शिक्षण के उपकरण देना हमारा कार्य है। यह भी हमारा काम है कि हम उन्हें ऐसा करने से रोकने वाली बाधाओं को समझे और

अंग्रेज कभी भी भारत को साक्षर होते हुए देखना नहीं चाहते थे। वे उनके शिक्षा तंत्र द्वारा केवल बाबुओं को बनाना चाहते थे।

मानव संसाधन विकास मंत्री प्रकाश जावड़ेकर

उनको हटाये।" इसमें लड़के एवं लड़कियों के लिए पृथक शौचालयों का निर्माण करना भी शामिल है ताकि लड़कियां उनकी शिक्षा पूर्ण कर सके; स्वच्छ पीने योग्य पानी, स्वच्छता, यूनिफार्म, किताबें, पेंसिल देना और भी बहुत कुछ।" कभी-कभी रुकावटें जो बच्चों को स्कूल जाने से रोकती है सरल प्रतीत होती है पर बहुत से परिवारों के लिए वे दुर्गम होती है। दुनिया भर में साक्षरता रोटरी की प्राथमिकता है,मेरे गृह राज्य टेनेसी में भी।" यहाँ रोटरी ने एक साझेदारी बनायीं है जिसके माध्यम से 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों को हार्डकवर की किताबें दी जाती है।

जर्म ने कहा कि भारत वास्तव में जबर्दस्त चुनौतियों का सामना करता है और सर्व-जन साक्षरता के लक्ष्य को हासिल करना उनमें से एक है। "परन्तु भारत के पास रोटरी है जो गुजरते हुए हर साल के साथ अधिक मजबूत एवं अधिक सक्रिय हो रही है। भारत के पास एक रोटरी है जो कहती है कि वह देश को आगे ले जाने के लिए समर्पित है। इसके पास एक रोटरी है जिसने पोलियो उन्मूलन की चुनौती को अपने हाथों में लिया, कुछ ऐसा जिसे बहुत से लोगों ने असंभव बताया। इसके पास एक रोटरी है जो भारत की चुनौतियों की ओर देखती है और कहती है, मेरे विचार से मैं कर सकता हूँ, ठीक उस छोटे नीले इंजन की तरह जो उन किताबों में से एक किताब में था जिन्हें उन्होंने उनके गृह राज्य में बांटा था। जहाँ सभी बड़े और ज्यादा ताकतवर इंजन एक बड़ीरेल को पही के ऊपर से पार कराने में रुक जाते है, छोटा नीला इंजन कहता है: 'मुझे लगता है मैं कर सकता हूँ', और धीरे-धीरे पर निश्चित रूप से इस साहसिक कार्य को पूर्ण करता है।

इसी प्रकार से, रोटरी भारत में निरक्षरता की विशाल चुनौती को देख सकता है, कहो मुझे लगता है मैं कर सकता हूँ', और एक दिन, रोटरी सर्व-जन साक्षरता की ओर देखेगी और कहेगी हम जानते थे कि हम कर सकते थे!"

विलक्षण प्रयास

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए टीआरएफ ट्रस्टी प्रमुख कल्याण बैनर्जी ने कहा कि '15 लाख से ज्यादा रोटरी सदस्यों, इनर व्हील की हमारी महिलाओं, हमारे युवा खंड-रोटरेक्ट एवं इंटरैक्ट के विलक्षण प्रयासों के कारण, पूर्ण साक्षरता के लक्ष्य को हासिल करने के लिए सब कुछ किया जा रहा है।" RILM दल, जिसका नेतृत्व शेखर मेहता ने किया, क्लबों और उसके साझेदारों का, सरकार और दूसरे ऊँचे दर्जे के गैर सरकारी संगठनों जैसे यूनेस्को के साथ जुने के लिए मार्गदर्शन कर रहा था।

"तो जब मैंने शेखर से पूछा कि मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ, उसने कहा, 'कल्याणदा, वह आप थे जो 2011-12 में रोटरी के अध्यक्ष थे, जिसने सर्वप्रथम पूरे भारत को, वास्तव में,

पूरे दक्षिण एशिया को साक्षर बनाने का विचार प्रस्तुत किया था, और इसे आगे ले जाने के लिए आपने समिति और ढाँचे की स्थापना की। मैं केवल इस साक्षरता उपक्रम की देखभाल कर रहा हूँ।' मैंने रो ई में उनसे कहा था, हम सभी देखभाल करने वाले है।"

सामान्यतः एक कार्यालय को एक साल के लिए संभाला जाता है, और वर्ष के अंत में कमान आगे सौंप दी जाती है। "हमारा संस्थान, जो 100 वर्ष पूर्व शुरू हुआ, डब्ल्यूएचओ, गेट्स संस्थान और सरकारों के साथ कार्य कर रहा है ताकि दुनिया को खतरनाक पोलियो से मुक्त किया जा सके और हम लगभग वहाँ पहुँच चुके है।" यह प्रत्येक वर्ष सैकों छात्रों को शांति बनाये रखने एवं शांति स्थापित करने की बारीकियों को पने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान करता है। इसके ध्यानाकर्षण के अनेक क्षेत्रों में से, साक्षरता एक है, और "हम मानते है कि एक अधिक साक्षर दुनिया ज्यादा स्वस्थ, शान्तिप्रद, संपन्न और सुरक्षित होगी। हमारे रिकॉर्ड प्रदर्शन के कारण, आज हमें दुनिया के सर्वश्रेष्ठ संस्थानों में से एक के रूप में मूल्यांकित किया गया है।" और यह सब कुछ परियोजनाओं के लिए अनुदान के माध्यम से संभव हुआ, लगभग 300 मिलियन डॉलर, रोटरी सदस्यों द्वारा प्रतिवर्ष इकट्ठा किया गया एवं दान किया गया।

उन्हें मेहता द्वारा कह दिया गया था कि संस्थान के समर्थन के कारण, भारत में साक्षरता कार्यक्रम इतना अच्छा चल रहा है। रोटरी संस्थान द्वारा रोई ज़िला एवं क्लबों को दिए जाने वाले अनुदानों में से दूसरे सबसे अधिक अनुदान, स्वास्थ्य परियोजनाओं के लिए अनुदान के बाद, आजकल साक्षरता के लिए मिलते है। बैनर्जी ने कहा, इस पैसे के माध्यम से क्लबों द्वारा किया जा रहा काम शानदार है।

और अब भारतीय कॉर्पोरेट, उनकी अनिवार्य सीएसआर आवश्यकताओं की पूर्ती की चाह में, हाथ मिला रहे है और रोटरी को मियादी उपहार दे रहे है और उसकी साक्षरता परियोजनाओं में साझेदार बन रहे है। "यह हमारे देश में तेजी से ब रहा है, सभी राज्यों, सभी कोनों, जिसमें जम्मू और कश्मीर और उत्तर-पूर्व के राज्य जैसे त्रिपुरा और मणिपुर शामिल है। ई-शिक्षण परियोजनाएं हर जगह पक बना रही है और विशेषरूप से गुजरात और महाराष्ट्र, हजारों ई-शिक्षण केन्द्रों का निर्माण कर रहे है। स्कूलों में लकियों के लिए पृथक शौचालयों और हाथों की धुलाई स्टेशनों के अलावा, चेन्नई से केवल 25 किमी दूर गाँवों में, रोटरी के कारण, गाँव का प्रत्येक घर पानी की व्यवस्था वाले शौचालय का निर्माण कर रहा है। यह एक छोटी सुनामी की तरह फ़ैल रहा है।"

जब मेहता द्वारा उन्हें यह सब बताया गया, "मैंने उन्हें इस बात को सुनिश्चित करने के लिए सचेत किया कि ग्रामीण स्कूलों में पर्याप्त शिक्षक हो," और उनमें से एक भी शिक्षक उनकी रु 25,000 प्रति माह की नौकरी को किसी अयोग्य व्यक्ति को रु 6,000 या लगभग में शिकमी पर देकर और किसी अन्य गतिविधियों में व्यस्त ना हो जैसा कि हिमाचल प्रदेश में होता हुआ देखा गया था।

फिर भी, RILM प्रमुख आशावान है कि जून 2017 तक, भारत की साक्षरता दर 80-85 प्रतिशत तक जा सकती है। "सपना बेशक पूर्ण साक्षरता का था, परन्तु फिर सपने वो नहीं जिन्हें हम रात में सोते वक्त देखते है, सपने वो है जो घटित होते है जब हम जागे हुए होते है। रोटरी में, वास्तविक सपने वो अवलोकन एवं कल्पना है जो हम तब करते है जब हम पूरी तरह से जागृत होते है और उन्हें सच करने के लिए कार्य करते है।"

प्रधान मंत्री
Prime Minister

New Delhi
March 03, 2017

Dear Sh. Shekhar Mehta ji

I am happy to learn about The Rotary South Asia Literacy summit. I sincerely hope that the summit will result in a vibrant discussion on various facets relating to education & will enrich the current discourse on education. I am also happy to know about Rotary's efforts towards its TEACH program.

Education is one of the most important focus areas of our Government. We are actively working to improve learning outcomes. The Government is also working to facilitate setting up of world-class education institution in India.

My best wishes for the successful organisation of Rotary South Asia Literacy Summit.

Regards,

(Narendra Modi)

Shri Shekhar Mehta
145, Sarat Bose Road
Kolkata

प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए, रो ई निदेशक मनोज देसाई ने याद किया कि कैसे "हमने श्रीलंका में हमारी साक्षरता की यात्रा शुरू की थी जब टीआरएफ ट्रस्टी प्रमुख कल्याण बैनर्जी ने इस परियोजना की अवधारणा बनायी और फिर हम नेपाल, हैदराबाद, दिल्ली, पुणे, कोलकाता गए और अब साक्षरता शिखर सम्मलेन चेन्नई आ गया है।" जूनून और समर्पण जिसके साथ रोटरी सदस्य टीच पर काम कर रहे थे, ने आश्वस्त किया कि निरक्षरता के खिलाफ इस युद्ध को हम जीतेंगे।

सम्मलेन प्रमुख जे बी कामदार ने उनके दल का इस विशाल कार्यक्रम को साकार करने में उनके द्वारा दी गई मदद के लिए धन्यवाद दिया, जिसने विभिन्न देशों से 2,450 प्रतिनिधियों को आकर्षित किया। यह ना केवल चेन्नई में बल्कि पूरे तमिलनाडू में होने वाले सबसे बड़े कार्यक्रमों "में से एक था। मैं प्रमुख बनने के लिए सहमत हुआ क्योंकि शेखर (मेहता) ने चतुराईपूर्वक ऐसे सम्मलेन के आयोजन करने की विशालता को कम बताया, जहाँ तीन दिनों तक, कॉर्पोरेट एवं गैर सरकारी संगठन दोनों के साथ की गयी साझेदारियों के एवं सरकार के सहयोग के माध्यम से रोटरी द्वारा साक्षरता को प्रोत्साहित करने के लिए किये गए कार्यों की एक सूक्ष्म तस्वीर दिखाई जाएगी।"

चत्र : के विश्वनाथन

एस कृष्णाप्रतीश द्वारा रूपरेखा

चलिए मानव संवेदना का वैश्वीकरण करें

रशीदा भगत्

एक संसार में जहाँ वैश्वीकरण नया मंत्र है और हम सभी एक दूसरे से तेज इंटरनेट, हवाई यातायात और भी बहुत कुछ से जुड़े हुए है, "हम अपने दिलों में एक दूसरे से अलग होते जा रहे है। हम अपने आप में ही भींचते चले जा रहे है और विभिन्न राजनैतिक नारों से सीमित हो रहे है और स्वार्थ की भावना को बढ़ावा दे रहे है, जिसे हमनें ब्रेक्सिट और अन्य मामलों में देखा। तो क्यों न मानव संवेदना का वैश्वीकरण करने के लिए एक आन्दोलन शुरू किया जायें?"

पीड़ा एवं क्रोध के साथ-साथ प्रेरणा से भी भरपूर अपने भाषण में ऐसे प्रभावशाली शब्दों के माध्यम से, चेन्नई में आयोजित दक्षिण एशिया साक्षरता शिखर सम्मेलन में एकत्रित प्रत्येक 2,450 रोटरी सदस्यों को चुनौती देते हुए, नोबेल शांति पुरूस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी ने उस कार्य का आगाज किया जिसमें वे निपुण है- बच्चों की वकालत। ऐसे बच्चों की जो

शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं, स्वतंत्रता और उनके बचपन से वंचित है।

उन्होंने कहा कि "संवेदना स्वाभाविक है, और हम सभी में अन्तर्निहित है। कभी-कभी संवेदना वो अनमोल उपहार होती है जिसे हम या तो अपने तक या अपने बच्चों तक सीमित रखते है।" परन्तु जब दुनिया में करोड़ों बच्चे अपने बचपन और सबसे बुनयादी अधिकारों से वंचित हो, एवं अपमानित करने वाले और अमानवीय दासत्व एवं मजदूरी की गुलामी में जक्ड़े हो, तो ऐसे बच्चों की शिक्षा एवं स्वतंत्रता को यहाँ मौजूद प्रत्येक व्यक्ति के भीतर की संवेदना के माध्यम से ही लाया जा सकता है।

समय आ गया है कि हम अपने संकीर्ण स्वार्थी जगत से बाहर आयें और इस बात का अनुभव करें कि जहाँ एक ओर हम अर्थव्यवस्था एवं ज्ञान का वैश्वीकरण कर रहें है वहीं दूसरी ओर हम स्वार्थी बन रहे है। जब आप एक बच्चे को स्कूल से बाहर सड़कों पर, ढाबों पर, रेस्टोरेंट में या आपके दोस्त या रिश्तेदारों के घरों में काम करता देखते है, तो केवल एक क्षण के लिए अपनी आँखें बंद करके सोचिये: ऐसी गुलामी में काम करने वाली वह लड़की यदि आपकी खुदकी बेटी होती, तो आप क्या करते? आपके बच्चे या पोते को उस स्थान पर रखिये और ऐसे बच्चों से उस संवेदना के माध्यम से जुड़ने की कोशिश कीजिये जो आप सभी के अंदर मौजूद है।

हर कुछ मिनटों में इस बात को दोहराते हुए कि एकत्रित हुए रोटरी सदस्य एक अति ताकतवर समूह है जो कुछ भी हासिल कर सकता है, सत्यार्थी ने याद किया कि बमुश्किल तीन हफ़्तों पहले, दिल्ली स्थित उनके मुक्ति आश्रम में, उन्होंने एक 10 वर्षीय बालक को देखा जो चल नहीं पा रहा था। मैं यह जानकार स्तब्ध हो गया कि उस लड़के को दिल्ली के एक जीन्स के कारखाने में एक छोटे, गंदे कमरे में, जमीन पर एक ही स्थिति में बैठाकर 22 घंटे काम करने के लिए विवश किया गया था। इसके कारण उसके और बचाए गए कई अन्य बच्चों के पैर विकृत हो गए है।

एक अन्य लड़के ने कहा कि जब मैंने अपनी माँ को याद किया तो मुझे पंखे से उल्टा लटकाकर मारा गया। बच्चों ने मुझे उनके जख्मों के निशान और घाव दिखाए... यदि उन्हें नींद आती थी, तो उन्हें हथोड़ी से मारा या कड़पे काटने वाली बड़ी कैंची से काटा जाता था। उन्हें कभी भी कोई दवाई नहीं दी गयी। उनकी पत्नी सुवेधा ने और उन्होंने उन बच्चों को दिलासा दिया और कहा कि अब वे आज़ाद है और स्कूल जा सकते है। दो के अलावा, किसी ने प्रतिक्रिया नहीं दी।

"जब हम उनके पीछे लगे रहे, उन्होंने कहा कि अब हमारे लिए बहुत देर हो गयी है, अब हम स्कूल नहीं जा सकते। एक 14 वर्षीय बालक को ऐसा लगता है कि अब वह बच्चा ही नहीं रह गया और उसके स्कूल जाने के लिए बहुत देर हो गयी है। यह हम में से हर एक के लिए चुनौती है। मेरे दोस्तों, आपके पास शक्ति है, आप आपकी शक्ति दिखाते है परन्तु आप अपनी शक्ति, सामर्थ्य, ज्ञान, समझ, अनुभव, और सबसे महत्वपूर्ण, अपनी संवेदना का, पूरा इस्तेमाल

satyarthi.org

100 मिलियने के लिए 100 मिलियन।

उनके भावनाओं से भरपूर एवं सरगर्मीपूर्ण भाषण के माध्यम से, नोबेल विजेता कैलाश सत्यार्थी ने रोटरी सदस्यों को उनके अभियान *100 मिलियन के लिए 100 मिलियन* से जुड़ने के लिए आमंत्रित किया। हाल ही में उन्होंने 200 नोबेल विजेताओं, शीर्ष शिक्षाविदों और विश्व नेताओं के एक शिखर सम्मेलन का संचालन किया, जिसकी मेजबानी भारत के राष्ट्रपति ने की। "हम एक मजबूत विधेयक लाये है - बच्चों के लिए दिल्ली का विधेयक'। हम ताकतवर नैतिक आवाजों को बनाने की कोशिश कर रहे है। परन्तु मैं यहाँ हर एक में एक नैतिक नेतृत्वकर्ता देखता हूँ। मैं उस नेता को उठने के लिए एवं समस्त प्रकार की बाधाओं एवं सीमाओं से लने के लिए और दक्षिण एशिया को एक महान क्षेत्र बनाने के लिए पुकारता हूँ।"

उन्होंने रोटरी को उनके अभियान *100 मिलियन के लिए 100 मिलियन* में हिस्सेदार बनने के लिए निमंत्रित किया; 100 मिलियन नन्हें बच्चे शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाओं एवं स्वतंत्रता से वंचित है। "उनमें से बहुत से बच्चों की जबरदस्ती कम उम्र में शादी कर दी गयी, और उन्हें पशुओं की तरह खरीदा एवं बेचा गया, अक्सर पशुओं से भी कम कीमत में। उनमें से बहुत से बच्चों को रूढ़िवादी ताकतों द्वारा कई हिस्सों में उग्र बना दिया गया, कुछ जिहादियों के लिए बमबारी करेंगे। हम प्रतीक्षा नहीं कर सकते। यदि हम स्थिति को नजरअंदाज करते है तो हम अधिक से अधिक खतरे को निमंत्रण दे रहे है क्योंकि जो बच्चे स्कूलों में नहीं है उनकी इस प्रकार की परिस्थितियों में फंसने की अधिक संभावना है।"

परन्तु दूसरी ओर, वह आश्वस्त थे कि हमारे पास कम से कम 100 मिलियन युवा होंगे, और दुनिया भर के आप जैसे लोग, जो इन बच्चों के लिए कुछ करने की इच्छा रखते है। आपके अपने बच्चों, भाईयों एवं बहनों में आदर्शवाद एवं मूल्यों का एक तत्व है और समाज के लिए कुछ अच्छा करने की भूख है।

परन्तु अक्सर वह ऊर्जा एवं आदर्शवाद बाहर नहीं निकल पाता, "इसलिए वे उनका समय सामाजिक मीडिया, जो बुरा नहीं है, पर जुड़ने में व्यतीत करते है, परन्तु उन्हें अनावश्यक जु नहीं रहना चाहिए। हमें उन्हें समाज को एक सुरक्षित एवं बेहतर जगह बनाने के लिए एक चुनौतीपूर्ण भूमिका देनी होगी। विश्व में कम से कम 100 मिलियने लोग शिक्षा, शांति, इत्यादि की चुनौतियाँ स्वीकार करने के लिए भूखे है।" उनकी पहल इन दो विविध वर्गो को जोने की है, और 100 मिलियन के एक सेट को दूसरे 100 मिलियन के लिए विजेता बनाने की है।

"अगर आप महसूस करते है कि आप में से प्रत्येक के अंदर एक परिवर्तनकर्ता और विजेता मौजूद है, मैं आपको 100 मिलियन परिवर्तनकर्ताओं में से एक बनने के लिए निमंत्रित करता हूँ ताकि हमारे बच्चों के लिए एक बच्चों के अनुकूल एवं भय-मुक्त दुनिया का निर्माण किया जा सके। आपके पास ऊर्जा एवं शक्ति है, बस उसे दिशा दीजिये। चलिए हम एक साथ आगे बड़े और मानवता एवं संवेदना की एक भाषा में बात करें ताकि हमारे बच्चों के लिए एक सुरक्षित, खुशहाल, स्वस्थ एवं शिक्षित बचपन सुनिश्चित किया जा सके।"

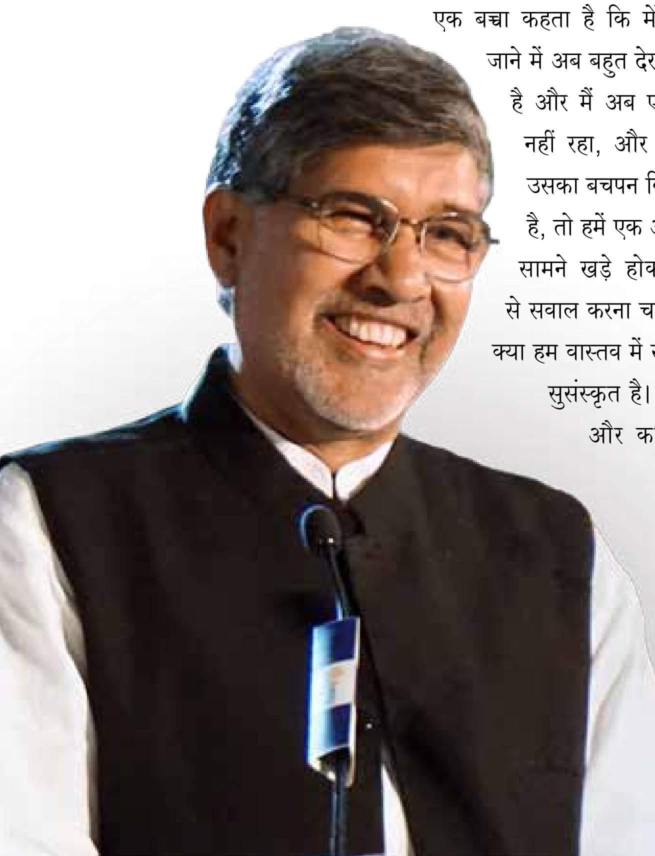

नहीं कर रहे है। अगर इस देश में एक बच्चा कहता है कि मेरे स्कूल जाने में अब बहुत देर हो गयी है और मैं अब एक बच्चा नहीं रहा, और यह कि उसका बचपन छिन गया है, तो हमें एक आईने के सामने खड़े होकर स्वयं से सवाल करना चाहिए कि क्या हम वास्तव में सभ्य एवं सुसंस्कृत है। यह बुद्ध और काली की भूमि है जिनकी शक्ति को हम ईश्वर समझकर पूजते है; सरस्वती, बुद्धि एवं ज्ञान की देवी, धन एवं समृद्धि की देवी लक्ष्मी।"

सत्यार्थी ने गरजते हुए कहा, तो क्यों ना ऐसी शक्ति, ज्ञान और समृद्धि का इस्तेमाल इस बात को सुनिश्चित करने के लिए किया जायें कि बच्चों का बचपना कायम रहे।

अन्य भयानक घटनाओं को गिनाते हुए, उन्होंने कहा कि मीडिया ने हाल ही में सूचित किया कि कैसे एक हॉस्टल की संरक्षक ने लड़कियों के एक समूह को नग्न चलवाकर एवं उनकी तस्वीरें लेकर दण्डित किया। एक 3 वर्षीय बालिका को उसके अंकल द्वारा बलात्कार करके मार दिया गया। "यदि हमारी बेटियाँ उनके घरों में, पड़ोस में, और सबसे महत्वपूर्ण, स्कूलों में सुरक्षित नहीं है, तो हमें अभी कार्यवाही करनी होगी, हम प्रतीक्षा नहीं कर सकते। यह एक गंभीर चुनौती है।"

रोटरी सदस्यों द्वारा हैप्पी स्कूल करने पर उन्हें बधाई देते हुए, उन्होंने कहा कि चुनौती हर स्कूल को एक हैप्पी स्कूल बनाने की है। आपके पास शक्ति है...ऐसे 200 या 2,000 स्कूलों को बनाने के स्थान पर, आप इससे अधिक कर सकते है। आप में से प्रत्येक अपने हाथ में बड़ी चुनौतियाँ ले सकते है और अधिक स्कूलों, गाँवों को गोद ले सकते है एवं अपना समय, शक्ति और पैसा इस कल्याण के लिए खर्च कर सकते है। और इस बात को सुनिश्चित कीजिये कि प्रत्येक बच्चा स्कूल में हो, सुरक्षित एवं प्रसन्न।

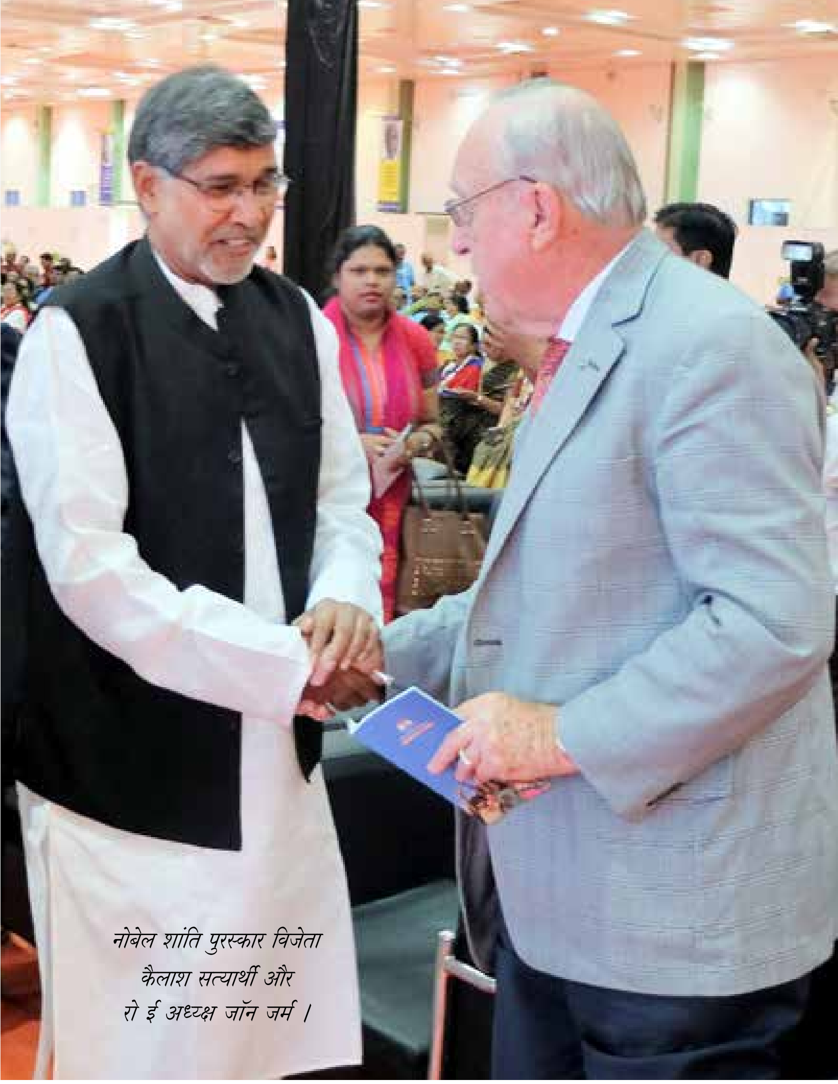

नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी और रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म ।

उन्होंने 'हाँ' क्यों कहा?

लगातार दूसरे वर्ष रोटरी साक्षरता सम्मेलन में शामिल होने के लिये सहमति देने के मुद्दे पर कैलाश और ने कहा, मेरे यहाँ आने के लिए हामी भरने पर मेरे कार्यालय में सभी को आश्चर्य हुआ क्योंकि मुझे दुनिया भर से 27,000 आमंत्रण आये हुये हैं। यदि मैं उन सभी को स्वीकार करूँ तो मुझे और सौ वर्ष जीना होगा!

उन्होंने चुटकी लेते हुये ज़ोरदार ठहाके के बीच कहा, "पाँच व्यक्ति आपको शांति के योगदान के लिये पदक और उद्धरण (साइटेशन) देंगे और फ़िर आपकी आगे की ज़िंदगी से शांति ही छीन लेंगे। मेरे साथ यही हो रहा है।"

फ़िर उन्होंने बताया कि उनके घर पर चोरी होने के दौरान नोबेल उद्धरण और नोबेल पदक की प्रतिकृति चुराये जाने की खबर उन्हें कैसे मिली। "जब हमें इस बात की जानकारी मिली तब मेरी पत्नी सुवेधा और मैं लैटिन अमेरिका में पनामा के राष्ट्रपति और उनकी पत्नी के साथ थे। उन्हें लगा कि मैं अपनी यात्रा रद्द करके भारत लौट आऊंगा लेकिन मैंने कहा कि यह तो पुलिस का काम है। इसमें मैं क्या कर सकता हूँ? यह अच्छा हुआ कि मैंने भारत आते ही असली पदक पहले ही अपने राष्ट्र को समर्पित कर दिया था और वह अब राष्ट्रपति के पास, एक संग्रहालय (म्यूज़ियम) में है। ऐसा विश्व में पहले कभी नहीं हुआ है और राष्ट्रपति को उसे देते हुए मुझे सन्त कवि कबीर दास का यह दोहा याद आया था, '*मेरा मुझमें कुछ नहीं, जो कुछ है सो तोह, तेरा तुझको सौंपता, क्या लागे है मोह।*'"

फ़िर एक और दोहा कहते वक्त उनकी आँखों में चमक आ गई। "तो जब मुझे चोरी की जानकारी मिली तो मुझे सन्त कबीर का ही एक और दोहा याद आ गयाः '*भला हुआ मेरी मटकी टूट गयी, मैं तो पनियाभरण से छूट गयी।*'"

चोरी के बाद उन्हें दुनिया भर से कई फ़ोन और ईमेल आये लेकिन मध्य प्रदेश की इन्नर व्हील से आये एक खत ने उन्हें आत्मविभोर कर दिया। इन्नर व्हील की इस सदस्या ने पिछले वर्ष की लिटरेसि समिट में भी भाग लिया था। और ने बताया, "उन्होंने हिन्दी में लिखा था, 'भैया, यह जानकर आश्चर्य हुआ कि भारत भूमि की सबसे बेशकीमती वस्तु चोरी हो गयी है। लेकिन आपके पास तो वह है जो नोबेल पदक और उद्धरण से भी ज़्यादा कीमती है वह प्रेम जो हम सबके दिलों में आपके लिए है'। इस बात के लिए धन्यवाद्। मेरे दिल में आपके प्रति एक भाई के रूप में जो स्नेह है, उसे कोई नहीं छीन सकता।' उस पत्र के कारण मैं आपकी कॉंफ़्रेंस में दोबारा आया हूँ।"

(साक्षरता सम्मेलन के बाद चुराया गया उद्धरण मिल गया. उसे एक जंगल में फ़ेंक दिया गया था।)

प्रत्येक रोटरी सदस्य में एक साक्षरता नायक

सत्यार्थी ने कहा कि साक्षरता नायकों द्वारा अपने पुरस्कार लेते समय उन्होंने उनमें "असीमित शक्ति, ऊर्जा और आशा देखी। मैं उनकी और आपकी आँखों में चिंगारी, और उनके और आपके चेहरों पर चमक देख सकता हूँ। वह चमक धनवान होने या शिक्षित होने के कारण नहीं है, बल्कि यह चमक राष्ट्र के सर्वाधिक वंचित एवं जरूरतमंद बच्चों को शिक्षा का तोहफा देने के गर्व के कारण है, जिसे उन्होंने हैप्पी स्कूल करके या पुस्तकालयों की स्थापना करके दिया है। बधाइयाँ।"

उन्होंने याद किया कैसे 10 वर्ष की आयु में, उन्होंने अपने सहपाठी को स्कूल छोड़ते एवं नगर छोड़ते हुए देखकर असहाय महसूस किया क्योंकि वह स्कूल की फीस और किताबों का खर्च वहन नहीं कर सकता था। "मैं रोया क्योंकि यह उसका दोष नहीं था, फिर मैं यह आश्चर्य करते हुए गुस्सा हो गया कि उसने मुझसे क्यों नहीं पूछा; यद्यपि मैं कोई अमीर परिवार में नहीं

बच्चों ने मुझे उनके जख्मों के निशान और घाव दिखाए... यदि उन्हें नींद आती थी, तो उन्हें हथोड़ी से मारा या कड़पे काटने वाली बड़ी कैंची से काटा जाता था। उन्हें कभी भी कोई दवाई नहीं दी गयी।

जब कालू ने राष्ट्रपति क्लिन्टन को चुनौती दि

कैलाश सत्यार्थी ने तस्करी करके सालों तक गुलाम बनाए गए एक भारतीय लके कालू की एक ऐसी दिलचस्प कहानी बताई जिसमें उसने नैतिक और आध्यात्मिक और राजनीतिक रूप से भी बिल क्लिंटन को तब चुनौती दी थी जब वे अमेरिका के राष्ट्रपति थे। 2000 के आसपास क्लिंटन कैरि कैनेडी की पुस्तक *स्पीक ट्रूथ टु पॉवर* का विमोचन करनेवाले थे। पुस्तक में दलाई लामा और नेल्सन मंडेला जैसे 50 मानवाधिकार संरक्षकों के बारे में लिखा गया है जो दुनिया में सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं। "उसमें मेरे काम पर भी एक अध्याय था और कैरि ने विमोचन समारोह के लिए मुझे भी अमेरिका जाने का निमंत्रण भेजा। मैंने कहा कि मैं कोई सेलेब्रिटी या चैंपियन नहीं हूँ; मैं जो भी हूँ बच्चों की वजह से हूँ, तो अच्छा होगा कि आप एक बच्चे को बुला लें । मैं भारत में से ऐसा कोई बच्चा ूँता हूँ जो बच्चों के अधिकारों के लिए मुझसे अधिक उत्साही हो।"

कैरि इस सुझाव से बहुत प्रसन्न हो गईं। सत्यार्थी ने कालू को चुना जिसे बिहार से चुराकर ले जाया गया था, और फ़िर उत्तर प्रदेश में गुलाम बनाकर रखने के बाद कालीन बनाने के काम में लगा दिया था। सत्यार्थी ने 30 अन्य बच्चों के साथ कालू को रिहा करवाया था। उन्हें ज़रा-ज़रा सी ग़लती पर बुरी तरह पीटा जाता था और सिगरेट और माचिस की तिल्लियों से जलाया जाता था, सत्यार्थी ने बताया।

वे उसके शरीर पर कई जगह सिगरेट से जलने और कटने के निशान, और ज़ख्म देखकर दंग रह गए थे। बच्चे ने मुझे बताया कि जब कभी भी उसे नींद आई या वह अपने माता-पिता के लिये रोया या उसने कहा कि वह घर जाना चाहता है, तो उसे जलती सिगरेट से दागा जाता और जलाया जाता, और कभी भी कोई दवा नहीं दी जाती थी। कभी-कभी उसके कटे स्थान को माचिस की तिल्लियों के बूरे से भरकर उसे

2015 में कैलाश सत्यार्थी को वर्ल्डस चिल्ड्रेन्स के मानद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

जला दिया जाता जिससे उसका माँस और त्वचा साथ-साथ जलकर मिल जाते।

उन बच्चों को पहले सत्यार्थी के दिल्ली के मुक्ति आश्रम में ले जाया गया और फ़िर लंबे पुनर्वास (रीहैबिलिटेशन) के लिए राजस्थान के बालाश्रम में। कालू में पाई के प्रति इतना ज़्यादा उत्साह था कि इन दोनों स्थानों में कुछ पाई करने के बाद उसने स्कूल जाने की इच्छा व्यक्त की। तो उसे स्कूल भेज दिया गया। वह पाई में बहुत होशियार था, उसे दो प्रमोशन मिले और वह अपनी क्लास में फ़र्स्ट आया। "तो हमने बाकी बच्चों को स्कूल जाने की प्रेरणा देने के लिए उसे दूसरी जगहों में भेजना शुरू किया। हम हर साल सैंकों गाँवों में स्कूल चलो अभियान चलाते हैं। कालू को भी कुछ इसी तरह के अभियान के तहत भेजा। शिक्षा के प्रति वो उत्साही बच्चा लगभग 60 बच्चों को स्कूल ले आया।"

पुस्तक के विमोचन के समय क्लिंटन ने मानवाधिकार के दिग्गजों के इतने बे समूह में एक बच्चे को देखा तो उसे अपने पास बुला लिया और उससे बातें करने लगे। "निर्भीकता और स्पष्टवादिता से कुछ देर औपचारिक बातें करने के बाद कालू ने उनसे कहा, मैं जानता हूँ कि आप विश्व के सबसे ज़्यादा शक्तिशाली नेता हैं और हम जैसे बच्चों के लिए, जो स्कूल नहीं जाते और कई जगहों पर गुलामी का काम कर रहे हैं, आप जो चाहे वो कर सकते हैं।"

उसके बाद कालू ने उनसे जो कहा उससे आप अनुमान लगाइये कि क्लिन्टन कितने हतप्रभ हुए होंगे। उसने कहा, "मैं यह भी जानता हूँ कि आप हमेशा राष्ट्रपति नहीं रहेंगे, लेकिन सब बच्चों को स्कूल भेजने के लिए क्या राष्ट्रपति होना ज़रूरी है? जब मैं 60 बच्चों को स्कूल तक ला सकता हूँ तो आप दुनिया के सभी बच्चों को क्यों नहीं ला सकते?"

सत्यार्थी ने कहा, "एक बच्चा जिसे गुलाम बनाकर रखा गया हो और जिसके साथ इतना दुर्व्यवहार किया गया हो, अमेरिका के राष्ट्रपति को चुनौती देने की हिम्मत रखता है। मैं आप सभी में शिक्षा के प्रति वो नैतिक साहस देखना चाहता हूँ। मैं यह मानने को कतई तैयार नहीं हूँ कि इस सभाग्रह में बैठे लोगों में इस देश में फ़ैली निरक्षरता के अभिशाप को समाप्त करने की ताक़त नहीं है। आपमें वह शक्ति है। आप रोटेरियन क्यों बने? क्योंकि आपमें मानवता, प्रेम, सेवा और दया के भाव हैं। आज मैं उस दया भाव के वैश्वीकरण का अनुरोध करता हूँ।"

worldschildrensprize.org

जन्मा था फिर भी मैं स्कूल जाना वहन कर सकता था।" तो अगले वर्ष, परिणाम आने के बाद, वह उनके एक मित्र के साथ ठेला किराये पर लेकर आस-पास के इलाको में निकल गए, अभिभावकों एवं अगली कक्षा में पड़ने जा रहे विद्यार्थियों से उनकी किताबों को रद्दी में बेचने के बजाय दान देने का अनुरोध करने के लिए। चार घंटे के भीतर, हम 2500 पुरानी किताबों को इकट्ठा करने में सफल रहे।

उन्होंने बच्चों को बाल मजदूरी की बेड़ियों से स्वतंत्र करवाने के लिए पाकिस्तान और बांग्लादेश में काम किया था। हम जानते है की दक्षिण एशिया की धरती, महान मूल्यों एवं नेताओं की भूमि है और ज्ञान से समृद्ध है। क्या हम ऐसे विश्व को बनाने की अगुवाई नहीं कर सकते जहाँ हर बच्चा स्वतंत्र हो?

सत्यार्थी ने कहा, संयुक्त राष्ट्र के नए सतत विकास लक्ष्यों में शिक्षा पर विशिष्ट भाषा है, जिसके प्रमुख घटक-सम्मिलित, समान, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं आजीवन शिक्षण है। "शिक्षा सभी मानव अधिकारों की कुंजी है, इसे अब और अधिक नहीं नकारा जा सकता। दुर्भाग्यवश, 60 मिलियन बच्चे कभी स्कूल नहीं गए, अन्य 200 मिलियन बच्चे उनकी प्राथमिक या माध्यमिक शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके। विश्व भर में, 263 मिलियन बच्चे स्कूलों में नहीं है।"

सबसे दु:खद यह तथ्य है कि दुनिया भर के बच्चों को हर साल शिक्षित करने के लिए आवश्यक धन केवल 4.5 दिनों के वैश्विक सैन्य खर्चे के बराबर है। "मैं हथियार एवं गोला-बारूद का बड़ा समर्थक नहीं हूँ; ऐसे विश्व का क्या काम जहाँ सैनिकों की संख्या शिक्षकों से अधिक हो, और बनायी, बेची और इस्तेमाल की जाने वाली गोलियों की संख्या पेंसिलों एवं किताबों से अधिक हो। हम कैसे अपने आप को सभ्य एवं सुसंस्कृत कह सकते है? हमें किसकी आवश्यकता है; बच्चों के हाथों में खिलौने एवं पेंसिलों की या बंदूकें, गोलियों और बमों की? केवल 4.5 दिन का वैश्विक सैन्य खर्चा दुनिया के हर बच्चे को स्कूलों में ला सकता है। तो दुनिया धन-दौलत में इतनी गरीब नहीं है! परन्तु राजनैतिक इच्छाशक्ति और हमारी ईमानदारी में गरीब है... हम कहते कुछ है और करते कुछ और है। हम वादे करते है पर हमारे बच्चों से किये गए ये वादे खोखले होते है क्योंकि हम किसी नैतिक उत्तरदायित्व को महसूस नहीं करते है। हम उन बच्चों के लिए उत्तरदायी महसूस नहीं करते जो स्कूलों में होने के बजाय सड़कों पर है।"

यदि एक भी बच्चा कहता है कि मेरे स्कूल जाने में अब बहुत देर हो गई और अब मैं बच्चा नहीं रहा, मेरा बचपन खो गया, तो हमें आईने के सामने खा होकर खुद से पूछना चाहियेः क्या हम वाकई सभ्य और सुसंस्कृत हैं?

परन्तु ये केवल संख्या या अंक नहीं है। "प्रत्येक बच्चे की एक निगाह है जो आपकी ओर देख रही है; आप उसे देख सकते है और नहीं भी। हर (वंचित) बच्चा आपके दरवाजे पर रोते हुए, अपनी आजादी के लिए, शिक्षा के लिए, अपने बचपन के लिए, दस्तक दे रहा है। यह हमारा नैतिक उत्तरदायित्व है कि हम इस चुनौती को अपने हाथों में लें," उन्होंने कहा।

दान की अधिकता

उनके भाषण के पश्चात्, आरआईएलएम प्रमुख शेखर मेहता ने रोटरी सदस्यों को निमंत्रण दिया ताकि वे अपना दिल एवं बटुआ खोलकर उस कल्याण के लिए दान दें जिसका सत्यार्थी इतने जोशपूर्ण तरीकें से समर्थन कर रहे थे। कुछ मिनटों में कुल रु 46 लाख इकट्ठा हो गए जिसमें, पीडीजी रवी और राज्यलक्ष्मी वाडलमानी (रु5 लाख), शिखर सम्मेलन प्रमुख जे बी कामदार (रु2 लाख), पीडीजी आशीष अजमेरा (रु2 लाख), डीजीई मौलिन पटेल (रु2 लाख) और इनर व्हील से डीजी विनय रैकर, पीडीजी रमेश अग्रवाल, हनुमंत रेड्डी एवं सविता युनानी हर एक के रु1 लाख शामिल थे।

RILM के लिए, पीडीजी वी जे पटेल ने रू51 लाख के दान को दोहराया, जैसा उन्होंने पिछले वर्ष किया था।

नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी, RILM कर्मचारियों और RILM सचिव अनिरुद्ध चौधरी के साथ सेल्फी लेते हुए।

चित्र : के विश्वनाथन

एस कृष्णाप्रतीश द्वारा रूपरेखा

PRIP के आर रविन्द्रन और TRF ट्रस्टी प्रमुख कल्याण बैनर्जी।

(बायें से) PDG विश्राम जदवा पटेल, जिन्होंने TEACH कार्यक्रम के लिए इस वर्ष रु 51 लाख दान किये, साक्षरता शिखर सम्मेलन प्रमुख जे बी कामदार और RILM प्रमुख शेखर मेहता।

RILM प्रमुख PRID शेखर मेहता नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी का स्वागत करते हुए।

ऊपर: शर्मिष्ठा देसाई और राशि मेहता।

TRF ट्रस्टी सुशील गुप्ता और PDG नयनतारा पलचौधुरी।

बायें:(बायें से) PDG आई एस ए के नज़र, PDG जी ओलिवन्नन और DG नटराजन नागोजी।

(बायें से) RRFC कमल संघवी, PRID पी टी प्रभाकर, DG एन सुब्रमण्यम, TRF ट्रस्टी प्रमुख कल्याण बैनर्जी, DG जया शाह और DG दर्शन गाँधी ।
नीचे: RID मनोज देसाई और रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म।

RID मनोज देसाई और शर्मिष्ठा देसाई ।

नीचे: DG जया शाह और PDG के पी नागेश।

(बायें से) DG विनयकुमार पाई रैकर, RRFC राजा सीनिवासन, DG हितेश ज़रीवाला, भीष्म जरीवाला, DG नटराजन नागोजी और जयंती सीनिवासन।

बायें: (बायें से) मार्लीन कामदार, शर्मिष्ठा देसाई, पूर्णिमा पटेल और रोटरियन नयन पटेल।

चित्र: *रशीदा भगत् और के विश्वनाथन; एस कृष्णाप्रतीश द्वारा रूपरेखा*

ढेर सारे

साक्षरता सम्मेलन में, कुल मिलाकर, ग्यारह MoUs पर हस्ताक्षर किया गया।

शिक्षक सहयोग: महाराष्ट्र में 18,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए **ग्लोबल एजुकेशन** के साथ एक MoU पर हस्ताक्षर किया गया।

ई-लर्निंग: 50:50 साझेदारी के आधार पर राज्य में 18,510 सरकारी स्कूलो में 37,010 ई-लर्निंग केंद्र स्थापित करने के लिए **महाराष्ट्र सरकार** के साथ एक रु 74 करोड़ का MoU।

200 मिलियन बच्चों को प्राथमिक शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से तकनीक का उपयोग करने के लिए नंदन नीलकेनी के **एक स्टेप फाउंडेशन** के साथ एक अन्य MoU पर हस्ताक्षर किया गया।

ट्राइफ फाउंडेशन के साथ एक रु 8.2 करोड़ मूल्य के MoU के ज़रिये 410 भारतीये स्कूलों में आभासी ई-लर्निंग केंद्र स्थापित किए जाएंगे।

व्यस्क साक्षरता: भारत के 30 राज्यों में लगभग 30,000 विधवा महिलाओं को विभिन्न प्रकार के कौशलों में प्रशिक्षण प्रदान करने के लिए UK के **दि लूम्बा फाउंडेशन** के साथ रू 15 करोड़ के एक MoU पर हस्ताक्षर किया गया।

दिल्ली, गुजरात, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल में 8,000

वंदना सिंह , CEO फूड सिक्योरिटी फाउंडेशन ऑफ़ इंडिया फूड बैंकिंग नेटवर्क, PRIP राजेंद्र के साबू के साथ। चित्र में रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म और RID मनोज देसाई भी शामिल है।

अतुल पल्टा, डायरेक्टर, द लूम्बा फाउंडेशन, RILM उपाध्यक्ष कमल संघवी के साथ, RILM प्रमुख शेखर मेहता की उपस्थिति में एक MoU पर हस्ताक्षर करते हुए।

रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म, डायरेक्टर और UNESCO के प्रतिनिधि शिगेरु ओयागी और RILM प्रमुख शेखर मेहता।

सुवर्ण खर्द, स्कूल शिक्षा विभाग की उप सचिव - महाराष्ट्र, PRID अशोक महाजन और PRID पांडुरंग सेट्टी (बीच में) के साथ।

MoU

महिलाओं को प्रशिक्षित करने के लिए RILM ने **लेबरनेट सर्विस इंडिया** के साथ एक अन्य MoU पर हस्ताक्षर किया।

बाल विकास: स्कूल जाने वाले बच्चों को एक मिलियन मुफ्त आहार उपलब्ध कराने के लिए **इंडिया फूड बैंकिंग नेटवर्क** के साथ एक MoU पर हस्ताक्षर किया गया।

लूम्बा फाउंडेशन के साथ 2,000 बच्चों को वापस स्कूल भेजने के लिए एक और MoU पर हस्ताक्षर किया गया।

हैप्पी स्कूल: संपूर्ण भारत में लगभग 10,000 पुस्तकालय स्थापित करने के लिए **रतननिधि चैरिटेबल ट्रस्ट** के साथ एक MoU पर हस्ताक्षर किया गया।

CII **स्पोर्ट्स कमिटी** के साथ एक MoU पर हस्ताक्षर किया गया जिससे संपूर्ण देश में लगभग 50,000 स्कूलों में बेहतर खेल सुविधाएँ उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी।

UNESCO के साथ एक MoU पर हस्ताक्षर किया गया। यह वयस्क शिक्षा, प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा, लड़कियों की शिक्षा, तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा, शिक्षा में ITC आजीविका शिक्षण पर केंद्रित रहेगा।

चित्र : के विश्वनाथन

एक स्टेप के CEO शंकर मारवाड और RILM प्रमुख शेखर मेहता, PDG राजेंद्र राइ, PRID एम के पांडुरंग सेट्टी और इ-लर्निंग प्रमुख रवि प्रकाश लैंगर की उपस्थितिमे में एक MoU पर हस्ताक्षर करते हुए।

PRID पी टी प्रभाकर और ग्लोबल एजुकेशन की CEO रैकेल श्रॉफ, RID मनोज देसाई, शिक्षक सहायता अध्यक्ष देवंग ठाकुर, RILM प्रमुख शेखर मेहता और उप सचिव सुवर्ण खर्ट की उपस्थिति में एक MoU पर हस्ताक्षर करते हुए।

RID मनोज देसाई और रत्ननिधि चैरिटेबल ट्रस्ट के ट्रस्टी राजीव मेहता, हैप्पी स्कूल के प्रमुख रवि वडलमणि, PRID गण व्हाई पी दस, अशोक महाजन और RILM प्रमुख शेखर मेहता की उपस्थितिमे में एक MoU पर हस्ताक्षर करते हुए।

साक्षरता शिखर सम्मेलन में गुमनाम नायकों का अभिनंदन

वी मुथुकुमारन

वे लोग असाधारण इच्छाशक्ति वाले साधारण लोग है; वे भारत से निरक्षरता रूपी अभिशाप को समाप्त करने के सामान्य जुनून को साझा करते हैं। इन गुमनाम नायकों को सुर्खियों में लाया गया और उन्हें रोटरी दक्षिण एशिया साक्षरता सम्मलेन में RILM द्वारा सम्मानित किया गया। अपने मार्ग में आने वाले असंख्य अवरोधों और कठिन कार्य के बावजूद, साक्षरता हीरो पुरस्कार के सभी छः प्राप्तकर्ता फौलादी नसों, लोहे के समान इच्छाशक्ति और मजबूत संकल्प-शक्ति के रोल मॉडल हैं, जो लहरों के विपरीत तैरने का माद्दा रखते हैं और जिनके पास शिक्षा का दीप जलाकर निरक्षर लोगों को सशक्त बनाने का विजन है।

राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति मुनीश भंडारी के नेतृत्व में छह सदस्यीय जूरी ने पिछले वर्ष प्राप्त किए गए 82 आवेदनों के मुकाबले, इस वर्ष 155 उम्मीदवारों में से पांच उम्मीदवारों का चयन किया। ''साक्षरता हीरो पुरस्कार के अध्यक्ष अनिल अग्रवाल ने कहा कि, "पीपुल्स चॉइस श्रेणी के लिए" हमारे वेब पेज के माध्यम से हमें 7.5 मिलियन ऑनलाइन वोट प्राप्त हुए हैं। पुरस्कार में एक प्रशस्ति पत्र, फलक और रु1 लाख का नकद पुरस्कार दिया जाता है।

विजेताओं का उत्साहवर्धन करते हुए, RIDE सी बास्कर ने, मंडल 3000 के DG के रूप में अपनी भागीदारी का स्मरण किया जब रोटरी क्लब तिरुचिरापल्ली के रोटरियनों ने मिलान अनुदान सहायता का उपयोग कर दयनीय स्थिति में कार्यरत्त एक सरकारी स्कूल का कायाकल्प किया था। क्लब ने स्कूल का जीर्णोद्धार किया और छात्रों को नए यूनिफार्म, जूते और शिक्षण सामग्रियाँ आदि उपलब्ध कराया। "मुझे अभी भी छात्रों के चेहरे पर मुस्कान और प्रसन्नता की झलक याद हैं, जब उन्होंने महसूस किया कि अब वे स्कूल जाने वाले अन्य बच्चों के समान हैं।" उन्होंने RILM अध्यक्ष शेखर मेहता को बधाई दी और कहा कि उन्हें विश्वास है कि अगले पांच वर्षों में भारत पूरी तरह से साक्षर होगा।

साक्षरता के नायक

अच्युत दास दक्षिण ओडिशा के लगभग 300 दूरस्थ, आदिवासी गांवों में काम कर रहे हैं और आदिवासियों, दलितों और वंचितों को शिक्षित करने

बाएं से: रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म, PRID वाई पी दास, यूनिफस वाइस चेयरमैन सैंड्रा श्रॉफ, PDG नैन्सी बारबी, रोटरी क्लब मद्रास इंडस्ट्रियल सिटी के अध्यक्ष जी मुरुगेश। शिमा मोडक, PRID पी टी प्रभाकर।

RSALS के अध्यक्ष जे बी कामदार, Aspire के सचिव दयाराम को साक्षरता हीरो पुरस्कार, जुडी जर्म और RIDE सी बास्कर की उपस्थिति में प्रस्तुत करते हुए।

वाले तीन जनजातीय विद्यालय को संचालित करते हैं। पुरस्कार स्वीकार करते हुए उन्होंने कहा, "साक्षरता सशक्तिकरण का एकमात्र उपकरण है जो आदिवासी जीवन, उनके समाज और जिस तरह से उनपर शासन किया जा रहा है, उसे परिवर्तित करेगा।"

खम्मीजीभाई करसनभाई प्रजापति, हालांकि शारीरिक रूप विकलांग है, गुजरात में मेहसाणा की सड़कों पर ट्रायसाइकिल की सवारी करते हुए भिक्षा मांगते हैं। इससे प्राप्त संपूर्ण रकम को 14 विद्यालयों में करीब 2,500 लडकियों को शिक्षित करने पर खर्च करते हैं। वह उन्हें वर्दी, जूते, शिक्षण सामाग्री और स्वेटर उपलब्ध कराते है।

राजेश शर्मा ने अपने विद्यालय के माध्यम से 1,500 बच्चों को सशक्त बनाया है जिसकी शुरूआत उन्होंने 2007 में शकरपुर, दिल्ली में एक मेट्रो रेलवे लाइन के नीचे किया था।

शिमा मोडक ने शिलांग के अंजली और रंगमन्म गांवों में, वर्ष 2010 से अपने NGO स्पार्क के माध्यम से 2,000 बच्चों को शिक्षा प्रदान की है। "हालाँकि हमारे पास RTE कानून है, तो क्या हम भिखारियों, कचड़ा-चुनने वाले लोगों के बच्चों को स्कूल जाता हुआ देखते हैं?" वह पूछते हैं। उनके छात्रों ने तायक्वोंडो जैसे मार्शल आर्ट्स में प्रशिक्षित प्राप्त किया और विदेशों में प्रतियोगिताओं में पदक जीता हैं।

NGO Aspire अपने 600 स्वयंसेवकों के नेटवर्क के साथ 400 गांवों तक पहुंच चुकी है, जिन्होंने स्कूल नहीं देखा है और इन्होने 1,500 सरकारी स्कूलों से 2,000 शिक्षक को प्रशिक्षित किया हैं।

सरथ पोपल्ली (लोगों की पसंद) वर्ष 2007 से अनाथालय मंचिकलुला के माध्यम से बेसहारा बच्चों की देखभाल कर रही है। उपायों का एक उचित साँचा

पुरस्कार अध्यक्ष अनिल अग्रवाल की मौजूदगी में लता रजनीकांत ने साक्षरता के नायक सरथ पोपल्ली को सम्मानित किया।

साक्षरता हीरोज अच्युत दास (बाएं) और खिमजीबाई करसेनभाई प्रजापति।

RIDE सी बास्कर, RID मनोज देसाई, रो ई अध्यक्ष जॉन जर्मे और IPRIP के आर रविंद्रन ने जूरी सदस्यों शांता सिन्हा, बाल अधिकार संरक्षण राष्ट्रीय आयोग अध्यक्ष और सैंड्रा श्रॉफ को सम्मानित किया।

जैसे परामर्श, नैतिक मूल्य और घरेलू निवास के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा अनाथालयों के बच्चों लिए एक स्वस्थ बचपन प्रदान करता है। उनकी कृपा से अब तक 15,000 बच्चे लाभान्वित हुए हैं और अब 2,000 बच्चे स्कूलों और कॉलेजों में अध्ययन रहे हैं।

''155 आवेदकों में से प्रत्येक आवेदक की सराहना की जानी चाहिए और विजेता RTE (शिक्षा का अधिकार) के वास्तविक रक्षक हैं। बाल अधिकार संरक्षण के लिए राष्ट्रीय आयोग के अध्यक्ष और एक जूरी सदस्य शांता सिन्हा कहती हैं,'' रोटरी के विशाल कार्यों ने पहले पीढी के शिक्षार्थियों के परिवारों को प्रोत्साहित किया है, जिनके पास स्कूली शिक्षा का समर्थन करने के लिए सांस्कृतिक पूँजी उपलब्ध नहीं है।

पुरस्कारों के प्रायोजक यूनाइटेड फास्फोरस लिमिटेड के उपाध्यक्ष सैंड्रा श्रॉफ, ने रोटरी के साक्षरता परियोजना की तुलना पोलियो उन्मूलन अभियान जिसने देश से पोलियो को जड़-मूल से समाप्त कर दिया, करते हुए कहा यह केवल समय की बात है कि ग्रामीण भारत में निरक्षरता इतिहास का हिस्सा बन जाएगी।

IPRIP के आर रविंद्रन की उपस्थिति में राजेश शर्मा को रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म से पुरस्कार प्राप्त हुआ।

साक्षरता की मशाल

रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म ने एक 10-सदस्यीय टीम से साक्षरता की मशाल प्राप्त की, जो 26 राज्यों और पांच केंद्र शासित प्रदेशों में रोटरी के साक्षरता मिशन का संदेश प्रसारित करके हुए 20,000 किलोमीटर की दूरी तय कर शिखर सम्मेलन स्थल पर पहुंचे थे। मशाल को चार सदस्यीय महिला टीम - रोटरी क्लब कोयम्बटूर टेक्ससीटी के मीनाक्षी अरविंद, रोटरी क्लब आकृति की मुकाम्बिगा रथिनम और प्रिया राजपाल को दिया गया - जो इसे एक कार यात्रा के माध्यम से - 70 दिनों में 24 देशों को पार करते हुए यूके लेकर जाएंगी। यूएस में, साक्षरता मशाल को रोटेरियन प्रशांत बाबू और शोभा द्वारा जुलाई सम्मलेन के समय इवान्स्टन से अटलांटा लाया जाएगा।

ठख अध्यक्ष जॉन जर्म ने RID मनोज देसाई, शेखर मेहता, TRF ट्रस्टी चेयर कल्याण बनजी और PRIP राजेंद्र सबू की उपस्थिति में महिलाओं की टीम को झंडा दिखाकर रवाना किया।

चित्र : के विश्वनाथन

साक्षरता
वर्णमाला पढ़ाने से अधिक है

के टी पी राधिका

साक्षरता शिखर सम्मेलन को संबोधित करते हुए पीआरआईपी राजेंद्र साबू ने कहा, भूख और शिक्षा एक साथ नहीं चल सकते।"हमारा देश ऐसे बच्चों से भरा हुआ है जिन्हें नाश्ता और कभी-कभी दोपहर का भोजन भी नहीं मिल रहा है।" ऐसे बच्चे विद्रोह करते है और स्कूल छोड़ देते है, "और वे समाज की गंदगी कहलाते है।'

मध्याहन भोजन योजना को पर्याप्त धन नहीं मिलता है। चंडीग में, स्कूलों को प्रति बच्चे के हिसाब से केवल रु1.40 मिलते है और इस राशि में खाद्य पदार्थ, ईंधन एवं स्टाफ का वेतन शामिल है। सरकार एवं बड़े समुदायों दोनों की बेपरवाही पर आर के नारायण के उद्धरण को दोहराते हुए, उन्होंने कहा: "अतीत बीत चुका है, वर्तमान चल रहा है और आने वाला कल अपने आने वाले कल के लिए बीता हुआ कल है, तो किसी भी बात की चिंता क्यों करना? - परन्तु आशा किरण जैसे रोटरी के मिशन हमारे बच्चों को उम्मीद देते है।"

पिछली दिसंबर जब उन्होंने उनकी पत्नी उषा के साथ चंडीग की झुग्गियों का दौरा किया, साबू ने बच्चों की दयनीय दुर्दशा को वर्णित किया - उन्हें अच्छे खाने की, पर्याप्त गर्म कपड़ों की और तो और जन्म प्रमाण-पत्र की भी कमी थी।

PRIP राजेंद्र साबू

एक रात, एक झोपड़ी में उन्हें 3-10 वर्ष की उम्र के छह बच्चे मिले, "भूखे और ठिठुरते हुए, ठंड से बचने के लिए बिना किसी गर्म कपड़ों या जूतों के।" उनकी माँ नमक डालकर कुछ चावल उबाल रही थी और वहाँ कोई दाल, सब्जी या मसालें नहीं थे। उनमें से कोई भी बच्चा स्कूल नहीं जाता क्योंकि उनके पास जन्म प्रमाण-पत्र नहीं है। "हम दूसरी झोपयिों में गए और सभी की एक ही कहानी थी। उन्होंने कहा, ये बच्चे किसी सूची में नहीं है। उनका क्या भविष्य है?" उन्होंने कहा, हालाँकि एक सरकारी केंद्र स्नेहालय' जहाँ रोटरी आशा किरण परियोजना चला रही है ने खाका तैयार कर लिया है और धीरे-धीरे चंडीग के एवं आस-पास के इलाकों के सभी बच्चों को सम्मिलित किया जायेगा।

बच्चे को गले लगाओ

शारीरिक स्पर्श की महत्ता पर ज़ोर देते हुए, साबू ने कहा कि मस्तिष्क के विकास के लिए यह अकेली सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है। "मैंने स्वयं इस बात का अनुभव किया है कि बच्चों को उस आलिंगन, उस प्यार की आवश्यकता है। बचपन के दौरान मिले प्यार एवं प्रसन्नता से बच्चा आत्मविश्वासी बनता है।" स्कूलों में, शिक्षकों को ऐसा समर्थन देने की आवश्यकता है। "केवल तब ही बच्चे बड़े होकर जिम्मेदार नागरिक बन सकेंगे।"

चिली की कवयित्री गब्रिएला मिस्ट्राल की पंक्तियों: 'Many things we need can wait. The child cannot.Now is the time his bonesare formed, his mind developed. To him we cannot say tomorrow, his name is today,' (हमारी जरूरत की अनेक चीज़ें इंतज़ार कर सकती है। बच्चा नहीं कर सकता। अभी वह समय है जब उसकी हड्डियां बनी है, दिमाग विकसित हुआ है। उसे हम कल नहीं कह सकते, उसका नाम आज है,) को दोहराते हुए साबू ने कहा कि साक्षरता मिशन को इस संदर्भ में समझना चाहिए, केवल वर्णमाला पाना ही नहीं, बल्कि संपूर्ण शिक्षा की ओर पहले कदम के रूप में। आशा किरण इस दिशा में कार्यरत है और आठ राज्यों में सफलतापूर्वक लागू किया जा चुका है। यह बाल गुलामी को बाल संबंधों में परिवर्तित करेगा। "इसके लिए हमारे पास संसाधन है। और हमें हमारे स्वयं के उदाहरण खे करने है।"■

मस्तिष्क के विकास के लिए शारीरिक स्पर्श अकेली सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है। बच्चों को उस आलिंगन, उस प्यार की आवश्यकता है।

टीआरएफ लक्ष्य, 2017-18

रशीदा भगत्

सभा मंडप में उत्साह और जोश, दोनों का समाँ छाया हुआ था, जहाँ पहली बार PRIPगण राजेंद्र कुमार साबू, कल्याण बैनर्जी, के आर रविंद्रन सहित श्रीलंका तथा नेपाल के रोटेरियन तथा 300 के करीब ज्येष्ठ भारतीय रोटरी नेतागणों का बृहत 'समूह' एक कार्यक्रम के लिये एकत्रित हुये थें – दिशा– जिसे RIDE सी भास्कर ने, फरवरी के अंतिम सप्ताह में, मुंबई में संचालित किया था।

यह सभा असल में 2017-18 के आगंता डीजीयों के लिये आयोजित एक गहन प्रशिक्षण कार्यक्रम था और भास्कर ने डीजीयों से अर्ज किया कि वें कार्यक्रम स्थल में RCयों, RRFCयों, RPICयों, जैसे चोटी के रोटरी नेतागणों, उनके सहायकों साथ ही साथ दो महत्वपूर्ण परियोजनाओं – साक्षरता एवं WinS – के समन्वयकों के ''संग्रहित ज्ञान'' का बेहतरीन तरीके से उपयोग करें।

उन्होने ऐलान किया कि कुमराकोम में DGE ओं के साथ आयोजित इससे पूर्व की एक बैठक में, इन 'परिवर्तन कर्ताओं' ने, जैसा कि वें आगंता मंडलाध्यक्षों को उल्लेखित करते हैं, 2017-18 में टीआरएफ के लिये 31 मिलियन डॉलरें इकठ्ठा करने का वादा किया है, जो पिछले साल (2015-16) इकठ्ठा की गयी रकम से दोगुनी है। भारत से इस रोटरी वर्ष के लिये टीआरएफ लक्ष्य है 26.5 मिलियन डॉलर।

इस लक्ष्य को हासिल किया जा सका जब पाया गया कि लगभग 60 प्रतिशत रोटरी क्लबें, फाऊँडेशन को कुछ भी नहीं दे रहे हैं और फैसला किया गया कि 2017-18 में, प्रत्येक रोटेरियन से टीआरएफ को कम से कम 100 डॉलर देने के लिये कहा जायेगा।

भास्कर और रो इं के निदेशक मनोज देसाई दोनों ने कहा कि भारत, सदस्यता, टीआरएफ को देय, साक्षरता, WinS तथा विभिन्न सामुदायिक परियोजनाओं जैसे रोटरी के भिन्न मानदंडों पर इतना

जैसा कि रो इं के निदेशक देसाई ने कहा था इस सवाल का जवाब यही है कि यह कार्यनीतिक योजना का एक अहम हिस्सा है: क्लबों की सहायता करें और उसे सशक्त बनायें। ''हम सभी इस बात से सहमत हैं कि रोटेरियनों के लिये, मिलने की तथा सेवा परियोजनाओं के जरिये समुदाय का भला करने की सबसे बढिया जगह है रोटरी क्लब। सो हम अपने दिल पर हाथ रखकर खुद से पूछ ले कि क्या क्लबें रो इं द्वारा निर्देशित तथा इच्छित तरीके में काम कर रहे हैं?''

यदि जवाब 'ना' में हो, तो फिर ''यह उनकी नहीं बल्कि हमारी गलती है कि हमने क्लब अधिकारियों तथा अध्यक्षों को सही तरीके से प्रशिक्षित नहीं किया है जो असल में क्लबों की अगुआई करने वाले हैं। सो संपर्क कडी कहीं पर टूट गयी है जिसे जोडना है। वरना, जमीन पर, बिना किसी ठोस आधार के ही यदि आप अधिक तेजी से, अधिक ऊँचाई तक पहुँच जाते, तो लडखडाकर गिर पडते।''

उन्होने कहा भारत उन दिनों से काफी आगे बढ़ चुका है जब तब की प्रधान मंत्री इंदिरा गाँधी को गेहूँ मंगवाने के लिये अमरीका जाना पडा क्यों कि उस वक्त हमारे देश में उसका बेहद अभाव था और इस तरह अमरीका ने भारत को 12 मिलियन टन गेहूँ का निर्यात किया। लेकिन अभी पिछले साल, हमने खुद 9 मिलियन टन गेहूँ का निर्यात किया; अब हमारे पास विदेश विनिमय संचय में 5 बिलियन डॉलर हैं और हमने हाल में एक साथ अंतरिक्ष में 104 उपग्रह भेजें।

भास्कर ने आगे कहा कि क्लबों को सशक्त बनाने वालों में मंडलाध्यक्ष ही सबसे प्रधान व्यक्ति थें, जिनके बाद बारी आती है मंडल चैयर की। ''पहली बार, श्री लंका तथा नेपाल सहित सभी मंडल चैयर, प्रशिक्षण पाने एक ही जगह एकत्रित हुये हैं। हम चाहते हैं कि आप सभी वापिस जाकर यहाँ सीखी जानकारियों के बारे में अपने क्लबों को बतलायें। और, परस्पर क्रिया करें; यदि आप नहीं जानते हो तो, सवाल पूछें क्यों कि हमारे जोन के ज्येष्ठ नेतागण आपको अपने अनुभवों के बारे में बतलाने के लिये आज यहाँ आये हैं।''

धारणीयता, एक बडी समस्या

भास्कर ने कहा कि भारत में सबसे बडी समस्या है धारणीयता; ''लगभग 40 प्रतिशत रोटेरियन सदस्य बनने के पहले या दूसरे साल के भीतर क्लब छोडकर

बाएं से: RID मनोज देसाई, RIDE सी बास्कर, PRID गण पी टी प्रभाकर, अशोक महाजन, वाई पी दास, शेखर मेहता और IPRIP के आर रविंद्रन।

बढ़िया काम कर रहा है कि अब तक 4,5, एवं 6A तक सीमित इस अंचल को जल्द ही 4,5,6,एवं 7 तक विस्तृत कर दिया जायेगा। इसका मतलब है हमारे प्रदेश के दो रो इं निदेशकों का प्रभाव कुछ ज्यादा महसूस किया जायेगा।

तीव्रतर और उच्चतर, लेकिन अधिक ताकतवर!

लेकिन जब कि भारत इतना बढ़िया काम कर रहा था और इसमें कोई शक नहीं था कि ''हम अधिक तेजी से और अधिक ऊँचाई तक प्रगति कर चुके हैं, सवाल यह है: क्या हम अधिक सशक्त बन पाये हैं?''

भारत अधिक तेजी से और अधिक ऊँचाई तक प्रगति कर चुके हैं, सवाल यह है: क्या हम अधिक सशक्त बन पाये हैं?

RIDE सी भास्कर

दिशा के अध्यक्ष PDG भरत पंड्या सभा को संबोधित करते हुए, चित्र में RIDE सी बासकर भी शामिल हैं।

चले जाते हैं जिसका मतलब है क्लबें सदस्यों की दिलचस्पी को जगाने में चूक गये हैं। सो हम किस तरह इस 'कूच' को संभालने वाले हैं और हर एक पुरूष या महिला सदस्य को हमारी संस्था के साथ बाँधे रखने वाले हैं? मंडल सदस्यता चैयर के लिये यह एक बडी समस्या है।''

विश्लेषण ने दिखलाया है कि जब कि 1500 नये रोटेरियन जोडे गये, उनमें से 1,200 सदस्य रोटरी छोडकर चले जाते हैं ''और हम जानना नहीं चाहते कि वें क्यों चले जाते हैं। हमने पिछले पाँच सालों में उनकी निकासी की वजह जानने मंडल वारी उपलब्ध आधार सामग्री का विश्लेषण किया। कृपया उसे ध्यान से देखें।'' मुख्य वजह यह थी कि क्लब बैठकों के उचित संचालन तथा अच्छी सामुदायिक परियोजनाओं के जरिये क्लबें, रोटरी छोडकर जाने वालों की दिलचस्पी नहीं बनाये रख पाये, उन्होने कहा।

उत्तरीय तथा पूर्वी भारत पर ज्यादा संकेंद्रण करने का फैसला भी किया गया, जो रोटरी के लिये अब भी 'हरे भरे खाली मैदान'' है क्यों कि वहाँ अनेक शहरों में एक भी रोटरी क्लब नहीं है, सो इस प्रदेश में अधिक क्लबों का गठन किया जा सकता है। लेकिन नये और मौजूदा क्लबों को यह सुनिश्चित करना होगा कि सामुदायिक जरूरतों को मूल्याँकित करके उनका समाधान ढूँढने के बाद अपने प्रदेशों में महत्वपूर्ण परियोजनायें कार्यांवित करें। ''तब जाकर समुदाय आपको सराहेगा और रोटरी की जन छवि बेहतर हो जायेगी। और आपको बडी परियोजनाओं के लिये दौड धूप नहीं करनी पडेगी क्यों कि हमारे पास दो उत्कृष्ट परियोजनायें हैं'– साक्षरता और थळपड; यदि आप इन दोनों में से कोई एक परियोजना कर सके तो आपको वैश्विक या मंडल अनुदान मिल पायेगा।

जैसे हंस उडान भरते हैं

सभा का संबोधन करते हुये दिशा के चैयरमैन पीडीजी भरत पंड्या ने पर्दे पर दिखाये गये 'विजुअल'– अंग्रेजी अक्षर त की बनावट में साथ-साथ उडने वाले राजहंसों का झुंड– को विवरित किया। ''इस तरह उडने से उन्हे 70 प्रतिशत अधिक झोंका मिल पाता है, और हर एक हंस देख पाता है कि आगे क्या है। एक दूसरे का हौसला बढाने वें या तो काँव-काँव करते हैं या फिर आवाजें देते रहते हैं। इस 'झुंड' ने, ''एक पथ बनाया है और पीढ़ी दर पीढ़ी, वें हर साल इसी पथ पर उडते आ रहे हैं।''

हमारा उद्देश्य है हमारी परियोजनाओं की विविधता, चौडाई, गहराई तथा दृश्यता को बढाना, ताकि हम परिवर्तन ले आ सके। पथ नहीं बल्कि उसकी दिशा मायने रखती है।

PDG भरत पंड्या

दिशा का उद्देश्य भी यही था, जिसने भारत के हर हिस्से से 300 रोटरी नेताओं को एक ही मंच पर एकत्रित किया था... ''एक टोली के रूप में मिलकर काम करना। हमारा उद्देश्य है हमारी परियोजनाओं की विविधता, चौडाई, गहराई तथा दृश्यता को बढाना, ताकि हम परिवर्तन ले आ सके। पथ नहीं बल्कि उसकी दिशा मायने रखती है। आप सभी अपने मंडल में रोटरी का आधार हैं और इसी वजह से आप यहाँ हैं... आगामी साल के लिये एक दिशा प्रदान करने के लिये।''

पंड्या ने कहा किसी भी दल में दो किस्म के रोटेरियन होते हैं... 'काम करेंगे' और 'काम कर सकते हैं' किस्म के रोटेरियन। ''यें 'काम करेंगे' रोटेरियन चाहे कुछ भी हो काम करेंगे और सही लक्ष्य निर्धारित करने पर वें अपने लक्ष्य को हासिल कर पायेंगे। और आपके नेतृत्व में 'काम कर सकते हैं' समूह को 'काम करेंगे' में बदल दिया जायेगा, कम से कम कुछ हद तक, और आपके कार्य वर्ष की कामयाबी निश्चित कर दी जायेगी,'' उन्होने कहा। दिशा समूह का उद्देश्य यही था जिसे *हम है ना* नाम दिया गया था।

दिशा के सचिव राजू सुब्रमणियन ने कहा यह एक अनोखा प्रशिक्षण कार्यक्रम था – एक ही छत के नीचे और एक ही बार में।

प्रादेशिक भाषाओं में रो इं की नियमावली

PRIP राजेन्द्र सबू और PRIP के आर रविंद्रन ने क्षेत्रीय भाषाओं में आरआई मैनुअल जारी किया। चित्र में PDG सैम पतिबंडला और DGE जी वी रामाराव, (बाएं से): PDG के रामलिंगा रेड्डी, DGE जे अब्राहम, PDG टी वी आर मूर्ति, RIDE सी बास्कर और PDG भरत पंड्या भी शामिल हैं।

आगंता मंडलाध्यक्षों का संबोधन करते हुये, RIDE सी भास्कर ने कहा कि अनेक क्लब अध्यक्षों का कहना था कि वें अंग्रेजी में रो इं की नियमावली को पढने में कठिनाई महसूस कर रहे थें। ''लेकिन यह इतनी सविवरण पुस्तिका है कि यदि अध्यक्ष इसे पढेंगे, तो उन्हे किसी से इस पर सलाह लेने की जरुरत नहीं पडेगी। सो मैंने रो इं की नियम पुस्तिकाओं को सभी प्रादेशिक भाषाओं में अनुवाद करने का फैसला किया।''

यह काम स्वयंसेवकों के प्रयासों की वजह से पूरा किया गया, उन्होने कहा और उन सभी का शुक्रिया अदा किया जिन्होने प्रादेशिक भाषाओं में उनका अनुवाद किया जैसे पीडीजीगण कृष राजेंद्रन तथा सुरी (बी राजन) जिन्होने उसे सिंहली भाषा में अनुवाद किया; गुजराती में पीडीजी आशिष देसाई, मराठी में पीडीजी दीपक शिकारपुर, बंगाली में पीडीजी अनुसूमन बंदोपाध्याय, उडिया में रबीनंद रे, तमिल में जी ओलीवन्नन, मलयालम में पीडीजी शशीकुमार, तथा तेलुगु में सैम पतिबंडला और टीवीआर मूर्ति।

यह आसान काम नहीं था और इसे पूरा होने में नौ महीने लगे लेकिन काम पूरा हो ही गया और उन्होने मुझे उनकी 'सॉफ्ट' कापियाँ भेजी; मैंने मुद्रण करवाया। अब ये अनुवादित 'सॉफ्ट' कॉपियाँ रो इं का बेशकीमती संग्रह बन गया है; अब अध्यक्ष और सचीव जान पायेंगे कि उन्हे क्या करना है। DGE आशा ने एक मेल भेजा था कि सभी अध्यक्षों को कन्नड संस्करण बेहतर लगता है,'' भास्कर ने कहा और DGEओं से यह सुनिश्चित करने के लिये अर्ज किया कि पीआरआईपी के आर रविंद्रन् द्वारा प्रादेशिक भाषाओं में जारी की गयी ये नियम पुस्तिकायें, निर्वाचित-अध्यक्षों को मिल रही है; और यह भी कि वें उसे खोलकर पढ रहे है।

भास्कर ने कहा कि एक और बडी समस्या, या यूँ कहें भूल, जिसे उन्होने पाया, वह थी क्लब बैठकों का अनुचित तथा गलत संचालन। ''मैं कुछ ऐसे क्लबों में गया हूँ जहाँ क्लब अध्यक्षों को एक व्यवस्थित बैठक का आयोजन करना भी नहीं आता। आप एक नये सदस्य को ले आते हो और उसे प्रभावित नहीं कर पाते हो तो वह आपके साथ कैसे टिक पायेगा। यदि वह हर बात को व्यवस्थित और पक्के अनुशासन में पाता हो तो वह आपके साथ रहना चाहेगा। लेकिन मैंने पाया है कि ज्यादातर क्लबें भूल ही चुके हैं कि किस तरह व्यवस्थित बैठकों का आयोजन किया जाता है।''

इसे ठीक करने, ''हम 'रोटरी क्लब बैठक: क्या करें और क्या ना करें' पर अंग्रेजी में उप शीर्षकों सहित एक ५ मिनट की विडियो कतरन ले आये हैं। बाद में प्रादेशिक भाषाओं में इनका अनुवादन किया जायेगा।'' प्रत्येक DGE को यें डीवीडीयाँ दी गयी और RIDE ने अर्ज किया कि वें अपने क्लबों को भी इसकी प्रतियाँ भेजे; उनसे वीडियो कतरनें देखने तथा व्यवस्थित तरीके में बैठकों का आयोजन करने के लिये कहें।

नेपाल की जीत

DGE यों का संबोधन करते हुये रो इं के निदेशक देसाई ने कहा कि जब उन्हे रो इं कार्यनीति योजना कमेटी में नियुक्त किया गया, ''मैंने शुरू में ही सुना था कि जब संस्था के भीतर के मुकाबले संस्था के बाहर तेजी से बदलाव देखा जाता है, तो हम लुप्त हो जाने के खतरे में पड जाते हैं। हमें बदलने की जरुरत है।''

पिछले 19 महीनों में वें जो बदलाव ले आ रहे थे उनमें गत साल में मंडलों को 34 भेंट तथा इस साल अब तक 28 भेंट भी शामिल है। DG, ऊम्र्ए, तथा ऊम्र्छ के त्रिनेता बैठकों का आयोजन करने के अलावा मंडलों में विजन 20:20 सेमीनारों का आयोजन भी किया गया। एक और अहम मुद्दा था चुनाव और इस साल डीजीओं के लिये 15 सर्वसम्मत चुनाव आयोजित किये गये। ''भारत को इसी पथ पर चलना है।''

हालाँकि हम पिछले साल सदस्यता में अव्वल स्थान पर थें, निर्वाचित मंडलाध्यक्षों को चाहिये कि अधिक महिला सदस्यों तथा युवा सदस्यों को ले आने के बाबत में ज्यादा ध्यान लगायें। ''और जन छवि अब नि:शब्द सेवा प्रयोग नहीं रहेगा; सेल्फीयों के इस जमाने में, नि:शब्द सेवा बेमतलब बनकर रह गया और हमें दुनिया को बतलाना है कि हम क्या कर रहे हैं।''

देसाई ने कहा 25 मंडलों ने अपनी कार्य योजना को पेश कर दिया है जब कि कुछ अन्य मंडल, अपेक्षित योजना को तैयार कर रहे हैं। उन्होने मंडल 3292 (नेपाल) की तारीफ की जिन्होने एक लघु पुस्तिका जारी की जिसमें 2020 से आगे 2022 तक की कार्य योजना के बारे में विवरित किया गया है। ''इस वक्त यही बेहतरीन तरीके से विकसित होने वाला मंडल है। उन्होने 11 और क्लबों तथा 624 सदस्यों को जोडा है और इस तरह की उत्कृष्ट परियोजनायें कार्यांवित कर रहे हैं। उन्होने दो अघड सदस्य दिये है; पिछले साल उन्होने टीआरएफ को 1 मिलियन डॉलरों का अंशदान दिया और इस साल हम 1.25 मिलियन डॉलर को भी पार कर देंगे... और यह सब एक छोटे से देश से, जिसका नाम नेपाल है!''

भास्कर और देसाई दोनों पुन:पुष्टि करते हैं कि चुनावों के लिये बेहतरीन विकल्प था इलेक्ट्रानिक मतदान और वादा किया कि वें ऊम्र्ए ओं के कुछ मुद्दों को रो इं तक ले जायेंगे।

अनोखा अवसर

पीआरआईडी तथा WinS के उपाध्यक्ष पी टी प्रभाकर ने, हिंदी फिल्मों से मशहूर गीतों को विडियो कतरनों के साथ-साथ नेतृत्व तथा उससे संबंधित हिस्सों पर अपने संबोधन को पेश करने के द्वारा कार्रवाईयों से भरे लंबे दिन के आखिर में दर्शकों को तल्लीन करके रखा।

जन छवि अब नि:शब्द सेवा प्रयोग नहीं रहेगा; सेल्फीयों के इस जमाने में, नि:शब्द सेवा बेमतलब बनकर रह गया और हमें दुनिया को बतलाना है कि हम क्या कर रहे हैं।

RID मनोज देसाईं

''आपके पद के अनुरूप, क्रमश: अपने-अपने मंडलों में आपको कुछ परिवर्तनों को निर्धारित करना होगा और अपने मंडल को उसका सबसे बेहतरीन रोटरी वर्ष दिलाना होगा। आपको दोबारा ऐसा अवसर नहीं मिलने वाला है।'' पीआरआईपी क्लेम रेनॉल्ट के शब्दों को दोहराते हुये, जिन्होने कहा था कि रोटरी आप और हम जैसे साधारण लोगों को अपनी जिंदगी में इतना कुछ करने का असाधारण अवसर देता है जिसकी आपने कल्पना तक नहीं की होगी, उन्होने कहा, ''आपको दोबारा ऐसा अवसर नहीं मिल पायेगा, सो उसका पूरा फायदा उठा लें।''

PDG भरत पंड्या, DGEगण वेन सोम अवांस, जी वी रामाराव, RIDE सी बास्कर, PRIP के आर रविंद्रन, RID मनोज देसाई, DGEगण प्रफुल्ल शर्मा और राजकुमार भूटोरिया।

उनके पास सबसे बडा अवसर था CSR निधि का – कुल रु 14,000 करोड़ – उत्कृष्ट परियोजनाओं के लिये उपयोग करना। ''हम एक सेवा संस्था है, इसमे से सेवा को निकाल दें तो हम भी कोई जिमखाना या कास्मोपालीटन क्लब बन जायेंगे, सो अच्छी सेवा परियोजनाओं को आँखों से ओझल ना होने दीजिये,'' उन्होने कहा।

प्रभाकर ने कहा कि नये सदस्यों को पाने में रो इं संसार के अग्र में होना, टीआरएफ़ को देने में दूसरे स्थान में रहना, पोलियो से छुटकारा पाने में भारत की सहायता करना कोई मामूली उपलब्धि नहीं है। ''और हमें 4 अंचल व दो निदेशक मिलने वाले है, सो हम कह सकते हैं हम वाकई रोटरी संसार की अगुआई कर रहे हैं,'' उन्होने कहा।

RIDE सी बासकर

उन्होने नेतृत्व करने वालों के लिये कुछ टिप्पणियाँ दी, जो यूँ है:

- यह मायने नहीं रखता कि आपके पास कितना है, यही मायने रखता है कि आप उसका क्या करते हैं। बीथोवन और जॉन मिल्टन की मिसाल को ही लीजिये जिन्होने दुनिया को महानतम उपहार देने – बेहतरीन संगीत और कविता– अपनी शारिरिक अक्षमता पर जीत हासिल की।
- दृष्टिकोण ही सब कुछ है। एक सकारात्मक दृष्टिकोण रखिये।
- आलोचकों से ना डरें... यदि आपका काम अच्छा हो तो भी आपको काफी सारी आलोचना मिलेगी। अनेक डीजी, शुरु में अच्छा काम करते हैं, लेकिन पहली आलोचना को सुनते ही हवा निकाले गये गुब्बारे के समान बन जाते हैं और वहीं रुक जाते हैं।

हम एक सेवा संस्था है, इसमे से सेवा को निकाल दें तो हम भी कोई जिमखाना या कास्मोपालीटन क्लब बन जायेंगे, सो अच्छी सेवा परियोजनाओं को आँखों से ओझल ना होने दीजिये।

PRID पी टी प्रभाकर

- आलोचकों से ना डरें; *कुछ तो लोग कहेंगे, लोगों का काम है कहना* (फिल्म *अमरप्रेम* से किशोर कुमार का मशहूर गीत।)
- एक सकारात्मक सोच रखते हुये असम्मति का सामना करना सीखें।
- कठिन समय और चुनौतियों का डटकर सामना करें और आगे बढ़ते रहें। *रुक जाना नहीं, तू कहीं हार के*।
- भगवत् गीता से प्रबंधन का सबक। हार वह नहीं होती जब आप नीचे गिर जाते हैं; हार वही है जब आप उठने के लिये मनाह करते हो या उठने में चूक जाते हो।
- हम उत्कृष्ट वैश्विक अनुदान देते हैं, लेकिन उसमें से एक प्रतिशत अनुदान में टीआरएफ निधि का उचित उपयोग नहीं किया गया होता है। ऐसा ना होने दें।
- भास्कर अगले साल, चुनाव से जुडी कोई भी शिकायत नहीं सुनना चाहते हैं।
- लंबी अवधि की एक सामुदायिक परियोजना को स्थापित कीजिये जिसे आपकी कार्यावधि के बाद, अनेक सालों तक याद किया जाये। *कल खेल में हम हो ना हो* । (*मेरा नाम जोकर*)।

साक्षरता के बढ़िया लक्ष्य

PRID तथा RILM के चैयर शेखर मेहता ने DGE ओं से इस बृहत् प्रशिक्षण कार्यक्रम का, बेहतरीन तरीके से फायदा उठाने के लिये कहने के साथ साक्षरता के क्षेत्र की नयी खबरों के बारे में अवगत कराना शुरू किया। ''मैंने अब तक ऐसा कोई सभा मंडप नहीं देखा जो इतने सारे जबरदस्त लोगों से खचाखच भरा हो!''

उन्होने कहा कि अब तक साक्षरता परियोजना जमीन पर धीमा चलने की अवस्था में था लेकिन अब वाकई तेजी से 'उडान' भरने लगा है ''शुक्रिया उत्कृष्ट परियोजनाओं का तथा क्लबों द्वारा समान्य स्तर पर किये गये उत्कृष्ट काम का। हमने काफी कठोर लक्ष्य निर्धारित किये थे लेकिन उन्होने सभी को हासिल कर दिखलाया। हमने सोचा था कि 5,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित करना मुश्किल काम था, लेकिन एक अकेले मंडल 3131 ने 10,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया। और 5,000 शिक्षकों को दो सालों में प्रशिक्षित किया गया।''

इसी तरह एक और लक्ष्य था 10,000 ई-पठन केंद्रों को शुरू करना। ''लेकिन अकेला गुजरात ही, गुजरात सरकार के साथ 35,000 केंद्र शुरू करने वाला है।''

चित्र: रशीदा भगत्

वरिष्ठ नेतृत्वकर्ताओं का समारोह

रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म, पूर्व रो ई अध्यक्ष - राजेंद्र के साबू, कल्याण बैनर्जी, के आर रविन्द्रन, RID मनोज देसाई, TRF ट्रस्टी सुशील गुप्ता, PRID - पांडुरंगा शेट्टी, अशोक महाजन, वाय पी दास, शेखर मेहता, पी टी प्रभाकर और RIDE सी बास्कर। इनके साथ ही, उपस्थित: राशी मेहता (शेखर मेहता की पत्नी), Uniphos उपाध्यक्ष सेंड्रा श्रॉफ (शेखर मेहता के पीछे) और MPower के संस्थापक एवं सीईओ नीरजा बिड़ला (अध्यक्ष जर्म के साथ बात करते हुए)।

चित्र: रशीदा भगत और के विश्वनाथन
एस कृष्णामूर्ति द्वारा रूपरेखा

100 वर्षों की यात्रा की ख़ुशी में

जयश्री

बाएं से: RID मनोज देसाई, जुडी जर्म, रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म, PRID शेखर मेहता, राशि मेहता और शर्मिष्ठा देसाई।

दक्षिण एशिया साक्षरता शिखर सम्मलेन के दूसरे दिन, शताब्दी वर्ष के रात्रिभोज की रात एक स्मरण की रात थी जहाँ रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म, आरआईडी मनोज देसाई और टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता ने रोटरी संस्थान के विकास को याद किया, वर्ष 1917 में रो ई के छठवें अध्यक्ष आर्च क्लम्फ के मामूली 26.5 डॉलर से लेकर आज तक जो यह है। जर्म ने कहा, "जब दुनिया में अच्छा करने के लिए क्लम्फ ने स्थायी निधि की रचना की, रोटरी पहले से ही समुदाय की परियोजना में सम्मिलित थी। इसने बस अपने भौगोलिक क्षेत्र से बाहर नहीं देखा था। परन्तु 100 वर्ष की समाप्ति के पश्चात् पीछे देखने पर, हम में से प्रत्येक व्यक्ति को उन लोगों की संख्या पर गर्व है जिन्हें हमने 150 मिलियन डॉलर के अनुदान के माध्यम से प्रभावित किया है। आज केवल हमारा संस्थान ही 4-सितारा श्रेणी का संस्थान है और इसे दुनिया के उत्कृष्ट परोपकारी संगठन के रूप में स्वीकार किया गया है - और यह सब आपके सहयोग के कारण संभव हुआ।"

उन्होंने पीआरआईपी जेम्स बोम्मार द्वारा फिलीपींस में शुरू किये गए पोलियो उन्मूलन कार्यक्रम का भी ज़िक्र किया जिसके अंतर्गत 6 मिलियन बच्चों का टीकाकरण किया जाना है। जर्म और जूडी ने उस एतिहासिक स्थल का दौरा किया "जहाँ बोम्मार ने पहली दो बूँद पिलाई थी।" उनकी आवाज भावना में दब गयी जब उन्होंने पाँच टीका लगाने वालों के बारे में बात की जिन्हें हाल ही में अफ़ग़ानिस्तान में मार दिया गया जहाँ पोलियो के दो मामले दर्ज किये गए है। "उन्होंने हमारे अभियान के लिए अपनी जिंदगियां दे दी, ताकि एक बच्चा अपंग ना हो। उन्हें सम्मानित करने के लिए पोलियो का उन्मूलन करने एवं दुनिया के बच्चों से किया वादा पूरा करने हेतु, कैसे हम अपना सर्वस्व नहीं दे सकते है?"

जर्म ने आगे कहा, "आपको संस्थान को निरंतर योगदान देने की आवश्यकता है क्योंकि इसके माध्यम से दुनिया में रोटरी द्वारा किये जाने वाले कार्यों के लिए पैसा आता है।" सरकार के साथ रोटरी की साझेदारी पर, उन्होंने चेताया कि रोटरी को सरकार की जिम्मेदारी को प्रतिस्थापित नहीं करना है। उन्होंने RILM प्रमुख शेखर मेहता कि साक्षरता अभियान के सफल क्रियान्वयन के लिए तारीफ़ की और कहा कि लड़की को पढ़ाना मतलब एक परिवार को पढ़ाना है और गरीबी से बाहर निकलने का पहला कदम है।

अमेरीकी लेखक एडवर्ड हाले के उद्धरण को दोहराते हुए, जिन्होंने कहा था "मैं केवल एक हूँ; परन्तु फिर भी मैं एक हूँ। मैं सब कुछ नहीं कर सकता; परन्तु फिर भी मैं कुछ तो कर सकता हूँ," जर्म ने कहा, "आपके पास आगे बढ़कर वो करने का साहस है जिसकी रोटरी को मानवता की निरंतर सेवा करने के लिए आवश्यकता है।"

ट्रस्टी गुप्ता ने टीआरएफ द्वारा तय किया गए चुनौतीपूर्ण मार्ग को याद किया, जो आर्च क्लमफ की दृता के बिना, सौ बार मर गया होता। अगर ऐसा हुआ होता तो पहले पोलियो टीकाकरण कार्यक्रम के लिए कोई 3एच अनुदान नहीं होता या दुनिया भर में लोगों की पहुँच स्वच्छ पीने योग्य पानी, स्वास्थ्य सुविधाओं एवं शिक्षा तक नहीं होती। "ना ही वह मित्रता होती जिसे हमारे संस्थान ने सीमाओं से परे प्रोत्साहित किया है और ना ही वे शांति निर्माता और विद्वान होते जिन्हें हमने हमारे शांति केन्द्रों में शिक्षित किया है। और बिना रोटरी सदस्यों के समर्थन के, यह

आज 100वीं वर्षगाँठ नहीं मना रही होती। टीआरएफ एक और सदी और हमारे सपनों को जीवित रखने के लिए जीवित रहेगा।"

पोलियो उन्मूलन के पश्चात रोटरी के ध्यान-केन्द्रण पर, गुप्ता ने कहा, "इसे छह ध्यानाकर्षण क्षेत्रों में से एक होना था परन्तु इसकी पूर्ती में शायद तीस वर्ष और अरबों डॉलर के खर्च की चेतावनी के कारण रोटरी जगत एक और कार्यक्रम को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है।"

पीडीजी त्रिलोकनाथ द्वारा उनकी पत्नी की याद में डोनर एडवाइवस्ड फंड्स' के रूप में टीआरएफ को दिए गए रु 5 करोड़ के अनुदान का जिक्र करके स्वामी विवेकानंद के उद्धरण को

टीआरएफ एक और सदी और हमारे सपनों को जीवित रखने के लिए जीवित रहेगा।

टीआरएफ ट्रस्टी सुशिल गुप्ता

दोहराते हुए, गुप्ता ने कहा: "इच्छा से दीजिये क्योंकि, जल्दी या देरी से, आपको सब कुछ देना होगा।" आरआईडी देसाई ने विभिन्न मानवीय परियोजनाओं के लिए रोटरी सदस्यों की सराहना की और कहा, "असंभव कार्य को करने की हिम्मत कीजिये, जरूरतमंद की फिक्र कीजिये और आपके पास जो है उसे साझा कीजिये। एक बेहतर कल के लिए रोटरी एक कभी ना ख़त्म होने वाली यात्रा है, इस सरल कारण के लिए इस सकारात्मकता के साथ चलिए हम अपने काम को करना ज़ारी रखें।"

शिखर सम्मेलन प्रमुख जे बी कामदार ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।■

प्रेम के बक्से

के टी पी राधिका

पुणे में स्थित 128-वर्ष पुराने महात्मा फुले फल और सब्जी मंडी में एक 50-वर्षीय महिला सब्जी विक्रेता अपनी आँसुओं को बहने से नहीं रोक सकी, जब उसे 8 मार्च को अन्तराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर स्टेनलेस-स्टील का एक टिफिन बॉक्स दिया गया। अपनी आँखों से आँसुओं को पोंछते हुए वह कहती हैं, "मैं अनेक दशकों से यहाँ सब्जी बेच रही हूँ और प्रतिदिन छह घंटे से अधिक समय तक काम करती हूँ। हालाँकि दिन में काम के दौरान मैं केवल चाय और बिस्कुट खाकर गुजारा करती हूँ और मुझे उचित प्रकार से दोपहर में भोजन करने का अवसर कभी नहीं मिला। परंतु अब मैं अपने कार्य-स्थल पर दोपहर में भोजन के लिए रोटी और दाल लेकर आती हूँ।" वह लगभग 400 लाभार्थियों में एक हैं, जिन्हें अंतराष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में रो ई मंडल 3131 के महिला रोटरियनों द्वारा लंच बॉक्स प्रदान किया गया।

यहाँ आजीविका चलाने के लिए सैकड़ों म हिलाएँ सब्जी बेचती हैं। वे आस-पास के गाँवों से आती हैं और अपनी आजीविका कमाने के लिए

टिफ़िन बक्से प्रदान करती हुवी महिला रोटरी सदस्य।

प्रति दिन लगभग 50 किलोमीटर की दूरी तय करती हैं। रोटरी मंडल महिला निदेशक गौरी शिकारपुर कहती है "उनसे बात करने पर हमने पाया कि वे दोपहर का भोजन पुराने वस्त्रों में लपेट कर लाती हैं क्योंकि वे एक उचित प्रकार का लंच बॉक्स खरीदने में सक्षम नहीं हैं, जिससे वे अपने भोजन को ताजा रख सके। इसलिए हमने उन्हें एक उचित गुणवत्ता वाला लंच बॉक्स उपहार में देने का निर्णय लिया।" पदमजा देशमुख, DG प्रशांत देशमुख की पत्नी पति और स्थानीय नगरसेवक मंजुश्री खर्देकर और माधुरी सहस्त्रबुद्धे ने लाभार्थियों की पहचान करने में मदद की।

इसी तरह ,रोटरी क्लब खारघर की महिला रोटरीनो ने सड़क विक्रेताओं को छतरियों प्रस्तुत की और रोटरी क्लब निगडी ने भी कूड़ा उठाने वाली महिलाओं को टिफ़िन बॉक्स वितरित किये ■

ई-मतदान की अहमीयत

रशीदा भगत्

दिशा सभा में रो ई के निदेशक मनोज देसाई और RIDE सी भास्कर, दोनों ने ई-मतदान की अहमीयत को समझाने, काफी समय दिया जब कि PRIP के आर रविंद्रन् ने DGEयों से कहा कि चुनाव के दौरान तिकडमबाज़ी या दुराचार को बर्दाश्त नहीं किया जायेगा। दोनों ने कहा कि जब मतपत्र का तरीका अपनाया जाता था लगातार शिकायतें सुनने में आ रही थी और इसलिये ई-मतदान ही उचित हल है।

भास्कर ने कहा, ''ना भूलिये कि स्वतंत्र, न्यायपूर्ण तथा पारदर्शी तरीके में चुनाव का संचालन करना आपका काम है। हमने ई-मतदान इसलिये शुरू किया था क्यों कि जब आपने मतपत्र का तरीका अपनाया तब लगातार रपट और शिकायतें सुनने में आयी। पिछले साल पहली बार, रो ई ने निदेशकों के लिये ई-मतदान शुरू किया और मैंने भी इस ई-मतदान में हिस्सा लिया था। आपने देखा होगा कि यह प्रक्रिया आरोग्यकर है और क्लबों को इसमें कोई परेशानी नहीं थी क्यों कि हमारे अंचल में 2,500 से अधिक क्लबों को निदेशक को चुनने के लिये मतदान करना पडा।

देसाई ने कहा रो ई के नेताओं ने महसूस किया कि इस डिजीटीय दुनिया में आगे बढ़ने का एक रास्ता है ई-मतदान, क्यों कि यह प्रक्रिया किफायती होने के साथ फायदेमंद भी है। लगभग 15 मंडलों ने सर्वसम्मत होकर अपने DGNओं को चुना और यह सराहनीय बात है।

भास्कर ने कहा: मंडलाध्यक्षों से हम यही करने की उम्मीद रखते हैं। आपकी भूमिका यह सुनिश्चित करना है कि आपके मंडल में चुनाव नहीं हो रहा है। यदि आप इसे कर सकते हैं तो 90 प्रतिशत समस्याओं का समाधान मिल जायेगा। लेकिन यदि आपके मंडल में चुनाव लडा जा रहा है तो कृपया स्वतंत्र और न्यायपूर्ण चुनावों को सुनिश्चित करें। चुनावों का संचालन करना सीखने RISAO से संपर्क करें और क्रियाविधि का पालन करें।''

उन्होने कहा कि कुछ DGEगणों ने, जिन्होने ई-मतदान में हिस्सा लिया था, उनसे कुछ आशंकायें व्यक्त की और RID देसाई, जो दिशा सभा के बाद सीधे ईवांस्टन जा रहे थें, इसका समाधान ढूँढने रो ई के बोर्ड तक इस मुद्दे को ले जायेंगे।

दिशा में RIDE भास्कर द्वारा उठाये गये कुछ अहम सवाल

रो ई निदेशक मनोज देसाई ने रोटरी इंटरनैशनल की कार्यनीतिक योजना के बारे में विवरित किया। लेकिन क्लबों में बहुत कम लोग जानते हैं कि असल में इसका क्या मतलब है। इसे सरल संघटकों में बाँटकर, समझाना डीजी का काम है। सबसे अहम संघटक है क्लबों की सहायता करना तथा उसे सशक्त बनाना क्यों कि वें ही मंडल के सबसे अहम संघटक है। क्लबों के बिना, मंडल नहीं हो सकता और मंडलों के बिना रो ई नहीं हो सकता। आप इसे कैसे करेंगे? पहली बात, हमने पाया है कि अनेक क्लबों के पास संवैधानिक उप-कानून नहीं है। लेकिन 2017-18 में प्रत्येक क्लब के पास एक उप-कानून होगा और जिन जिनके पास नहीं हो, हम उसे पाने में उनकी मदद करेंगे। संवैधानिक कानून के निपुणक राजू सुब्रमणियन मेरी मदद कर रहे हैं।

- सशक्त और सक्रिय क्लबों में पर्याप्त संख्या में सदस्य हो। यदि सदस्यता बेहद कम है या क्लब कमजोर है या सिर्फ मतदान के लिये मौजूद हो, तो उसे बंद कर दे। हमें कोई परेशानी नहीं होगी।
- अनोखे स्थानों में PETS का आयोजन किये जाने के बाबत में काफी चर्चा हो चुकी है। हमने अध्यक्षों को यह बतलाने के द्वारा कि उन्हे क्या करना है और क्या नहीं, सभी अंचलों (जोन) के प्रारूप को मानकित कर दिया है; आप इसमें कुछ भी जोड सकते हैं लेकिन कुछ भी नहीं घटायें।
- कुछ मंडल असेंब्लियाँ महज 'वक्तव्य बैठक' बनकर रह गये हैं। हमने फैसला कर लिया है कि अब यें क्लब अधिकारियों के लिये विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम बन जायेंगे। आपकी कार्यसूची में यही सबसे ज्यादा अहम प्रशिक्षण कार्यक्रम होगा। यदि आप क्लबों को सशक्त बनाने तथा उन्हे सबसे ज्यादा सक्रिय बनाने पर संकेंद्रण करना चाहते हैं तो मंडल अधिकारियों को प्रशिक्षित करना जरुरी है।
- कुमराकोम में, हम मंडल कार्यक्रमों की संख्या को घटाने के लिये राजी हुये; हमें और भी कम कार्यक्रमों की जरुरत है, सो सदस्यता और जन छवि को एकसाथ मिला दिया जायेगा; साक्षरता और WinS को साथ-साथ लाया जायेगा जिससे कार्यक्रम 4 से 2 तक घट जायेंगे।
- मंडलाध्यक्ष की आधिकारिक भेंटों को गंभीरता से नहीं लिया जा रहा है। लेकिन मैं उसे गंभीरता

> 15 मंडलों ने सर्वसम्मत होकर अपने DGN ओं को चुना और यह सराहनीय बात है।
>
> रो ई निदेशक **मनोज देसाई**

रो ई निदेशक मनोज देसाई और RIDE सी भास्कर।

अब भी कुछ रोटरी क्लबें पुराने 'लोगो' (चिन्ह) का उपयोग करते हैं। ब्रैंड बनाना बेहद जरुरी है और उसके लिये समरूपता जरुरी है।

RIDE **सी भास्कर**

से लेना चाहता हूँ; उसे पहले के छह महीनों में पूरा कर देना चाहता हूँ क्यों कि तब जाकर आप क्लबों की खामींयों की पहचान कर पायेंगे और उनका समाधान ढूँढ पायेंगे। डीजीओं को चाहिये कि जितना संभव हो उतने क्लबों को भेंट दें और जब यह संभव नहीं हो तो सहायक मंडलाध्यक्षों की सेवाओं का उपयोग करें।

अपने अध्यक्षों से उन भाषाओं में बातचीत करें जिन्हे वें समझ पाते हो और GML को उसी भाषा में जारी करें जिसे वें वरीयता देना चाहते हो, वरना सारी कोशिशें व्यर्थ होकर रह जायेंगी।

- बैठकों के बारे में हमेशा उचित प्रपत्रों में प्रतिपुष्टि मंगवायें: क्या उपस्थित रोटेरियनों ने इसमें कोई उपयोगी बात पायी; क्या बदलाव जरुरी है आदि। प्रतिपुष्टि नहीं मंगवायेंगे तो, आप जान नहीं पायेंगे और सुधार नहीं लाया जा सकेगा।
- रोटरी क्लब सेंट्रल: जुलाई 31 तक, मैं चाहता हूँ कि 100 प्रतिशत क्लबें अपनी आधार सामग्री का अद्यतन कर दें। मैं 100 प्रतिशत अनुपालन की प्रत्याशा करता हूँ; आईये हम रोटरी संसार में ऐसा करने वाला पहला देश बनें।
- मानव सेवा पर संकेंद्रण करें। कुछ क्लबें मन बहलाव क्लबें बन गये हैं। इसे बदलना है और केवल आप ही उन्हे बदलने पर प्रेरित कर सकते हैं।
- आपने ग्लोबल ग्राँटों तथा मंडल ग्राँटों का उपयोग करना सीखा है। वापिस जायें, अपने क्लब के अध्यक्षों तथा पदाधिकारियों को शिक्षित करें।
- सेवा परियोजनाओं पर ध्यान लगायें और सेवा परियोजनायें करने वालों के लिये कुछ निर्दिष्ट पुरस्कार स्थापित करें। हम सेवा करने के लिये जाने जाते थे और हमें समुदाय में उस पहचान को पुन:स्थापित करना होगा। उत्कृष्ट सेवा परियोजनायें करने वाले क्लबों को पुरस्कार प्रदान किया जायें।
- अगले साल से, देश भर किये जाने वाले हमारे अच्छे काम को प्रदर्शित करने हम काफी बडे पैमाने पर डिजीटीय टैक्नोलोजी का उपयोग करने वाले हैं।
- अब भी कुछ रोटरी क्लबें पुराने 'लोगो' (चिन्ह) का उपयोग करते हैं। ब्रैंड बनाना बेहद जरुरी है और उसके लिये समरूपता जरुरी है। आज उत्तऊयों की कीमत केवल रु 10 है; इन्हे क्लबों को दे दें ताकि देश भर में लोगो और मुद्रण सामग्रियाँ समान हो।
- अगले साल आपके मंडल के प्रत्येक क्लब को एक अध्यक्षीय प्रशस्तिपत्र मिलना चाहिये।
- सदस्यता संख्या को कम बतलाना एक बडी समस्या है; जैसे एक क्लब जिसमे 50 सदस्य हो केवल 20 सदस्यों के होने को सूचीत करता हो। एक मंडल ने पहचान पत्र देने के द्वारा इस मुद्दे का हल ढूँढा है। क्या सभी मंडल ऐसा कर सकते हैं?
- मंडल को देय तथा रोटरी पत्रिका को चंदा शुल्क अनिवार्य है। दोनों के लिये अंतिम तारीख 30 सितंबर है। कुछ क्लबें जून में भी मंडल देय को भेजते हैं। यदि 31 दिसंबर तक यह रकम मिल नहीं जाती तो क्लबों को बंद करवाया जा सकता है। जिन क्लबों ने 30 सितंबर तक इस देय का भुगतान नहीं किया हो वें मंडल चुनावों में मतदान करने के लिये योग्य नहीं माने जायेंगे।
- पद त्याग करने के तीन महीनों के भीतर हिसाब पेश कर दिया जाये। मंडल के सभी वित्त संबंधित मामलों के लिये आप ही जिम्मेदार है.. क्लबों को सभी हिसाब भेज दें जिसकी एक प्रति रो ई को भी भेजें।
- PETS में हाजिर होना आदेशात्मक है; सुनिश्चित कर लें कि हर एक अध्यक्ष हाजिर हो रहा है।
- वें ही नेता होते हैं जो दूसरों को सशक्त बना देते हैं, कहते हैं बिल गेटस्... आपके पास बेहद बढिया दल है; उस दल के सदस्यों को प्रशिक्षित करें, सशक्त बनायें और उनका मार्गदर्शन करें ताकि अगले साल के लिये निर्धारित हमारे लक्ष्य को हासिल किया जा सके।

चित्र: रशीदा भगत्

Literacy Awards

Areas	Zone 4	Zone 5	Zone 6A	InnerWheel
Teacher support Number of teachers trained	3131 9,500	3202 710	3250 670	325
E-learning No of centres opened	3051 5,430	3190 3,450	3240 3,033	313
Adult Literacy No of adults trained	3012 12,000	3150 10,250	3291 6,800	314
Child Development No of children brought back to school	3030 1,676	3201 2,748	3262 932	306
Happy Schools No of happy schools	3040 77	3230 158	3250 25	305
Best overall performance in Literacy Mission	3051 and 3060	3190 and 3201	3250	313
Best DLCC	H K Kripalani (D 3051) and PDG Mayur Vyas (D 3060)	V R Ramesh (D 3190)	Dr. B C Das Purkayastha (D 3240)	Sunanda Hulyalkar (D 313)

Pictures by K Vishwanathan

PRIP Rajendra K Saboo presents an award to D 3030 team.

Nobel Laureate Kailash Satyarthi honours D 3060 team.

PRID P T Prabhakar presents an award to PDG Bindu Singh.

District 3230 team receives an award from PRID Y P Das.

The District 3190 team with PRID MK Panduranga Setty.

D 3240 team receives an award from PRID Panduranga Setty.

Inner Wheel members being recognised by RI President John Germ.

दिशा
की खोज में

PRID अशोक महाजन और शेखर मेहता एक जोरदार हंसी हँसते हुए।

RNT के आने वाले कार्यकारी समिति सदस्य (बाएं से) DGE -आर श्रीनिवासन, विवेक कुमार, RIDE सी बास्कर, RID मनोज देसाई, DGE - पी गोपालकृष्णन, अभय गाडगिल और बी एम सिवर्राज।

एक जैसे: PRID वाय पी दास और RID मनोज देसाई एक टाई-टॉक साझा करते हुए।

नीचे: RRFC राजा सीनिवासन और दिशा सेक्रेटरी टी एन सुब्रमण्यम के साथ RID मनोज देसाई।

मलयालम में रोटरी क्लब प्रेसिडेंट मैन्युअल का TRF ट्रस्टी प्रमुख कल्याण बैनर्जी और RIDE सी बास्कर द्वारा, (बायें से) DGE सुरेश मैथ्यू, DGE विनोद कृष्णन कुट्टी, PDG के एस शशि कुमार और दिशा प्रमुख भरत पंड्या की उपस्थिति में लोकार्पण किया गया।

ऊपर: PRID - अशोक महाजन, पी टी प्रभाकर, DGE आशा प्रसन्न कुमार और PDG गुलाम ए वहानवटी।

दाएं: PDG - ललित श्रीमाल, अशोक तांते, IPRIP के आर रवीन्द्रन, PDG - जोइताभाई पटेल, सत्यनारायण लाठी, टी एन सुब्रमण्यम, नरेंद्र कुमार जैन, DGE ज़मीं हुसैन, रोटरी संयोजक अशोक पंजवानी, RIDE सी बास्कर और PDG गुलाम वहानवटी।

बाएं: RID मनोज देसाई के साथ (बाएं से) PDGs आशीष देसाई , रोटरी संयोजक अशोक पंजवानी, DGE रुचिर ए जनि, PDG गण पराग शेठ, के पी नागेश और रोटरी संयोजक विजय जलन।

नीचे: IPRIP के आर रवीन्द्रन के साथ बातचीत में PRID पी टी प्रभाकर, दिशा प्रमुख भरत पंड्या और RIDE सी बास्कर।

चित्र: रशीदा भगत् ; एस कृष्णाप्रतीश द्वारा रूपरेखा

गंगा की सफाई

जयश्री

रोटरी इंडिया Wins समिति ने राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG), जल संसाधन मंत्रालय और नदी विकास एवं गंगा कायाकल्प' के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किये है। इस दो वर्ष के समझौते को Wins के उपाध्यक्ष पी टी प्रभाकर और NMCG के निदेशक जनरल यू पी सिंह द्वारा रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म और स्कूलों में WASH लक्ष्य चुनौती समिति' के अध्यक्ष एवं टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता की उपस्थिति में हस्ताक्षरित किया गया। पीआरआईपी राजेंद्र साबू, जूडी जर्म, यूनिसेफ के मुख्य संचार अधिकारी मारियो मोस्केरा वेस्केज़ और Wins के सदस्य सचिव रमेश अग्रवाल भी उपस्थित थे।

इस समझौते के माध्यम से, रोटरी गंगा किनारे स्थित स्कूलों में सकारात्मक स्वच्छता अभ्यासो को बढ़ावा देने के अभियान चलाकर स्वच्छ गंगा मिशन का समर्थन करेगी। गुप्ता ने कहा, "हमने पहले से ही पूरे देश के 20,000 सरकारी स्कूलों के बच्चों में अच्छी स्वच्छता आदतों एवं व्यव्हार में परिवर्तन लाने की मुहिम शुरू कर दी है, और हम इसे गंगा कायाकल्प विषय से जोंगे। योजना बिहार, झारखण्ड और पश्चिम बंगाल के नादिया जिले के लगभग 500 स्कूलों तक पहुँचकर छात्रों और समुदायों को गंगा के पुनरुद्धार में भाग लेने एवं खुले में शौच और नदियों को घरेलु एवं औद्योगिक अपशिष्ट से दूषित न करने को लेकर संवेदनशील बनाने की है।"

हिमालय पर्यावरण ट्रस्ट, जिसके वह संस्थापक ट्रस्टी है, द्वारा चलाई गई गंगोत्री संरक्षण परियोजना में अपनी सहभागिता, और गोमुख, ग्लेशियर जहाँ से गंगा का उद्गम होता है, एवं हरिद्वार के बीच की गई अनेक यात्राओं को याद करते हुए गुप्ता ने कहा कि प्रथम मानव-प्रदूषण उत्तरकाशी से शुरू होता है।

कचरे के निराकरण के उचित स्रोत ना होने के कारण, कचरा खुले में फेंका जाता है जो तेज बारिश के साथ नदी में बह जाता है। हिमालय से निकलकर आगे बहते हुए, यह अपने जलमार्ग में आने वाले चीनी के कारखानों, मद्यशालाओं, काग़ज़ बनाने के कारखानों और चमड़े के कारखानों का दूषित पानी एवं गंगा के विशाल मैदानों, जो लगभग आधा अरब लोगों का निवास स्थान है, से कृषि के दूषित अपवाहों को भी अपने में मिला लेती है। उन्होंने कहा, "अपने स्रोत से 1,500 मील दूर बंगाल की खाड़ी में गिरने से पहले यह इलाहबाद, वाराणसी, पटना, कलकत्ता और सौ छोटे नगरों, शहरों एवं गाँवों से गुजरती है - सभी जगह सफाई व्यवस्था का अभाव है। हम भावुकतावश एवं आध्यात्मिक रूप से पूरे उत्साह के

WinS उपाध्यक्ष पी टी प्रभाकर (चरम दाएं) और NMCG के निदेशक यू पी सिंह,रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म, WinS टारगेट चैलेंज कमेटी के अध्यक्ष सुशील गुप्ता और सचिव रमेश अग्रवाल की उपस्थिति में MoU पर हस्ताक्षर करने के बाद

जुडी जर्म, रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म, PRIP राजेंद्र साबू, और WinS अध्यक्ष सुशिल गुप्ता।

साथ इस कार्यक्रम को पूर्ण करने के लिए कर्तव्यबद्ध है क्योंकि गंगा केवल एक साधारण नदी नहीं है, यह भारत की जीवनरेखा है।"

त्रिचुर भाइयों - श्रीकृष्ण मोहन और रामकृष्ण मोहन - द्वारा गाये गए *नमामि गंगे* गान के श्रव्य-दृश्य प्रस्तुतीकरण ने उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों को नदी के महत्व का एक संक्षिप्त विवरण दिया।

हर आठवें क्षण, कोई बच्चा उचित सफाई व्यवस्था एवं स्वच्छ पानी की कमी के कारण मर जाता है। आज हम यहाँ है क्योंकि रोटरी बच्चों के लिए स्वस्थ एवं स्वच्छ वातावरण की अपनी गहन प्रतिबद्धता को साझा करती है, प्रेसिडेंट जर्म ने कहा, जिन्होंने तीन विद्यालयों का दौरा किया जहाँ Wins परियोजना लागू की गयी। Wins कार्यक्रम, जिसे पाँच देशों में प्रायोगिक परियोजना के तौर पर चलाया जा रहा है, की शुरुआत करने के लिए ट्रस्टी गुप्ता की प्रशंसा करते हुए, उन्होंने कहा, "जूडी और मैं इन स्कूलों में स्थापित किये गए हाथों की धुलाई के स्टेशनो से प्रभावित हुए और मुझे विशेष रूप से वह धुन पसंद आयी जो बच्चों ने हाथों की धुलाई करते वक्त गायी। एक TEAM - एक साथ सब अधिक हासिल करते है - के रूप में, मुझे विश्वास है कि हम और अधिक कर सकते है। केवल नदी की ही सफाई ना करके, हम ऐसे बहुत से बच्चों को स्वच्छ, स्वस्थ पानी प्रदान कर सकते है जिन्हें यह अभी वह नहीं मिल रहा है।" उन्होंने कहा कि वह इस धुन को रोई मंडल सदस्यों को सुनायेंगे।

पीआरआईपी साबू ने कहा, "गंगा हमारी अमृत-धारा है। इसके किनारे पर कई छोटे बच्चे रह रहे है और उनका जीवन भी नदी के भयानक दूषित होने से दाँव पर लगा है। मेरे लिए यह सौभाग्य का पल है कि हम इस समस्या से निपटने के लिए इतना महत्वपूर्ण कदम उठा रहे है।"

प्रभाकर ने ध्यान दिया कि मार्च का महीना रोटरी के जल एवं स्वच्छता माह के रूप में नामित है, "यह एकदम उचित है कि हम स्वच्छ गंगा मिशन के लिए हमारे समर्थन की शुरुआत आज कर रहे है। भारत सरकार के साथ पोलियो उन्मूलन के लिए की गई हमारी प्रथम साझेदारी के फलस्वरूप भारत वर्ष 2014 में पोलियो-मुक्त बना। उसी वर्ष दिसम्बर में हमने सरकार के साथ *स्वच्छ भारत* के अंतर्गत 20,000 स्कूलों में स्वच्छ पानी एवं सफाई व्यवस्था उपलब्ध कराने के लिए एक समझौता किया। अब तक हमने 9,000 स्कूलों में काम पूर्ण कर लिया है। मुझे विश्वास है कि NMCG के उद्देश्य की पूर्ती के लिए Wins कार्यक्रम का विस्तार करके, हम गंगा किनारे रहने वाले समुदायों में सकारात्मक व्यावहारिक परिवर्तन को उत्पन्न कर सकते है, और नदी के प्रदूषण को कम करने में सहायता कर सकते है।"

सिंह ने कहा कि यह सहभागिता रोटरी की ताकत का उपयोग कर प्रभावशाली ढंग से लोगों तक पहुँचने एवं उन तक सन्देश पहुँचाने में मदद करेगी। "मैं रोटरी के साथ 30 वर्षों से भी अधिक समय से काम कर रहा हूँ। रोटरी ने अपनी छाप छोड़ दी है और उसकी उपस्थिति को पूरे देश में महसूस किया जा सकता है। हमारे मिशन के बारे में लोगों को शिक्षित करना कोई छोटा काम नहीं है और यह सही दिशा की ओर एक कदम है। परन्तु यह एक विशाल प्रयास है क्योंकि नदी 11 राज्यों से होकर गुजरती है। औद्योगिक प्रदूषण से निपटने के अलावा, हमें लोगो की मानसिकता पर भी काम करना है। पुरानी-अन्तर्निहित पारंपरिक मान्यताओं को बदलना मुश्किल काम है।"

वेस्केज़ ने इस मिशन के लिए यूनिसेफ के समर्थन का आश्वासन देने के साथ गुप्ता को Wins कार्यक्रम के सफल निष्पादन के लिए बधाई दी।

हम भावुकतावश एवं आध्यात्मिक रूप से पूरे उत्साह के साथ इस कार्यक्रम को पूर्ण करने के लिए कर्तव्यबद्ध है क्योंकि गंगा केवल एक साधारण नदी नहीं है, यह भारत की जीवनरेखा है।

WinS अध्यक्ष एवं टीआरएफ ट्रस्टी सुशील गुप्ता

चित्र: जयश्री

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

RISAO में टीआरएफ शताब्दी वर्ष का उत्सव

टीम रोटरी न्यूज़

एक परियोजना स्थल पर क्षेत्रीय प्रमुख राजीव रंजन (बीच में) के साथ RISAO की टीम।

रोटरी संस्थान के शताब्दी वर्ष का उत्सव मनाने के लिए, RISAO के कर्मचारियों ने रोटरी सदस्यों को और अधिक समर्थन देने के अतिरिक्त, एकत्रित होकर विभिन्न सेवा परियोजनाओं में सम्मिलित होने का संकल्प लिया।

दिल्ली में रोटरी ब्लड बैंक के सहयोग से एक रक्त दान शिविर का आयोजन किया गया। स्टाफ के तेरह कर्मचारियों ने रक्त दान किया और शिविर में 30 यूनिट से भी अधिक रक्त इकट्ठा किया गया। सितंबर, अक्टूबर और नवंबर 2016 में, रोटरी क्लब दिल्ली ईस्ट, रोटरी क्लब दिल्ली फेमिना, रोटरी क्लब गुगाँव, रोटरी क्लब दिल्ली सेंट्रल और रोटरी क्लब साउथ ईस्ट द्वारा आयोजित रक्त दान शिविरों में भी स्टाफ के कर्मचारियों ने उनका समर्थन प्रदान किया था।

WASH परियोजना

18 स्टाफ कर्मचारियों के एक दल ने पश्चिम दिल्ली में चौखंडी स्थित नगर निगम प्रतिभा स्कूल को गोद लिया ताकि बच्चों को हाथ धोने के लिए एक नल-युक्त हाथों की धुलाई का स्थान एवं तरल साबुन प्रदान किया जा सके और विद्यार्थियों को अच्छी स्वच्छता आदतों के प्रति संवेदनशील बनाया जा सके। इस परियोजना के लिए प्रत्येक 18 कर्मचारियों ने रु 3,000 का अनुदान दिया जिसका लक्ष्य विद्यार्थियों के भीतर स्वच्छता आदतों के प्रति व्यवहार परिवर्तन करने का है, जो कि बीमारियों से बचाएगी और उपस्थिति एवं अकादमिक प्रदर्शन दोनों को बेहतर बनाएगी। स्कूल की प्रधानाध्यापिका सुषमा शर्मा की उपस्थिति में, दक्षिण एशिया कार्यालय के प्रमुख राजीव रंजन ने हाथों की धुलाई स्टेशन का उद्घाटन किया। ये स्टाफ के कर्मचारी समय-समय पर स्कूल जाने के लिए समर्पित है ताकि वे परियोजना का निरीक्षण कर सके और बाद में अभिभावकों की प्रतिक्रिया को जान सके। टीआरएफ शताब्दी वर्ष के दौरान रक्त दान शिविरों में भी वे स्वेच्छा से उनकी सेवाएं प्रदान करते रहेंगे।

जतिंदर सिंह, क्लब और ज़िला सहायता दल के प्रमुख ने, रोटरी की सार्वजनिक छवि में वृद्धि करने के प्रयास में, उनके कपों पर रोटरी एवं टीआरएफ के प्रतीक चिन्ह लगाकर 21.1 कि.मी. की दिल्ली हाफ मैराथन पूर्ण की।■

जतिंदर सिंह, प्रमुख - क्लब एवं मंडल समर्थन, दिल्ली हाफ मैराथन को पूरा करने के बाद।

अंधकार से प्रकाश की ओर

के टी पी राधिका

सूर्यास्त होते ही, विगत 50 वर्षों से हमारा घर अंधकार सागर में पूर्ण रूप से डूब जाया करता था। पिछले 50 वर्ष में ऐसा पेलही बार हुवा है जब रात्रि में हमें प्रकाश के दर्शन हुए हैं," रामानन कहता हैं, जिसकी आयु 16 वर्ष हैं और जो कोडाईकनाल पहाड़ियों के निकट स्थित एक आदिवासी ग्राम वल्लनकुलम का रहने वाला हैं। इस ग्राम के 12 घरों में सौर उर्जा की स्थापना रोटरी क्लब कोडाईकनाल, मंडल 3000 द्वारा की गयी है। आगे रामानन अपनी प्रसन्नता को व्यक्त करते हुए कहता है कि "अब हम अपने घरों में अपना मोबाइल चार्ज कर सकते है।"

क्लब ने प्रत्येक घर में दो LED लाइट्स की स्थापना पर कुल रू 3.24 लाख का निवेश किया हैं, जो लगातार 12 घंटों तक प्रकाश दे सकता हैं और मोबाइल फोन को चार्ज किया जा सके। सौर लैंप की स्थापना करने वाले कंपनी द्वारा पाँच वर्षों ताकि देखभाल की सुविधा प्रदान की जाएगी।

वल्लनकुलम जनजातीय ग्राम उचित प्रकार से विकसित पन्नीकदु ग्राम से लगभग 15 कि मी की दूरी पर स्थित है और यहाँ के लोग दैनिक श्रमिक है जो निकट के कॉफ़ी बागानों में काम करते हैं।

"यह हमारे अहम परियोजनाओं में से एक हैं। यह रामानन जैसे बच्चों के लिए बहुत मददगार सिद्ध होगा जो पनानीकुडु में स्थित स्कूल में पढ़ने जाते है," क्लब के अध्यक्ष राजकुमार रमन कहते हैं। उन्होंने आगे कहा कि क्लब इस प्रकार का अध्ययन अन्य आदिवासी समुदायों पर करेगा और उनकी दीर्घकालिक जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करेगा जबकि उनकी आधारभूत जरूरतों को प्राथमिकता के आधार पर पूरा किया जाएगा। ■

भविष्य के विजेताओं का पोषण करना

विजेताओं के साथ गवर्न के विशेष सहायक वीरेंद्र विज और रोटरी क्लब बॉम्बे मिड सिटी के रोटेरियन।

यह एक शानदार कार्यक्रम था। खिलाडियों, अभिभावकों और दर्शकों ने इसका सर्वश्रेष्ठ का आनंद उठाया," रोटरी क्लब बॉम्बे मिडसिटी, मंडल 3141 के अध्यक्ष रोटेरियन भरत पारेख, रोटरी कप के उद्घाटन संस्करण का उल्लेख करते हुए कहते हैं, जो अंडर -14 टेनिस टूर्नामेंट का एक ऑल इंडिया रैंकिंग चैंपियनशिप सीरीज़ है जिसका आयोजन क्लब द्वारा अखिल भारतीय टेनिस संघ और महाराष्ट्र राज्य लॉन टेनिस संघ के सहयोग से किया गया था। इस कार्यक्रम में महाराष्ट्र और गुजरात के 100 से अधिक खिलाडिय़ों ने भाग लिया।

अब क्लब इस टूर्नामेंट का आयोजन प्रतिवर्ष करने की योजना बना रही हैं। मंडल के गवर्नर गोपाल राय मंधानिया कहते है कि, "इस टूर्नामेंट के आयोजन के पीछे युवा प्रतिभाओं को तैयार और समर्थन प्रदान करना और उन्हें अपनी क्षमता प्रदर्शित करने के लिए एक मंच प्रदान करना है ताकि वे भविष्य के सितारे बन सके।"

पारेख आगे कहते हैं, "टेनिस एक शानदार खेल हैं। हमें इसे रोटरी के अंदर प्रोत्साहित करने के लिए इसे अपना मुख्य कार्यक्रम बनाना चाहते हैं। आगामी वर्षों में हम अंडर 16 के लिए भी टूर्नामेंट का आयोजन करेंगे।"

इसके साथ ही क्लब रोटरियनों,रोट्रैक्टर्स और उनके परिजनों के लिए एक 'रोटरी फेलोशिप टेनिस टूर्नामेंट' का भी आयोजन किया था। ■

रो ई अध्यक्ष की भारत के राष्ट्रपति से भेंट

टीम रोटरी न्यूज़

फरवरी में, रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म और उनकी पत्नी जूडी जर्म ने पीआरआईपी राजेंद्र साबू और टीआरएफ ट्रस्टी एवं WinS वैश्विक प्रमुख सुशील गुप्ता के साथ, नई दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन में भारत के राष्ट्रपति प्रणब मुख़र्जी से भेंट की।

इस औपचारिक मुलाकात के दौरान, अध्यक्ष जर्म ने राष्ट्रपति मुख़र्जी को एक क्रिस्टल का स्मृति-चिन्ह और एक चांदी का फलक प्रस्तुत किया, भारत को पोलियो मुक्त बनाने में उनके मार्गदर्शन एवं कार्य का सम्मान करने के लिए। अध्यक्ष जर्म ने उन्हें भारत में रोटरी की विभिन्न गतिविधियों का एवं दुनिया से पोलियो का उन्मूलन करने के लिए रोटरी अंतर्राष्ट्रीय द्वारा की गयी प्रगति का भी संक्षिप्त विवरण दिया।

बाएं से : DG एन सुब्रमनियन, TRF ट्रस्टी सुशिल गुप्ता, PRIP राजेंद्र के साबू, रो ई अध्यक्ष जॉन जर्म, जुडी जर्म और DG शर्त जैन, भारत के राष्ट्रपति प्रणब मुखर्जी (बीच में) के साथ राष्ट्रपति भवन में।

राष्ट्रपति मुख़र्जी भारत में रोटरी के कार्यों को जानकर प्रसन्न थे और उन्होंने सामाजिक क्षेत्र में इसके प्रयासों की प्रशंसा की। उन्होंने मेहमानों से आज़ादी के बाद से भारत द्वारा की गयी प्रगति एवं विकास, विशेषरूप से इसकी लोकतान्त्रिक प्रक्रिया एवं व्यवस्था को मजबूत करने के क्षेत्र में, के बारे में भी चर्चा की। डीजी शरत जैन और डॉ एल सुब्रमण्यम वरिष्ठ रोटरी नेतृत्वकर्ताओं के साथ राष्ट्रपति भवन तक गए।

सम्मेलन

क्षेत्र भ्रमण

अटलांटा अपने खेल के समृद्ध इतिहास को गले लगाती है, और जब आप दिनांक 10 से 14 जून तक रोटरी इंटरनेशनल सम्मेलन में भाग लेने के लिए वहाँ होंगे, तो आप कदाचित स्थानीय खेल स्थलों में से कुछ का भ्रमण करने की योजना बना सकते है।

इसके बावजूद कि आप मेजबान संगठन समिति द्वारा आयोजित बेसबॉल खेल के विशेष कार्यक्रम में भाग नहीं लेते है, जिसका आयोजन हेंक आरोन द्वारा किया जा रहा है, आप ब्रवेस के पुराने और नए घरों का भ्रमण तो कर ही सकते है। मूर्तिकार और रोटेरियन रॉस रोस्सिन के हॉल ऑफ़ फ़ामेर हारून की प्रतिष्ठित प्रतिमा टर्नर फील्ड के बाहर स्थित है, जहाँ ब्रवेस ने इस वर्ष तक खेला था। टीम के इस नए सन ट्रस्ट पार्क में स्थानांतरित होने के साथ ही, रोटरियनों ने नए स्टेडियम के लिए एरोन की दूसरी प्रतिमा तैयार कर लिया।

जॉर्जियाई अपने कॉलेज और फुटबॉल से प्यार करते हैं, और अटलांटा जॉर्जिया देश का विश्वविद्यालय है। (उनका प्यार उगा, एक गर्वान्वित 10वीं-पीढ़ी के साथ बुलडॉग शुभंकर तक फैला हुआ है)। और कॉलेज फुटबॉल में, कोअच विन्से डूली, जो अनेकों वर्षों से एक मानद रोटेरियन रहे है - वास्तव में एक जीवंत किंवदंती है। वह 25 वर्षों तक UGA के हेड कोच रहे थे। उनके नेतृत्व में, स्कूल का जीतने का 70 प्रतिशत का रिकॉर्ड है।

यदि फुटबॉल का उल्लेख करने मात्र से आपका रक्त प्रवाह तीव्र हो जाता है, तो आप निश्चित ही कॉलेज फुटबॉल हॉल ऑफ़ फेम का भ्रमण करना चाहेंगे, जहाँ अनेक एकड़ में प्रदर्शनी स्थित है और यहाँ तक कि वहाँ 45-यार्ड एक इंडोर फील्ड भी है। मेजबान समिति वहाँ दिनांक 12 जून को एक विशेष शाम की मेजबानी कर रही है, परंतु यदि आप किसी कारणवश वहाँ नहीं जा सके, तो हॉल सम्मेलन स्थान से कुछ ही दूरी पर स्थित है।

-हेंक सार्टिन

कृपया riconvention.org **पर विजिट करें।**

Join the Traditional
South Asian Reception
At
RI Convention Atlanta, Georgia USA

CELEBRATING 100 YEARS
THE ROTARY FOUNDATION
ATLANTA 2017
ROTARY INTERNATIONAL CONVENTION

My Dear Friends,

I would like to convey my sincere thanks to you for registering for the Atlanta Convention. The number has gone up several times more than what was expected. It is praiseworthy because each Convention showcases great internationality and excellent Rotary speakers. It is awe-inspiring always.

The South Asia Reception will be held on June 10 from 6 pm to 9 pm at the official venue, Hotel OMNI CNN, adjoining the convention center. Chairman Ranjan Dhingra and co-chairs Dr John Daniel and Dr Vinay Kumar are working hard to live up to the raised expectations after the grand success of DDZI and the Chennai Literacy Summit this year. I am pretty sure those who attended the South Asia Reception at Seoul would not like to miss the opportunity. It is time to connect again and celebrate the Centennial Year.

I have received confirmation from RI President John Germ and Lady Judy, Trustee Chair Kalyan Banerjee and Binotaben, RI President-elect Ian Riseley and Lady Juliet, and other dignitaries including the Board Members and Trustees.

I request you to register early as the capacity of the hall is just 450 and we do not want to disappoint anyone at the last moment.

We have chosen the evening before the Convention so that everyone can unwind and be ready for the big event the next day.

With best wishes,

Dr Manoj Desai - RI Director (2015–17)
Dr Sharmishtha Desai

PDG Ranjan Dhingra
Chairman
South Asia Reception
r.dhingra@laraon.com | 091-9810052200

VENUE
OMNI HOTELS & RESORTS
Grand Ball Room
Atlanta | CNN Center
100 CNN Center, Atlanta, GA 30303
PHONE: (404) 6590000

Registration Fees:
INR 5,500 per person/US $ 80
Payment Details:
Ranjan Dhingra, Yes Bank, Green Park, New Delhi
A/c. No. 012790700000893.
IFSC Code: YESB0000055

IRYLA में वैश्विक नागरिकों का निर्माण

वी मुथुकुमारण

रोई मंडल 3131 ने पुणे-मुंबई राजमार्ग पर पनवेल में तीन-दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय RYLA की मेजबानी की। DG प्रशांत देशमुख के सपनों की इस परियोजना की संयुक्त मेजबानी रोटरी क्लब पुणे ईस्ट और पनवेल द्वारा युवा, योग्य नेताओं को बेहतर बनाने, सद्भावना और समझदारी को प्रोत्साहित करने और युवाओं को अपनी क्षमता को जानने-समझने के उद्देश्य से की गई थी। इस कार्यक्रम में 30 देशों अफ्रीकी देशों, अफगानिस्तान, ब्राजील, बांग्लादेश, इराक, यमन, श्रीलंका, मॉरीशस, सऊदी अरब और अमेरिका और फ्रांस से भाग लेने के लिए 232 प्रतिभागी आए थे। इसके साथ ही पुणे और रायगढ़ के रोट्रैक्टर्स ने मिलकर एक विशाल दल का गठन किया।

एक उज्जवल कैरियर को आकार देना

''इस कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण पाठ्क्रम के माध्यम से प्रतिभागियों को अभिनव कौशल प्रदान करना था ताकि छात्रों के मध्य ध्यान देने योग्य नेतृत्व कौशल को प्रस्फुटित किया जा सके। और यहाँ सीखा गया सबक इन छात्रों के भावी कैरियर को उपयोगी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा,'' देशमुख जी कहते हैं। DGN शैलेश पालेकर, IRYLA के संयोजक मंजू फड्के, युवा निदेशक शीतल शाह और DRR अर्जुन देव ने इस समारोह में योगदान दिया।

मंडल सचिव पंकज शाह कहते है कि कॉर्पोरेट जगत के वक्ताओं और रोटरी ने युवाओं को प्रेरित किया। एक सुगम पूर्वाभ्यास सत्र ने छात्रों को एक-दूसरे के साथ जुड़ने और वर्तमान सामाजिक मुद्दों पर अपने विचारों को साझा करने में सक्षम बनाया। कार्यक्रम के 2रें दिन, सार्वजानिक संभाषण, खुश विचारों की शक्ति, प्रभावी संचार आदि विषयों पर विख्यात व्यक्तियों द्वारा संचालित चार समांतर सत्रों का आयोजन किया गया। PDG मोहन पालेशा ने रोटरी जगत का साक्षात्कार युवा प्रतिभागियों से करवाया।

युवाओं के शिविर को शाबाशी देते हुए, विदेशी छात्रों ने नेतृत्व कौशल के नए संकल्पनाओं और मॉड्यूल को सीखने पर अपनी खुशी जाहिर की। नाइजीरिया से आए हुए रशीदह आदीसा ने कहा, "यहाँ मैंने एक बेहतर नेता बनने का कौशल सीखा हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मैं स्वयं मेहनत करता हूँ।" अफगानिस्तान से आए हुए रोहिल्लाह हसानी के लिए, यह उसके द्वारा भाग लिए गए अभी तक के 'सर्वश्रेष्ठ कार्यशालाओं' में से सर्वश्रेष्ठ रहा है। उन्होंने कहा, "सत्र में पढ़ाए गए अवधारणाओं को अभ्यास लाने के लिए मैं कडी मेहनत करूँगा। ''सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि इस RYLA ने मुझे मानवता की सेवा के महत्तव को सिखलाया," उसने कहा।

पनवेल में रो ई 3131 द्वारा पहली बार आयोजितअंतरराष्ट्रीय रील में विदेशी छात्रों का एक हिस्सा।

एल गुनाशेकरण द्वारा रूपरेखा

रोटरी क्लब शिमला ने जेल का रूपांतरण किया

जयश्री

दाएं से : *क्लब अध्यक्ष मनु अग्गरवाल, जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट ईशा ठाकुर, मुख्य कल्याण अधिकारी (जेल) भानु प्रकाश, जेल के महानिदेशक सोमेश गोयल,कलाकार घनश्याम और क्लब के कोषाध्यक्ष कुलदीप बुटेल जेल में गणेश के चित्र के साथ।*

रोटरी क्लब शिमला,मंडल 3080, के अध्यक्ष मनु अग्रवाल ने कहा,"आपको अब हमारे शहर की जेल का दौरा करना चाहिए। हमने इसे रंगीन एवं सौन्दर्य की दृष्टि से खूबसूरत बनाया है।" शिमला में कायेठू जेल की कोठरियों और बैरको को कलाकार घनश्याम के माध्यम से उनके दल द्वारा आयोजित जीवित चित्रकारी द्वारा रूपांतरित किया जा चुका है। यह विचार जेल के प्रमुख कल्याण अधिकारी भानू प्रकाश द्वारा तब प्रस्तुत किया गया था जब क्लब उनके पास उसकी एक सेवा परियोजना लेकर पहुँचा था। इस रचनात्मक कार्य में कैदी भी शामिल थे, जिसमें घनश्याम ने उन्हें चित्रकारी करना एवं रंगों को मिश्रित करना सिखाया।

कैदियों ने उन रंगों का स्वागत किया जिन्होंने अब पूर्ण रूप से सफ़ेद दीवारों की नीरसता को प्रतिस्थापित कर दिया है। अग्रवाल ने कहा, "विचार कैदियों में एक सकारात्मत मानसिकता को सक्रिय करने का था। हर एक चित्र एक आशावादी सन्देश देता है - पक्षियों की उड़ान स्वतंत्रता को दर्शाती है, सूर्योदय एक नयी शुरुआत को वर्णित करता है, इस प्रकार से और भी। हम उन्हें यह जताना चाहते थे कि हमेशा एक नयी शुरुआत होती है, एक पूरी नयी ज़िन्दगी बाहर उनका इंतज़ार कर रही है।"

जेलों के महानिदेशक सोमेश गोयल ने जेल के उनके दौरे के दौरान उसके नए स्वरूप की प्रशंसा की।

क्लब ने कैदियों के लिए एक आयुर्वेदिक शिविर की योजना भी बनाई है और यह 300 कैदियों के साथ शिमला के निकट कांदा जेल में एक रोटरी-सिंगर व्यावसायिक केंद्र की स्थापना भी करेगा। "हम कढ़ाई और सिलाई में कैदियों को कुशल बनाने का प्रशिक्षण देंगे और उन्हें आजीविका का अवसर प्रदान करेंगे।" शहर में बने गरम कपों का बहुत बड़ा बाज़ार है। उन्होंने आगे कहा, रोटरी सदस्य जेल परिसर में वृक्षारोपण गतिविधियों में भी व्यस्त है।

स्कूली बच्चों के लिए नियमित चिकित्सीय शिविर, अनाथालयों की सहायता एवं निःशक्त बच्चों के लिए एक स्कूल, सामाजिक मुद्दों जैसे कन्या भ्रूण-हत्या, निरक्षरता एवं महिला सशक्तिकरण पर प्रकाश डालते हुए नुक्कड़ नाटकों का आयोजन, 46 वर्षीय पुराने क्लब की कुछ नियमित परियोजनाएं है।■

Cost Rs 500
(including Speed post charges)

Get an extra copy of Dubai Institute Directory

The DDZI Directories have been despatched by Speed Post to all RI officers.

Those desiring extra copies can send the cheques to

Rotary News Trust
Dugar Towers, 3rd Floor
34 Marshalls Road, Egmore
Chennai 600008

भारतीय कपड़ों के साथ रोमांस

सबिता राधाकृष्ण

इस अंक के साथ हम भारतीय कपड़ों की संपन्न विविधता एवं विरासत पर लेखों की श्रृंखला की शुरुआत करते है।

हाल ही में मुझे वेलिंगटन के ड्यूक चार्ल्स वेलेज़ली और डचेस एंटोनिया को अपने साथ सिल्क के शहर कांचीपुरम में कपड़ों का दौरा करवाने का गौरव प्राप्त हुआ। जितना हर्ष मुझे समझाने में आ रहा था, उतना ही हर्ष उन्हें देखने में आ रहा था, कैसे एक करघा दिखता है, बाने में से ताना को अलग करना, छोटे गाँव की सड़कों पर रंग-बिरंगे धागों को एंठने का एक सामान्य दृश्य देखना, और बुनकरों के घरों का दौरा करना, जहाँ प्रत्यके विशाल करघा केंद्रबिंदु है और गृहस्थी का पूरा जीवन उसके चारों ओर घूमता है।

अचानाक से प्रख्यात व्यक्तियों की बारिश होने लगी! मैंने लार्ड रिकेट्स (फ्रांस में ब्रिटेन के पूर्व राजदूत) और लेडी सुज़ैन की मेज़बानी की, और उन्हें हमारा घर पसंद आया, मेरे कपड़ों के संग्रह को छूकर बहती हुई शीतल हवा भोजन कक्ष को ठंडा कर रही थी। उन्होंने खाने का भी आनंद लिया और उन्होंने उत्सुकता के साथ उठती हुई छोटी, सुनहरे भूरे रंग की एवं मुलायम कुली पन्नियारम को, उत्तपम को और कड़ी को देखा, और इन्हें पकाने सीखने की कोशिश की!

मेरे पॉवर पॉइंट प्रेजेंटेशन में विभिन्न राज्यों के कपड़ों की स्लाइडें देखकर वे सम्मोहित हुए। उन्होंने अत्यंत दिली एवं मित्रतापूर्ण लोगों की तरह मुलाकात की और उनका आगमन एक यादगार मुलाकात थी। मैंने *कोरावी* बुनाई के बारे में, उसमें लगने वाली निपुणता और कैसे आज तक बुनाई की कला एक मौखिक परंपरा है जो पिता द्वारा बेटे को दी जाती है, समझाने का प्रयास किया।

इन मुलाकातों और उनसे जुड़े हुए अभ्यासों ने भारत के कपड़े के समृद्ध इतिहास के साथ मेरे साहचर्य की अद्भुत यादों को ताज़ा कर दिया।

कितनी महत्वपूर्ण खोज थी वह, जब हरप्पन की खुदाई के दौरान खुरदुरे, मजीठ से रंगे हुए कपड़े का एक टुकड़ा संयोग से मिला!

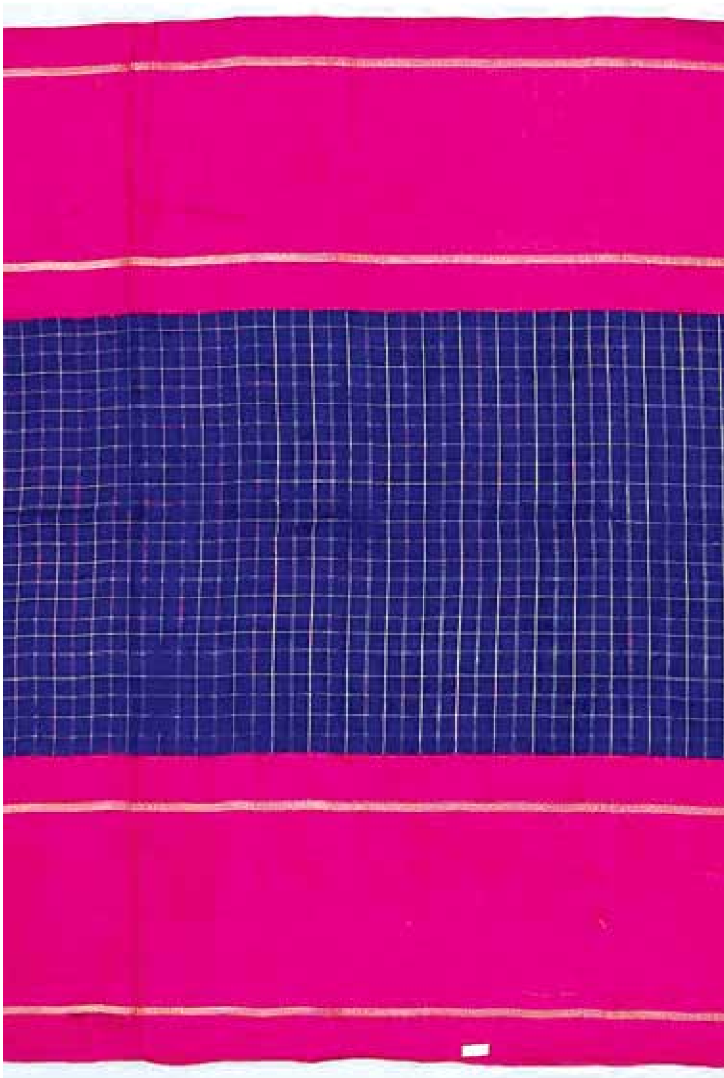

भारत में खेती के बाद कपड़ा उद्योग ही दूसरे स्थान पर आता है और भारत में कपड़े की बुनाई का इतिहास ईसा से 3,000 वर्ष पूर्व का है जब मोहेंजोडरो से सिन्धु घाटी सभ्यता को खोदकर निकाला गया। कितनी महत्वपूर्ण खोज थी वह, जब हरप्पन की खुदाई के दौरान खुरदुरे, मजीठ से रंगे हुए कपड़े का एक टुकड़ा संयोग से मिला! कपड़े के टुक्हे एक चांदी के बर्तन के चारों ओर लिपटे मिले, बर्तन में भरे हुए धातु के नमक के कारण सुरक्षित। तथ्य, कि कपड़े को लाल मजीठ से रंगा गया था, प्राचीन भारत में रंगाई का ज्ञान होने का सूचक है।

प्राचीन सिंध के रेगिस्तानों में टेराकोटा से निर्मित धुरी वाले चक्कर और एक कांसे की सुई मिली। इससे यह तथ्य प्रमाणित हुआ कि सिन्धु घाटी में रहने वाले प्रारंभिक निवासी ना केवल कातना एवं बुनना जानते थे, बल्कि मजीठे का खुरदुरा टुकड़ा इस बात की ओर इशारा करता है कि वह उनके द्वारा बुने गए कपे को रंगना भी जानते थे। पौधों से मिलने वाली औषधियों के और खनिज पदार्थो के

भारत में खेती के बाद कपड़ा उद्योग ही दूसरे स्थान पर आता है और भारत में कपड़े की बुनाई का इतिहास ईसा से 3,000 वर्ष पूर्व का है।

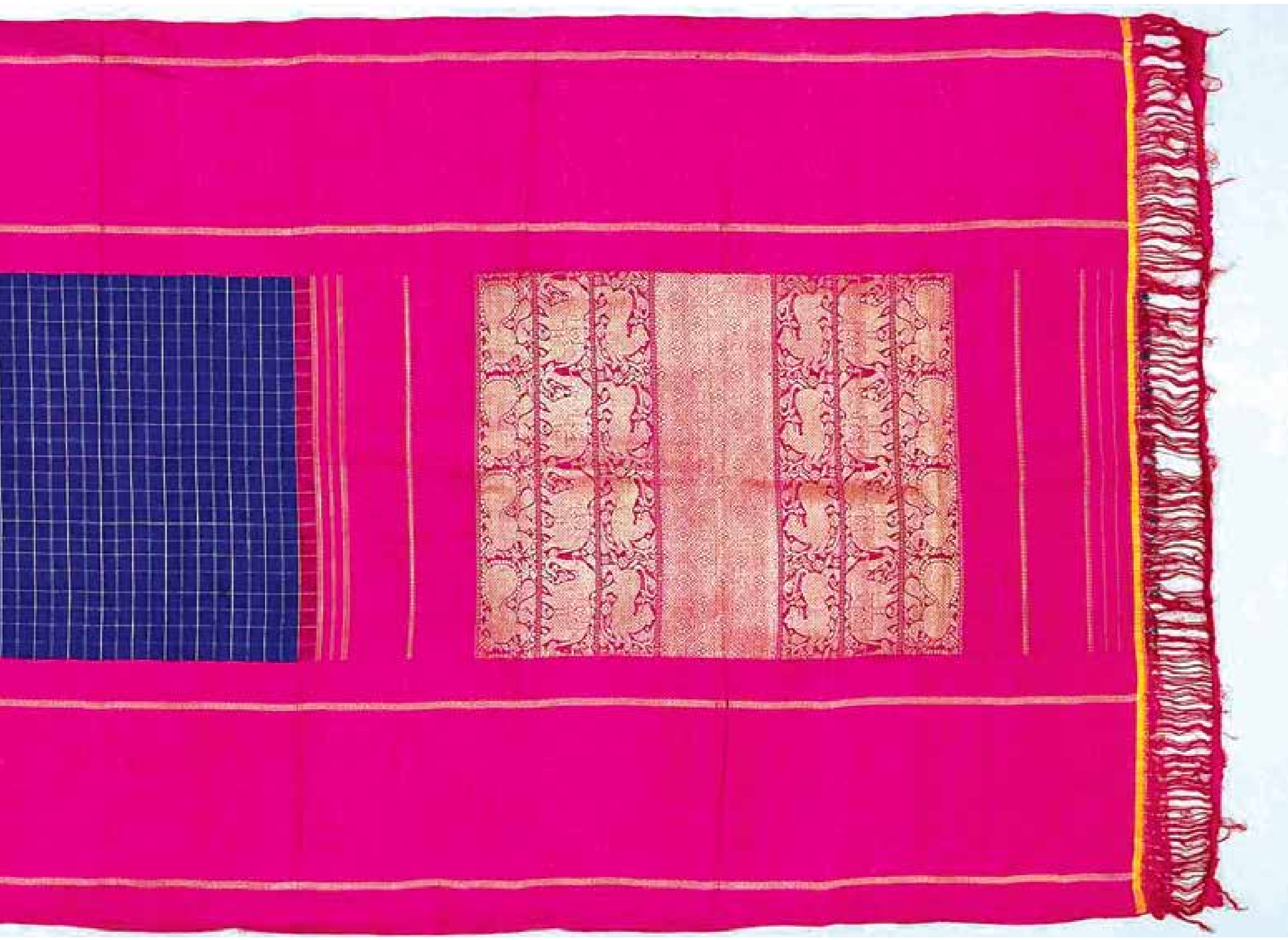

कांचीपुरम में एक करघा बुनकर।

उप-उत्पादों ने भारत के कच्चे रंगों की रंग पट्टिका का निर्माण किया जो विविध प्रकार के रंगे हुए स्वदेशी निर्मित कपड़ो के लिए आवश्यक थी, उनके फीके रंग में शोभायमान। कपे की दुनिया को समृद्ध बनाने के लिए चमकीले केमिकल रंगों के आने से पूर्व केवल यही प्राकृतिक रंग जाने जाते थे, जिन्हें पेड़ों की छाल, पत्तियों एवं प्रकृति से प्राप्त किया जाता था।

कपड़ा बुनने की अद्भुत विविधता प्रत्येक राज्य के उसके स्वयं के कपड़े के कोष से होकर गुजरती है। हथकरघा बुनाई और करघे के संगीत को रचने वाले बुनकरों को भारत के सांस्कृतिक इतिहास में एक प्रतिष्ठित स्थान ग्रहण करना चाहिए। दुर्भाग्यवश, हम अपने विरासत में मिले कौशलों के महत्व को नहीं समझते है और बहुत कम लोगों को ही इस पर गर्व है।

बचपन से ही भारतीय कपड़े के प्रति मेरे जूनून के साथ, मैंने हमारी संस्कृति के कम से कम एक अति सूक्ष्म हिस्से को बचाने के लिए अपनी छोटी भूमिका को निभाने का निश्चय किया। इस प्रकार से आम्रपाली, मेरे बुटीक का मद्रास में वर्ष 1970 में जन्म हुआ, जब, वेंकटगिरी साड़ियों में विशेषज्ञ वर्नाली के अतिरिक्त, मद्रास में एक भी दुकान नहीं थी जिसमें हथकरघे, हैंडब्लाक प्रिंट या विशेष रूप से डिजाईन किये गए कपड़ों की श्रृंखला हो। बेशक सरकारी दुकानों में इनमें से कुछ थे, परन्तु वे बमुश्किल ही ऐसे कपड़ों का स्टॉक रखते थे जिनसे खरीददार उत्सुक हो सके। कुछ हद तक, मैंने उस अभाव को दूर किया, और ख़ुशी से यह यात्रा मुझे भारत के अन्य हिस्सों में भी करघों को खोजने के लिए ले गयी, उनकी डिजाईन, उनकी संस्कृति, धागे के साथ उनके रोमांस को समझने के लिए, भारत में कपड़े के समृद्ध ज्ञान को अर्जित करने के लिए।

फेमिना और इव्स वीकली महिलाओं की प्रसिद्द पत्रिकाएँ थी और उन्होंने उनके पत्रकार बिना मुझसे पूछे मेरे पास भेज दिए, क्योंकि संपादक ने मेरे बुटीक और उसमें मौजूद आकर्षक डिजाईनों के बारे में सुना था।

चुनौती, हाथों से बुने कपड़ों का परिचय, प्रदर्शनियों, रैंप शो और अग्रणी महिलाओं की पत्रिकाओं के माध्यम से, उनकी खूबसूरती से अनजान लोगों से करवाने की थी एवं ऐसे डिजाईन और रंगों को शामिल करने की थी जिससे की उन्हें खरीदे बिना रह पाना मुश्किल हो जायें। उन दिनों *फेमिना* और *इव्स वीकली* महिलाओं की प्रसिद्द पत्रिकाएँ थी और उन्होंने उनके पत्रकार बिना मुझसे पूछे मेरे पास भेज दिए, क्योंकि संपादक ने मेरे बुटीक और उसमें मौजूद आकर्षक डिजाईनों के बारे में सुना था। एक पत्रिका के मध्य पन्नों के लिए हेमा मालिनी ने मॉडलिंग करके मुझे गर्वित किया, उस समय जब ड्रीम गर्ल उनके कैरियर की बुलंदियों पर थी। यह वो दिन थे जब प्रतिभा को श्रेय बिना किसी भुगतान द्वारा दिया जाता था!

पच्चीस वर्षों से कारोबार में रहने के बाद, मैंने स्वेच्छा से कार्य करना शुरू किया। मैंने देश भर के बुनकरों

के साथ काम करने का फैसला लिया, दक्षिण भारत से शुरुआत करके ऐसे बदनसीब बुनकरों का पता लगाकर उनकी मदद करने के लिए जो लाचार थे, जिनके करघे खाली थे और जो उनके कपड़ो को बेचने के लिए बाजार नहीं ढूंढ पा रहे थे। दुर्भाग्यवश, कपड़ा बनाने की आधुनिक विधियों ने इन्हें क्षति पहुँचाई है और अधिकतर बुनकर बेहतर मजदूरी के साथ उद्योग से जुना पसंद कर रहे है और पारंपरिक व्यवसाय से दूर हो रहे है। जब तक हम विदेशी खरीददारों को आकर्षित नहीं करेंगे और हमारे फैशन डिज़ाइनरों को हाथों से बने कपड़े की भरमार को इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित नहीं करेंगे, हम अपनी कपड़ों की विरासत खो देंगे और भविष्य की पीड़ियाँ केवल इन्हें संग्रहालयों में ही देख सकेंगी।

कपड़ा बनने से पहले ताने के साथ लगाए धागे।

आज तक, हमारे देश में आने वाले विदेशियों को मैं हमारा कपड़ा दिखाने का एक भी मौका नहीं गंवाती। इस बात को जानकर, पर्यटन कंपनियाँ समय-समय पर विदेशी पर्यटकों को हमारे घर का दौरा करने भेजती है, चेन्नई में पारिवारिक जीवन को जानने के लिए, मेरा खाना चखने के लिए, इन व्यंजनों को पकाना सीखने के लिए, फिर कपड़ों पर मेरे भाषण को सुनने के लिए और मेरे स्वयं के कपड़ों के संग्रह की तारीफ करने के लिए।

अगला लेख इस विषय पर केन्द्रित होगा कि कैसे विभिन्न प्रदेशों के कपड़ों ने मेरे दिल को छुआ, मुझे उनके साथ वस्त्र बनाने के लिए और मेरे बुटीक में उनको उनकी पूरी भव्यता में उनकी जातीयता के गर्व के साथ रखने के लिए प्रेरित किया।

चित्र:सबिता राधाकृष्ण

एस कृष्णामूर्ति द्वारा रूपरेखा

टीसीए श्रीनिवास राघवन

अमेरिका को प्राथमिकता देकर क्या ट्रम्प गलत है?

पिछले 50 दिनों से, डोनाल्ड ट्रम्प, अमेरिका के नए और, मुझे दोहराना चाहिए, निष्पक्ष रूप से चुने गए राष्ट्रपति को उनके विरोधियों के जबर्दस्त आक्षेप को झेलना पड़ा है। इससे पूर्व किसी भी निर्वाचित उम्मीदवार पर किसी भी जगह कार्यभार संभालने के तुरंत बाद इतने व्यापक एवं बलपूर्वक रूप से आक्षेप नहीं किया गया।

परन्तु जबकि बहुत सी आलोचनाओं को उचित ठहराया जा सकता है, एक मुद्दे के लिए ट्रम्प को दोषी नहीं ठहराया जा सकता। वह मुद्दा है वैश्वीकरण।

इस मुद्दे पर उनकी की जाने वाली सबसे मामूली आलोचना यह है कि वह वैश्वीकरण को नुकसान पहुँचा रहे है। सबसे गंभीर आलोचना यह है कि वह इसे समाप्त कर रहे है।

सच, हालाँकि, यह है कि वह दोनो ही नहीं कर रहे है। वह केवल अमेरिका के पक्ष में इसे सुधार रहे है, जैसा करने के लिए उन्हें चुना गया है। इसके लिए उन्हें दोषी क्यों ठहराना?

क्यों' समझने के लिए, यह समझना आवश्यक है कि इस प्रचार के विपरीत, वह वास्तव में 20 वीं शताब्दी थी जिसने वैश्वीकरण को उत्पादन के दो प्रमुख तत्वो: पूँजी और श्रम के अंतर्राष्ट्रीय प्रवाह पर रोक लगाकर समाप्त किया। इसने व्यापार पर भी ऐसे प्रतिबन्ध लगाये जैसे पहले किसी सदी में नहीं लगाये गए थे।

तो विरोध के दावों के बावजूद, 20वीं सदी के पूर्व का वैश्वीकरण वास्तव में पिछली सदी में हो ही नहीं रहा था, वर्ष 1950 के बाद के पूँजी प्रवाह के मामलों में कुछ को छोड़कर। बेशक, श्रम का प्रवाह कभी भी किसी बड़े पैमाने पर नहीं हुआ। प्रवासन हमेशा से ही एक नियंत्रित मामला था।

इसे वर्ष 1945 के बाद के उपनिवेशों की स्वतंत्रता के सन्दर्भ में समझा जाना चाहिए। वर्ष 1947 से वर्ष 1970 के मध्य अनेक नए राष्ट्रों का उदय हुआ; वो भी लोकतान्त्रिक राष्ट्रों का। इसने उन देशों की निर्वाचित सरकारों पर नीतियों के दो या तीन श्रेणी को अपनाने का दबाव डाला: पहला, घरेलू बचत को राष्ट्रीय सीमा के अंदर बांधना जिससे कि राष्ट्रीय बचत घरेलू निवेश के लिए उपलब्ध हो; और माल के निर्यात को बड़ाकर आयात के भुगतान के लिए डॉलर कमाना।

अगर आप वर्ष 1950 से वर्ष 2008 के मध्य प्रचलन देखते है जब वैश्विक वित्तीय संकट आया था, यही था जो हुआ था। इसमें से अधिकांश को पश्चिमी वित्तीय संस्थानों और पश्चिमी सरकारों द्वारा आये

अधिक एवं सस्ते वित्त की उपलब्धता द्वारा संभव बनाया गया था। पश्चिमी सरकारें साम्यवाद के विस्तार को रोकने के लिए आतुर थी और धन देने में उदार थी।

साम्यवाद का खतरा वर्ष 1990 में सोवियत संघ के पतन के बाद ख़त्म हो गया। अगले 15 वर्षों में, वित्तीय हितों ने राजनैतिक हितों को लगभग पूर्णतः प्रतिस्थापित कर दिया। किसी के नियंत्रण में ना रहकर, उन्होंने

पश्चिम के वित्तीय ढांचे में विनाश लाया, जिससे, प्रतिकूल तरीके से, वर्ष 2008 में सोवियत संघ की तरह इसका भी पतन हो गया! इसके परिणामस्वरूप हुए आर्थिक संकट ने पूरे विश्व को प्रभावित किया।

सोवियत संघ और पश्चिम, और एशिया में भी, दोनों के परिणामस्वरूप मजबूत राजनैतिक राष्ट्रवाद का उदय हुआ। ट्रम्प, व्लादिमीर पुतिन, शिन्तो आबे, शी जिंगपिंग, ब्रेक्जिट इत्यादि, सभी एक ही गाना, शब्द और तो और धुन भी एक ही गा रहे है। वे सभी उनके देशों को सैन्य दृष्टि से और आर्थिक रूप से मजबूत करना चाहते है।

ऐसा करने के लिए, वे आर्थिक नीतियों के एक श्रेणी का पालन कर रहे है जो कि उन नीतियों से बहुत अलग नहीं है जिन्हें 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उपनिवेशों से स्वतंत्र हुए नए राष्ट्रों द्वारा अपनाया गया था: विदेशियों के प्रति विकर्षण और संरक्षणवाद। उनकी राजनैतिक नीतियों को वैधता की भी आवश्यकता है, जिसे वे राष्ट्रवाद के बते आग्रह के माध्यम से प्राप्त करने की कोशिश कर रहे है।

समस्या यह है कि अक्सर राजनैतिक राष्ट्रवाद आर्थिक राष्ट्रवाद पर विपरीत बल लगाता है जिसे हम अब दुनिया में हर जगह देख रहे है। परन्तु दोषी ट्रम्प या शी या आबे या उनमें से कोई नेता नहीं है। दोषी दुनिया की आबादी है।

वर्ष 1900 में, वह 1 अरब थी। आज यह 7 अरब से ऊपर है। 110 वर्षों में 6 अरब की यह आकस्मिक वृद्धि पूरी दुनिया की आर्थिक समस्याओं की जड़ है। यह ऐसा है जैसे 72 लोगों के लिए बनी एक बस में अब 432 लोग सवार हो गए हो। ऐसी बस का खराब होना निश्चित है और बस चालक, कंडक्टर या मैकेनिक को दोषी ठहराने का कोई तर्क नहीं है। ■

कोलकाता की विरासत की याद में

के टी पी राधिका

एक शानदार विरासत - यूनेस्को के विश्व धरोहर सप्ताह को मनाने के लिए, रोटरी क्लब कोलकाता मेट्रोकिटी मंडल 3291, ने इंडियन नेशनल ट्रस्ट फॉर आर्ट एंड कल्चरल हेरिटेज (INTACH) कोलकाता अध्याय, के साथ मिलकर एक विरासत जागरूकता कार्यक्रम 'संवर्धन' का आयोजन - कोलकाता के एक शानदार विरासत भवन मार्बल पैलेस के प्रांगन में किया।

कार्यक्रम के एक भाग के रूप में, DG श्यामश्री सेन ने चार विरासत परिवारों को सम्मानित किया- महिषादल के गर्ग राज परिवार का, जो जमींदार थे और जिन्होंने क्षेत्र के सामाजिक कल्याण के लिए काफी योगदान दिया, मुर्शिदाबाद के डूगर राज परिवार जो बैंकरों और व्यापारियों का प्राचीन जैन परिवार है, चोरबगान के मित्राज जो अपने परोपकार और बंगाल के कला और सांस्कृतिक परिदृश्य में योगदान के लिए प्रसिद्ध है और कोस्मिंबज़ार, मुर्शिदाबाद का रॉय राज परिवार जो एक गैर-बंगाली परिवार है जिन्हें भारत में पहले अमेरिकी ऑटोमोबाइल स्टुडबेकर का आयात करने का श्रेय जाता है।

"कोलकातावासी सांस्कृतिक विरासत में समृद्ध हैं। विरासत स्मारकों के अलावा, हमारे पास बहुत पुराने परिवार भी हैं जो कई सदियों से विरासत घरों में रहते आ रहे हैं। हम उन भवनों और अपनी संस्कृति को संरक्षित रखना चाहते हैं। 'संवर्धन' कार्यक्रम के आयोजन के उद्देश्य अगली पीढ़ी के मध्य हमारी परंपरा और विरासत भवनों के बारे में जागरूकता का निर्माण करना था," श्यामश्री आगे कहते हैं।

डीजी श्यामश्री सेन, कोस्मिंबज़ार रॉय परिवार के प्रसन्ना रॉय उनके बेटे कल्लब और पोते सौरव को सम्मानित करते हुए।

जी एम कपूर, जो INTACH कोलकाता अधिवेशन के संयोजक, और एक रोटरीयन भी हैं, ने विरासत की इमारतों को संरक्षित रखने और वास्तुकला की परंपरागत शैली को जीवित रखने की आवश्यकता को रेखांकित किया। पश्चिम बंगाल विरासत आयोग के अध्यक्ष शुवाप्रसन्ना और इतिहासकार अनुप मोतीलाल ने शहर में विभिन्न विरासत स्थलों के बारे में चर्चा की। पंडित रविशंकर के एक शिष्य, ग्रैमी नामांकित पंडित तरुण भट्टाचार्य द्वारा मैहर घराणा के संतूर गायन के साथ इस कार्यक्रम का समापन हुआ। शहर की विरासत के बारे में जागरुकता का सृजन करने के लिए क्लब रोटीनियन, रोटरैक्टर्स और इंटरैक्टर्स के लिए जल्द ही एक विरासत के दौरे की योजना बना रहा है।

कार्यक्रम में 350 से अधिक रोटीनियनों, रोटरैक्टर्स, दूतावास के प्रतिनिधियों, INTACH और कई NGO के सदस्यों ने भाग लिया।■

अपने द्वेष को स्वीकारों

भरत और शालन सवुर

एक असाधारण व्यक्ति और आध्यात्मिक शिक्षक टोनी डी मेलो इस कहानी को सुनाते है: एक आदमी, जिसे अपने घास के मैदान पर गर्व था, ने उसे सिंहपर्णी की एक विशाल फसल से ग्रस्त पाया। उसने उन्हें ख़त्म करने के लिए हर तरकीब अपनाई पर सब व्यर्थ था। अंततः उसने कृषि विभाग (DOA) से परामर्श लिया और उसके द्वारा अब तक किये गए सारे प्रयासों को गिनाने के बाद, उनसे पूछा, मुझे अब क्या करना चाहिए?' कृषि विभाग ने उसकी अनंत बुद्धिमत्ता से जवाब दिया, उनसे प्यार करना सीखो।

डी मेलो अपना अनुभव साझा करते है, मैं भी सिंहपर्णी से ग्रस्त था और मैंने मेरी क्षमता में मौजूद हर साधन का उपयोग कर उससे लना जारी रखा। तो उनसे प्यार करना सीखना कोई आसान काम नहीं था। मैंने उनसे हर दिन एक सौहार्दपूर्ण एवं मैत्रीपूर्ण ढंग से बात करने से शुरुआत की। उन्होंने एक चुप्पी साधे रखी, मेरे द्वारा उनके खिलाफ युद्ध की पीड़ा के अनुभव के कारण। परन्तु वह दिन आया जब वे मुस्कुराएं। और तनाव मुक्त हो गए। और हम दोस्त बनना शुरू हो गए।

"बेशक, मेरा मैदान बर्बाद हो गया था। परन्तु कितना मोहक मेरा बगीचा बन गया था!"

द्वेष को दूर कीजिये। जब हम अपनी सिंहपर्णी को मारने के बजाय उनको प्यार करना सीखते है, जिंदगी अच्छी और उत्तम हो जाती है! जिंदगी नृत्य करती है। हमारीद्वेष एक स्वयं के द्वारा निर्मित महामारी है। वे दिमाग को नुकसान पहुंचाती है, शरीर को घायल करती है और आत्मा को डराती है। उनसे मुक्ति पाइए और सद्भाव, सेहत और खुशहाली की किरणें हमारे अंदर बहने लगती हैं।

अपनी सिंहपर्णी को प्रेम करना अस्तित्व को उसकी संपूर्ण सुहावनी सुन्दरता और सुहावनी बदसूरती में प्रेम करना है। ज़िन्दगी को महान स्वीकृति के साथ एवं वर्तमान में जियो।

क्या आप जानते है कि पूर्णतःद्वेष मुक्त होने का क्या अर्थ है? मैंने इसे घंटों तक अनुभव किया है और इसे जल्द ही स्थायी बनाने की आशा करता हूँ। आप पहला कदम तब लेते है जब आप दोषारोपण करने के बजाय अपनी सेहत, रिश्तों, खुशियों, जहाँ आप आज है की जिम्मेदारी लेना शुरू करते है। जिम्मेदारी लेने का अर्थ स्वयं के ऊपर दोष लेना नहीं है। इसका अर्थ एक गहरी समझ तक पहुँचना है: *दोष देने के लिए कोई नहीं है*। तो फिर आपका नजरिया, आपकी प्रवृत्ति अत्यंत सूक्ष्म रूप से परिवर्तित होती है। आप प्रतिक्रिया-सक्षम बन जाते है। आप शांति, स्थिरता, परिपक्वता का एक मापक हासिल कर लेते है।

शांतचित्तता का स्वागत कीजिये। शांतचित्तता एक अत्यंत वांछनीय और स्वास्थ्यवर्धक गुण है। यह शरीर के लिए एक टॉनिक है, विशेषकर दिल के लिए, दिमाग का एक अवसादरोधी। यह ताकत और साहस लाता है जिसकी हम सभी को आवश्यकता है। जब हम अपनी शांतचित्तता खोते है, हम वो करते है जो हमें स्वयं को और दूसरो को तकलीफदेह होता है। मैंने इसे एक पूर्व छात्रा में देखा और महसूस किया है - बहुत अधिक बैचनी, विचारों एवं गणनाओं का अतिर्भा। वह कक्षा में अभ्यास नहीं कर सकी - वह केवल अपनी आँखों में एक हैरानी लेकर कमरे में चारों ओर घूमती रही। वह ध्यान नहीं कर सकी - आप ध्यान नहीं कर सकते यदि आप बैठ या लेट नहीं सकते है।

चार सवाल। आपको अपनी प्रतिक्रिया-क्षमता को ऊपर उठाना है, सांसारिक लोभ एवं प्रतियोगिता से अछूते आपके प्रबुद्ध सार का दिल जिसे अंतरात्मा कहते है, से लगातार कुछ सवाल पूछकर: मैं कैसे मदद कर सकता हूँ? मैं चीज़ों को कैसे बेहतर करूँ? कैसे मैं स्वयं को सार्थक बनाऊं? कैसे मैं स्वयं की एवं दूसरो की मदद कर सकता हूँ?

इस प्रकार से हम बेवजह भटक रहे मन का ध्यान आकर्षित कर सकते है और करने के लिए उसे कुछ उद्देश्यपूर्ण दे सकते है। इसके विनाशकारी विचारों को रचनात्मक प्रक्रियाओं की तरफ मोा गया है। लगातार पूछने पर, यह सवाल हमारा *ध्यान बन जाते* है। अधिक सम्मानजनक कैसे मैं इस दर्द को कम कर सकता हूँ? स्वयं पर तरस खाने वाले मैं क्यों दर्द झेल रहा हूँ? को प्रतिस्थापित करता है। जब कैसे' हावी होता है, तो स्वयं की एवं दूसरों की मदद करने का एक दृढ़ संकल्प जागृत होता है, एक प्रतिक्रिया-क्षमता जो जिम्मेदारी के साथ हाथ-से-हाथ मिलाकर आगे बड़ती है। इस अवस्था में, आवेश मर जाता है और एक मननशील स्वभाव स्थापित होता है। यह एक शानदार उपलब्धि है। कैसे आपके हाथों में लगाम थमाता है।

आप सोच सकते है कि कुछ नहीं हुआ है। परन्तु, जैसा मास्टर कहते है, "एक राजा का विचार आदमी की ताकत को सर्वोत्त्कृष्ट शक्ति से जोड़ सकता है।" कुछ हुआ है। द्वेषओं ने उनका स्थान छोड़ना शुरू कर दिया है। सभी पुरानी, लोगों के प्रति,

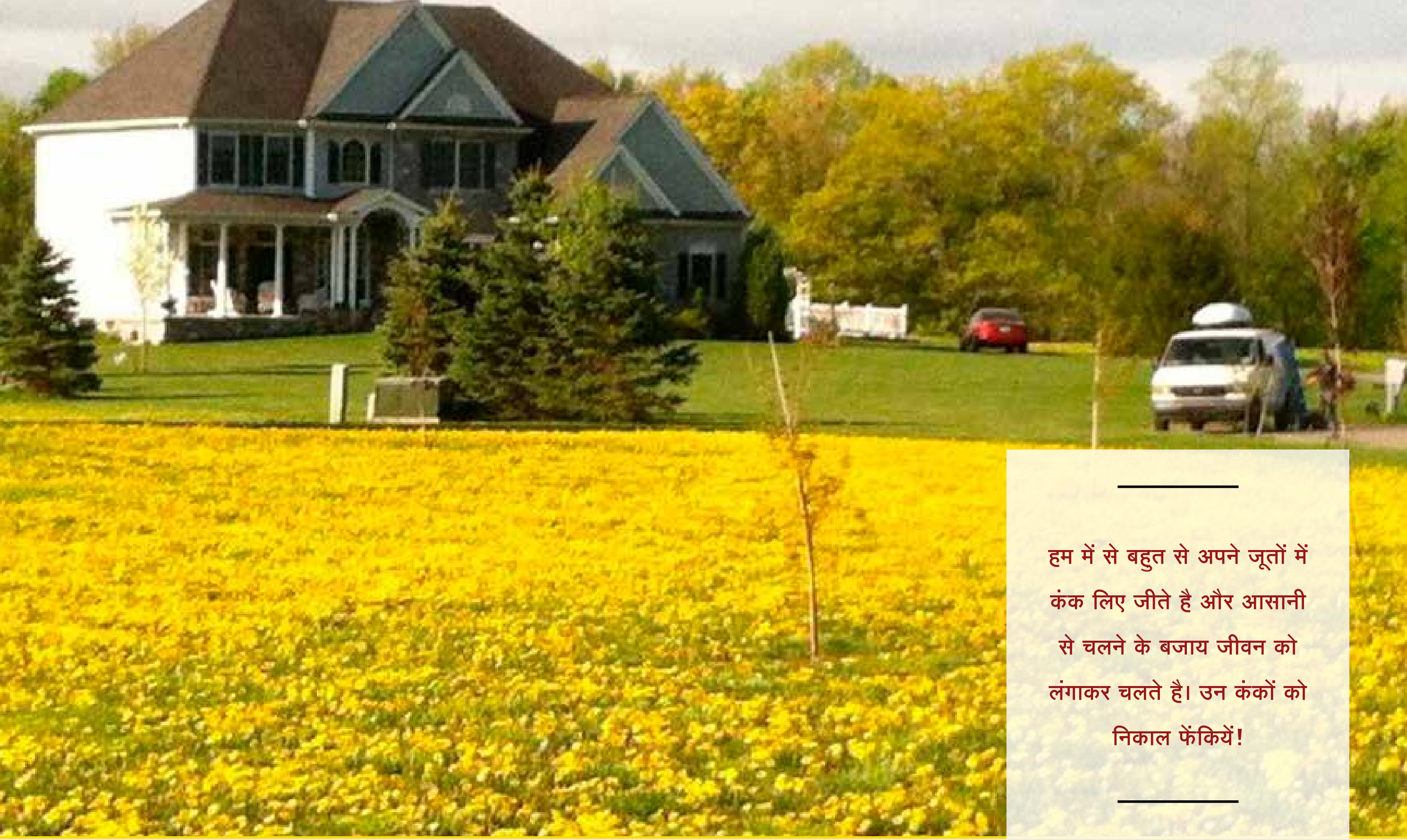

हम में से बहुत से अपने जूतों में कंक लिए जीते है और आसानी से चलने के बजाय जीवन को लंगाकर चलते है। उन कंकों को निकाल फेंकियें!

हालात के प्रति द्वेषयें बाहर जा रही है। आपको उन्हें जाने देना है। जबद्वेषयें गायब होती है, नेक इरादे फैलते है एवं खिलते है, सद्भाव पनपता है, आनंद का प्रकाश हमारे अस्तित्व को सराबोर कर देता है।

निरंतर जुड़िये। अपनी सिंहपर्णी को प्रेम करना अस्तित्व को उसकी संपूर्ण सुहावनी सुन्दरता और हाँ, उसकी सुहावनी बदसूरती में प्यार करना है। यह एक ताओ तत्व है। जब आप सभी से और सभी वस्तुओं के अनुरूप होकर जीते है, आप कभी भी निराश, उदास, शक्तिहीन या बीमार नहीं होते है। जिंदगी को महान स्वीकृति के साथ और वर्तमान में जिया जाना चाहिए। कोई दूसरा रास्ता नहीं है। यह आपके सभी कार्यो को प्रेम और अर्थ से रंगने के बारे में है। यह लगातार जुड़े रहने के बारे में है।

जब मैं अपने स्प्रिंग के साथ अभ्यास करता हूँ, मैं दुनिया को अपने हाथों में उठाता हूँ। जब मैं स्प्रिंग को खींचता हूँ, मैं सभी प्राणियों के दर्द को मिटाता हूँ। जैसे ही मैं खींचता हूँ, मैं प्रक्रिया को सुन्दरता एवं सद्भाव से भर देने के लिए मधुर संगीतों का एक मिश्रण गाता हूँ। कृपया इस अभ्यास का चलते वक्त, साइकिल चलाते वक्त, कसरत करते वक्त प्रयास कीजिये। यह आपके कार्यो को आपकी गतिविधियों, आपके वातावरण, आपके चारों ओर मौजूद लोगों, परिस्तिथियों - चाहे वे मंडल बैठक हो या पारिवारिक मेल-मिलाप, को एक नयी प्रकार की जागरूकता के साथ जोड़ने के बारे में है। विश्वास एक खाली प्याला है जब तक आप उसे विश्वास की भावना आधारित अभ्यासों से नहीं भरते। आपका विश्वास हो सकता है कि "किसी दिन मैं प्रबुद्ध हो जाऊंगा।" नहीं, किसी दिन नही, क्योंकि आप *अभी* एक प्रबुद्ध प्राणी है। और जब आप सद्भाव का आपकी गतिविधि और वातावरण के साथ अभ्यास करते है, आप जो है वह हो रहे होते है।

आराम से जियो। हम में से बहुत से अपने जूतों में कंकड़ लिए जीते है। हम आसानी से चलने के बजाय जीवन को लंगाकर चलते है। उन कंक्ड़ों को निकाल फेंकियें! जब आप इसे पसंद करना या उसे नापसंद करना बंद करते है, आपके मन की शांति दुगुनी हो जाती है। जब आप अहंकार को बहिष्कृत करते है, आप दुगुना जीवित होकर लौटते है। और सबसे प्यारे, सबसे मनोहर उपहारो में से एक जो आप स्वयं को एवं दुनिया को दे सकते है वह है जब आप ज़िन्दगी के चरम सौंदर्य के काव्यात्मक क्षणों को उन लोगो से चुराते है जिन्होंने उन्हें आपसे चुराया था। क्षमा अंधकार को प्रकाशित करती है और बीमारियों के आक्रमण को रोकती है। प्रत्येक पल में खुशियाँ होती है। प्रत्येक पल को क्षमा कीजिये और वह कभी भी बुरी यादें नहीं बनेंगे। हर पल से प्रेम कीजिये और यह एक निरंतर चलने वाली आनंदमय जिंदगी बन जाती है।

कहानी इस प्रकार है: एक सुबह एक बूढ़ी औरत ने आईने में देखा कि उसके सर पर केवल तीन बाल शेष है। चूंकि वह एक सकारात्मक महिला थी, उन्होंने कहा, "मैं आज अपने बाल की चोटी बनाऊँगी।" तो उन्होंने उनके तीन बालों की चोटी बनायी और एक शानदार दिन जिया। कुछ दिनों बाद, उन्होंने देखा केवल दो बाल शेष है। उन्होंने उनके बालों को अलग किया और हमेशा की तरह एक शानदार दिन बिताया। एक हफ्ते बाद, केवल एक बाल शेष पर रह गया। उन्होंने सोचा एक पोनीटेल चोटी बढ़िया रहेगी। और एक बार फिर एक अच्छा दिन जिया। अगली सुबह, वह पूरी तरह से गंजी हो गयी। वह खुश होकर चिल्लाई, "कितना सुन्दं। अब मुझे कभी भी अपने बाल बनाने में समय बर्बाद नहीं करना पड़ेगा!"

जो है उसे स्वीकारें। जो चला गया उसे जाने दीजिये। जो होने वाला है उसमें विश्वास रखिये। और तंदरुस्ती में नृत्य कीजिये।

लेखक 'फिटनेस फॉर लाइफ' किताब के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।

मेक्सिको में वेनिस का अनुभव

रशीदा भगत्

घुमावदार नहरों का हरा पानी और पानी में कुशलता से एक दूसरे का रास्ता काटती हुई रंगबिरंगी गोंडोला जैसी नावों की अधिकता, आपको फ़ौरन वेनिस एवं उसके प्रसिद्द गोंडोला की याद दिलाते है। परन्तु हम मेक्सिको शहर में है और शोचीमिल्को मेक्सिको शहर के 16 बरो या जिलों में से एक है, और यहाँ शहर के मध्य से एक घंटे की यात्रा करके पहुँचा जा सकता है।

परन्तु यहाँ समानता ख़त्म होती है...एक तरफ जहाँ वेनिस का ब्रिज ऑफ़ साईस, जो आपको रोमांस के शहर के बहुत आनंदमय समय में नहीं ले जाता है, वहीं शोचीमिल्को झील मुस्कुराहटों एवं चहचाहट, संगीत, भोजन और जोश से भरी हुई है। इसके साथ ही, वेनिस के मुकाबले, जहाँ एक घंटे की निजी गोंडोला की सैर आपकी जेब को रु10,000 से हलकी कर देती है, वहीं शोचीमिल्को में, आप आपकी निजी, रंगबिरंगी नाव, जिसे स्थानीय रूप से त्रजिनेरा के नाम से जाना जाता है, को केवल रु 800 प्रति घंटे में प्राप्त कर सकते है। तीन से चार घंटे की सैर के लिए वहन करने योग्य कीमत।

जैसे ही हम झील और उस स्थान पर पहुंचे जहाँ नावें बंधी हुई थी, सबसे पहला सुखद नज़ारा जो हमनें देखा वह अनेकों उत्साहित स्कूली बच्चों का था जो पिकनिक मनाने और नाव की सैर करने के लिए आये थे। हम उन में से एक नाव, जो मजबूत लकड़ी से बनी थी, में बैठ गए और नाविक ने एक युवा लड़के से स्पेनिश में कुछ बात की और अगले ही पल एक बर्फ से भरी बाल्टी में विभिन्न प्रकार की बियर और एरेटेड पेय का ढेर, संकरी केंद्रीय मेज पर रख दिया गया।

हम नहर के संकरे आरम्भ बिंदु से इस बात का आश्चर्य करते हुए आगे बड़े कि कैसे नाविक किनारे पर बंधी हुई सैकड़ों नावों, जिनके मध्य बमुश्किल कोई जगह थी, के मध्य से अपना रास्ता बनाएगा। हालाँकि, अनके मददगार हाथों के साथ-साथ पैरों को भी देखना एक दिलचस्प बात थी जिन्होंने निपुणता से संकरी जगह में से हमारी नाव को बाहर निकाल दिया और जल्द ही हम एक खाली क्षेत्र में थे जहाँ हमारे चारों ओर पानी का व्यापक विस्तार था।

रंगबिरंगी नावें हमारे पास से गुजर रही थी जिनमें स्थानीय एवं विदेशी पर्यटक दोनों थे और हमनें ध्यान दिया की उनमें से कुछ नावों में संगीतज्ञों का पूरा समूह था। कुछ फीस चुकाकर आप उनसे संगीत बजवा सकते है...अगर आप ऐसा करते है, वे आपकी नाव पर आते है, कुछ गाने गाते है और वापस उनकी नावों में चले जाते है। माहौल उल्लासमय है, आपके चारों ओर का नज़ारा इतना रंगीन है कि आप एक अच्छी तस्वीर लेने के लिए अपने आप को नाव में इधर-उधर कूदने से नहीं रोक सकते। नावें चट्टान सी इतनी मजबूत एवं स्थिर है कि आपकी तरह नाविक ज़रा भी संतुलन खो

एक संगीतकार अपने जूते चमकते हुए।

आपके चारों ओर का नज़ारा इतना रंगीन है कि आप एक अच्छी तस्वीर लेने के लिए अपने आप को नाव में इधर–उधर कूदने से नहीं रोक सकते।

जाने के डर से परेशान नहीं होता है और वह नहर में उसके हाथ से नाव को चलाता है।

जब आप अपने पसंदीदा पेय का आनंद ले रहे होते है, विभिन्न छोटी नाव और डोंगे आपके चारों ओर तैरकर आपको विभिन्न प्रकार की खाने की वस्तुएं प्रस्तुत करते है, जिनमें खाने और पीने के साथ-साथ शॉल, चूड़ियाँ और विविध प्रकार के खिलौने एवं हल्के गहने मौजूद है। मैं मक्के की भूमि में थी और शीघ्र ही मुझे भुट्टा दिखाई दिया जो भारत की तरह ही प्रस्तुत किया जा रहा था; खुली आंच पर सिका हुआ और नमक, मिर्ची एवं नींबू लगाकर परोसा गया।

मिचेलादा का समय

हम एक महिला विक्रेता के नज़दीक से गुज़रे जो मिचेलादा, मेक्सिको के सबसे मशहूर बियर आधारित पेय में से एक, बेच रही थी; इसमें बियर को नींबू के रस एवं मिश्रित सॉस, कभी-कभी क्लामाटो (नमक, मिर्च एवं क्लैम युक्त टमाटर का रस), मिर्च पाउडर और नमक के साथ परोसा जाता है। यह स्वादिष्ट एवं ताज़गी देने वाला होता है, और लगभग 30 मेक्सिकन पेसोस - लगभग रु100 का पड़ता है।

चूंकि हमनें तीन घंटे के लिए नाव ली थी, शीघ्र ही दोपहर के भोजन का समय हो गया था और तैरते हुए भोजनालयों में उपलब्ध विविध प्रकार के व्यंजन- सैंडविच से लेकर बर्गर से लेकर अनूठे मेक्सिकन भोजन तक, अविश्वसनीय थे। हमने चिकन एन्चिलादा चुना क्योंकि वे बगल के ही तैरते हुए कैफ़े में पकाया जा रहा था, मैं यह देखकर हैरान थी कि उस नाव से एक सहायक हमारी नाव पर कूदता है और एक मेज लगाकर खाने का आसन, नैपकिन, छुरि-काँटा एवं क्राकरी सजाता है। मेलमावेयर के बने होने के कारण प्लेटें एवं कटोरियाँ बहुत बढ़िया तो नहीं थी परन्तु वे अच्छे तरीके से स्वच्छ थी।

अत्यधिक गर्म एन्चिलादा को बहुत सारे हरे सलाद और गर्म टोर्टीला के साथ परोसा गया। हमनें नाविक के भोजन का भी आर्डर दिया, और जैसे ही वह हमारे साथ खाने के लिए बैठा, नाव खेने का कार्य बिना किसी हलचल के कैफ़े के सहायक द्वारा ले लिया गया। वहाँ उसके लिए भी पर्याप्त भोजन था, और जैसे ही नाविक ने अपना खाना समाप्त किया, उसने युवक से उसका भोजन करने के लिए कहा। तीव्र एवं कुशल सेवा के साथ-साथ वहाँ इतना अधिक शिष्टाचार, शालीनता और सौहार्द है कि दिल खोल के टिप देना उचित है। सामान बेचने वाला एक भी विक्रेता झील पर मौजूद किसी भी मेहमान को उसका सामान खरीदने के लिए प्रताति नहीं करता है।

मेक्सिको शहर में स्थित इस प्रसिद्ध पिकनिक/ अवकाश स्थल से हमारे पर्यटन सेवा प्रदाताओं के सीखने के लिए बहुत कुछ है। पूरी नहर में उसके दोनों ओर बहुत सारे रेस्टोरेंट और कैफ़े उपस्थित है और केवल 5 या 10 पेसोस में एकदम स्वच्छ शौचालय उपलब्ध है, उन लोगों के लिए भी जो वहाँ खाना या नाश्ता नहीं करते है। आप बस नाविक को बोलिए कि आपको शौचालय इस्तेमाल करना है और वह नाव को उनमें से एक के पास लगा देता है, जो नाव से उतरने के लिए आरामदेह चबूतरा

एक तैरता कैफेटेरिया।

मचेलादा, मेक्सिको के सबसे मशहूर बियर आधारित पेय में से एक,इसमें बियर को नींबू, क्लामाटो, मिर्च और नमक के साथ परोसा जाता है।

प्रदान करते है। शौचालय स्वच्छ है, उनमें पानी और टॉयलेट पेपर दोनों मौजूद है।

विकिपीडिया के अनुसार, शोचीमिल्को नहरें एक समय मौजूद उस विशाल झील और नहर तंत्र का शेष बचा हुआ हिस्सा है जो मेक्सिको की घाटी की अधिकतर बस्तियों को जाड़ेती थी। उस क्षेत्र के पूर्व लैटिन-अमेरीकी इतिहास, और एक समय मेक्सिको की घाटी के अधिकतर हिस्से में फैली हुई विशाल झील और नहर तंत्र के अवशेषों ने शोचीमिल्को को एक विश्व विरासत स्थल एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्द बनाया।

जलमार्गो का यह तंत्र परिवहन का मुख्य मार्ग था, 20 वीं सदी तक विशेषरूप से पूर्व लैटिन-अमेरीकी काल के माल के लिए। परन्तु अनेकों वर्षो एवं दशकों के पश्चात, जलस्तर गिरा और झील सिकुड़ गयी और अब शोचीमिल्को में केवल नहरें शेष है। नहरों में पानी ताज़े पानी के झरनों से आता है जो कि कृत्रिम तौर पर उपचारित जल द्वारा सिंचित है। इस बात की चिंता है कि गिरता जलस्तर बची हुई नहरों को भी गायब कर देगा और इसलिए इस जगह को एक विश्व विरासत स्थल घोषित किया जा चुका है।

चत्र: परवेज़ भगत्
एस कृष्णामूर्ति द्वारा रूपरेखा

Please pay your *Rotary News* Dues at the earliest

to enjoy uninterrupted supply. Please note that *Rotary News* subscription is mandatory and defaulting clubs can be suspended by RI.

List of defaulting clubs and the club dues details on our website ***www.rotarynewsonline.org***

Rotary

Rotary at a glance

Rotarians : 12,27,469

Clubs : 35,454

Districts : 534

Rotaractors : 2,28,091*

Clubs : 9,917*

Interactors : 4,85,944*

Clubs : 21,128*

RCC members: 2,13,578*

RCC : 9,286*

* As on January 2, 2017

Membership in India, Sri Lanka, Pakistan, Bangladesh, Nepal, Bhutan and Maldives

As on March 1, 2017

RI Zone	RI District	Rotary Clubs	No of Rotarians	Women Rotarians	Rotaract	Interact	RCC
5	2981	109	4,477	188	53	217	171
5	2982	65	2,870	79	54	109	41
5	3000	118	5,275	439	215	498	112
4	3011	72	3,161	566	43	97	28
4	3012	85	3,627	763	59	111	54
5	3020	83	4,228	216	107	452	351
4	3030	99	5,377	671	71	258	156
4	3040	89	2,141	241	50	109	135
4	3051	66	2,481	189	47	146	335
4	3052	61	3,905	899	39	140	130
4	3053	62	2,491	395	16	31	93
4	3060	98	4,053	392	55	110	126
4	3070	108	3,191	291	66	152	54
4	3080	76	3,302	195	62	207	106
4	3090	79	2,137	79	33	36	122
4	3100*	71	1,721	68	10	71	146
6	3110	110	3,851	198	52	49	95
6	3120	74	2,950	288	36	59	50
4	3131	124	5,345	974	84	253	70
4	3132	92	4,013	416	58	141	118
4	3141	85	5,243	1012	100	234	86
4	3142	78	2,973	416	56	180	64
5	3150	95	3,413	327	88	220	108
5	3160	65	2,322	107	17	43	81
5	3170	127	5,543	356	50	279	158
5	3181	67	3,074	204	28	167	102
5	3182	78	3,344	246	25	265	90
5	3190	147	5,724	676	130	335	48
5	3201	138	5,141	295	89	116	46
5	3202	130	4,990	246	91	417	40
5	3211	133	4,298	238	11	70	121
5	3212	95	3,870	207	104	254	126
5	3220	69	1,902	233	79	190	75
5	3230	147	6,173	516	167	452	310
6	3240	86	3,001	347	57	141	141
6	3250	98	3,714	620	32	196	173
6	3261	70	2,344	226	15	100	42
6	3262	85	3,185	377	41	71	73
6	3271	69	1,330	187	42	16	13
6	3272	134	2,670	430	36	36	36
6	3281	195	5,686	774	220	79	184
6	3282	127	3,578	269	122	31	40
6	3291	146	3,839	667	63	126	569
6	3292	114	4,392	651	109	105	101
	Total	**4,319**	**1,62,345**	**17,174**	**2,982**	**7,369**	**5,320**

**Non-districted*

Source: RI South Asia Office

बाल दुर्व्यवहार को रोकें

स्मिता देओधर

फिल्म का निर्माण करना अपने आप में एक रोमांचक, आकर्षक, विशाल, मर्म- स्पर्शी, उद्देश्यपूर्ण कार्य हो सकता है... और यही बात महाराष्ट्र के 17 महाविद्यालयों के युवा फिल्म छात्रों को अनुभव हुआ जिन्होंने बच्चे के प्रति जघन्य परंतु पूरी तरह से अदृश्य अपराध के बारे में दर्शकों को संवेदनशील बनाने के लिए एक लघु फिल्म का निर्माण किया। आठ माह के पश्चात, जब एक विशेष स्क्रीनिंग के लिए सभी लोग मुंबई में एकत्र हुए, फिल्म दर फिल्म के साथ दुर्व्यवहार के अभी तक सूक्ष्म बारीकियों की परत को उधेड़ कर रख दिया। नाटकीय, चिंतनशील, सुविचारित और प्रेरणादायक, फिल्मों ने जागरूकता उत्पन्न करना और बाल शोषण की समस्या का समाधान करने के लिए एक संवाद की चिंगारी भड़काना।

बच्चों के विरुद्ध हिंसा के संबंध में जागरूकता बढाने के लिए और युवाओं को बाल अधिकारों को समझने और उसके बारे में आवाज उठाने के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से इन फिल्मों का निर्माण UNICEF महाराष्ट्र द्वारा आयोजित एक लघु फिल्म प्रतियोगिता के परिणामस्वरूप किया गया था। मास मीडिया के छात्र, जो फिल्म बनाने की प्रक्रिया के लिए अपेक्षाकृत नए हैं - ने एक-दिवसीय कार्यशाला में भाग लिया जहाँ उनका परिचय न केवल महत्वपूर्ण मूलभूत तकनीकों से उनका परिचय कराया गया बल्कि बाल दुर्व्यवहार के रूप में योग्य प्रासंगिक सूचनाएँ, स्क्रीन चित्रण, गोपनीयता बनाए रखने, बाल कलाकारों के साथ काम करने और नैतिकता के प्रति जागरूक रहने के प्रोटोकॉल का पालन करने की भी सीख दी गई।

श्रेयस नामक एक फिल्म निर्माता छात्र के अनुसार, "साइबर दादागिरी, शारीरिक दंड और बाल यौन उत्पीड़न (CSA) पर उपलब्ध सामग्री का पता लगाने, इन तीन विषयों जिनपर लघु फिल्म का निर्माण करने की योजना थी, वास्तव में एक आंख खोलने वाली घटना साबित हुई। इस परियोजना के लिए शोध करना बहुत भावुक और हृदय को विचलित करने वाला कार्य था। लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रतियोगिता ने हमें इसके बारे में कुछ करने और एक निश्चित निर्णय लेने का अवसर प्रदान किया।"

प्रभावकारी, रचनात्मक कथाओं के साथ प्रभावी रूप से उन बच्चों जो इस दुश्चक्र में अकारण फंस गए हैं और अपने भय को व्यक्त करने में असमर्थ हैं, उनके दर्द और मानसिक आघात का संदेश देते हुए, उडअ प्रमुख विषय के रूप में उभरा। हालांकि दिलचस्प तथ्य यह है कि, असहाय स्थिति ने लगभग हमेशा ज्ञान, सशक्तिकरण और आशा की ओर रुख किया है।

हालांकि, फिल्मों को उन विषयों पर विस्तारित किया गया था, जो उन चिंताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिन्हें तुरंत दुर्व्यवहार के रूप में नहीं माना जाता है, जिसने तीन सदस्यीय जूरी का ध्यान आकर्षित किया, जिसमें फिल्मकार और स्क्रीन लेखक उर्मि जुवेकर, राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता समीक्षक अशोक राणे और लेखक-निर्देशक गणेश पंडित शामिल थे। उदाहरण के लिए, जीतने वाली प्रविष्टि, ने शरीरिक रूप

से शर्मसार करने वाले शर्मिंदगी के मुद्दे को संबोधित किया हैं, जो दुर्व्यवहार का एक सूक्ष्म लेकिन तेजी से फैलता हुआ सामान्य रूप है। फर्स्ट टाइमर द्वारा निर्मित किए जाने के बावजूद - मुम्बई स्थित R D नेशनल कॉलेज के छात्रों द्वारा धन्यवाद पत्र, के साथ फिल्म ने पूर्ण, काले और सफेद छवियों और तीक्ष्ण स्क्रिप्ट के साथ जोरदार तेज पंच लगाया है।

जुवेकर के अनुसार, ''प्रतियोगिता एक म हत्वपूर्ण विषय पर विचार करने के लिए युवाओं को प्रेरित करने में सफल रही है और कुछ सार्थक निर्माण करने के लिए शामिल हो गया है। हालांकि, देर से ही सही, उडअ को प्रेस और अन्य मीडिया में काफी कवरेज मिल रही है, युवा लोगों को दुरुपयोग के कम चर्चित पहलुओं को भी देखने के लिए प्रोत्साहित करना महत्वपूर्ण है। साइबर दादागिरी को लें; यह एक ऐसा अपराध है जो तीव्र गति से बढ.रहा है और सीधे उनसे जुडा हुआ है।''

प्रतिभागियों के लिए, फिल्म बनाने की प्रक्रिया हर प्रकार से एक शैक्षिक अनुभव सिद्ध हुआ। उदाहरण के लिए, उनमें से अधिकांश प्रतिभागियों ने स्वीकार किया कि जबकि वे हमेशा सोचा करते थे कि बच्चों को मारना पटना सामान्य था, वे वास्तव में यह जानकर हैरान थे कि शारीरिक सजा एक गंभीर बाल अधिकार उल्लंघन है। दरअसल, उनके शोध ने और अधिक आश्चर्यों को उनके सामने प्रकट किया। शारीरिक दंड पर बच्चों की साक्षात्कार करने वाली एक टीम ने पाया कि लडक़ों को लडकियों की तुलना में अधिक मारा-पीटा जाता है और खराब शैक्षिक प्रदर्शन के लिए ग्रामीण इलाकों की तुलना में बच्चों को शहरी इलाकों में अधिक मारा-पीटा जाता था।

बाल अधिकारों के विषय में आने वाली सम स्याओं के बारे में उनकी सीमित समझ के अलावा, एक और मुश्किल चुनौती थी जिसका मुकाबला शूटिंग शुरू करने से पहले ज्यादातर टीमों को करना था - पहला, बच्चों को फिल्म में अभिनय करने देने के लिए माता-पिता को समझाना और बाद में बच्चों को समझाना कि फिल्म के दृश्य में कैसे अभिनय करें, विशेष रूप से उन दृश्यों में जिनमें यौन दुर्व्यवहार किया गया था। क्ह्मढ कॉलेज, नासिक की छात्रा वैदेही जोशी कहती है, "बच्चों से अभिनय करवाना अत्यंत चुनौतीपूर्ण और कठिन कार्य था, क्योंकि वे तो संकल्पना को समझने में सक्षम नहीं थे। परियोजना के समाप्त होने तक, हम बाल-अधिकारों के बारे में बहुत कुछ सीख चुके थे; अब हमने स्वयं को और इस संसार को भिन्न नजरिए से देखना शुरू कर दिया है।" उसकी टीम ने दूसरा और तीसरा पुरस्कार जीता। उनके संरक्षक मेघा वैद्य, जो क्ह्मढ कॉलेज में टेलीविजन पत्रकारिता सिखलाती हैं, ने कहा, "मेरे 40 छात्रों की पूरी कक्षा ने पाँच फिल्मों का निर्माण करने के लिए मिलकर काम किया, जिनमें से दो - गोइंग बैक होम, जो लडकियों को छेडने और स्क्रैच, जो यौन उत्पीडन से संबंधित है - ने पुरस्कार जीता।''

मेघा के समान ही, राणे ने महसूस किया ऐसा समृद्ध अनुभव उभरते फिल्म निर्माताओं को बाद के जीवन में गुणवत्तापूर्ण फिल्म निर्माण में सहायक सिद्ध होगा। प्रतिभागियों को कुछ रचनात्मक सुझाव देते हुए, उन्होंने कहा, "एक फिल्म का निर्माण करना मात्र एक चतुराईपूर्ण कैमरा शॉट लेने के समान नहीं है। इसे जीवन के बारे में कुछ अंतर्दृष्टि साझा करना चाहिए। नए लोगों को अच्छी फिल्में देखने, बेहतर साहित्य पढने चाहिए और अधिकार के मुद्दों के साथ व्यापक संपर्क होना चाहिए जिसे लोगों के सामने एक संवेदनशील तरीके से पेश किए जा सके।"

फिल्म परियोजना वास्तव में चत्रह्ब कॉलेज, औरंगाबाद के संदीप राठोड जैसे लोगों के लिए एक बडी सीखने की अवस्था थी, जिसके लिए फिल्मों के निर्माण से लेकर पुरस्कार समारोह के लिए मुंबई आने तक, सब कुछ एक मील केपत्थर से कम नहीं था। ''मैं एक बाहरी इलाके से आया हूं और कॉलेज में जाने के अलावा अंशकालिक नौकरी भी करता हूं। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि मैं एक फिल्म बनाऊंगा और जीवन के इतने सारे सबक सीखूँगा। इस परियोजना ने मेरे दोस्तों को और मुझे लडकियों का सम्मान करना और बच्चों के अधिकारों के बारे में बोलना सिखाया, विशेष रूप से जब कोई उनके साथ गलत व्यवहार करता है। मैंने भविष्य में सामाजिक रूप से प्रासंगिक कार्य जारी रखने का भी निर्णय लिया है; ताकि कुछ अच्छे कार्यों के लिए अपनी प्रतिभा का उपयोग कर सकू," उसने अपनी बात आगे बढ़ाते हुए कहा।

यदि फिल्म वास्तविक जीवन का प्रतिबिंब है, यद्यपि अधिक नाटकीय, जीवन से बडा है, तो इन युवाओं ने संग्रथित चित्र का निर्माण किया है और कहानियों को उद्घाटित किया है जो बाल शोषण और हिंसा के विरुद्ध विशाल पैमाने पर अदृश्य अपराध की पहचान करने, उसके खिलाफ कार्रवाई करने के लिए दर्शकों को जागरूक और संवेदनशील बनाया हैं। कुछ दृश्य स्क्रीन के खाली जाने के बाद भी मन-मस्तिष्क को उद्वेलित करते रहता है - जैसे एक बच्चा अपने भयभीत मेहमानों के सामने एक टेडी बियर को चिथड़े-चिथडे उड़ने तक पीटता जाता है; एक एक किशोर लडक़ी अपनी असहायता की भारी भावना को एक तरफ रखते हुए छेडने वाले लड़कों के समक्ष खड़ी होती है; एक हाथ मिलाना जिसमें से लडक़ी बेहद निराशा में छूटने की कोशिश कर रही है; एक छोटा लडक़ा है जो दृढता से एक आदमी को धक्का दे रहा है जो उसे अनुचित तरीके से स्पर्श करने की कोशिश कर रहा है। नाटकीय, ईमानदार, चिंतनशील, सुविचारित और प्रेरणादायक, फिल्मों ने वह सब कुछ हासिल किया है, जिसे हासिल करने का लक्ष्य उन्होंने निर्धारित किया था - जागरूकता उत्पन्न करना और बाल शोषण की समस्या का समाधान करने के लिए एक संवाद की चिंगारी भड़काना।

(वुमेंस फीचर सर्विस)

शारीरिक सजा एक गंभीर बाल अधिकार उल्लंघन है।लडक़ों को लडकियों की तुलना में अधिक मारा-पीटा जाता है और खराब शैक्षिक प्रदर्शन के लिए ग्रामीण इलाकों की तुलना में बच्चों को शहरी इलाकों में अधिक मारा-पीटा जाता था।

मंडल गति

रोटरी क्लब पांडिचेरी एलीट्स - मंडल 2981

रोट्रियनों ने ड्रुब्रेपेट में पुथुवाई क्लूनी सोशल सर्विस ट्रस्ट को गाँवों में उनके आउटरिच गतिविधियों जैसे कि आत्महत्या नहीं करने के लिए परामर्श देने, युवाओं की प्रगति, महिला सशक्तीकरण, बच्चों की देखभाल, HIV की रोकथाम और अन्य कार्यो के साथ ग्रामीणों का सर्वेक्षण करने के लिए स्कूटर उपलब्ध कराया।

रोटरी क्लब सेलम यंग टाउन- मंडल 2982

क्लब ने सेलम में श्री वल्लालार हाई स्कूल के छात्रों के साथ गणतंत्र दिवस समारोह का आयोजन किया और 700 से अधिक छात्रों को मिठाई और उपहार प्रदान किया। उन्होंने कक्षाओं में ब्लैक बोर्ड को भी पेंट किया।

रोटरी क्लब करूर एन्जिल्स - मंडल 3000

क्लब द्वारा नीलगिरी पहाड़ियों में आयोजित किए गए चार दिवसीय RYLA में मंडल के चालीस ऐनाट को साहस, मजेदार खेल और नेतृत्व का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। प्रतिभागियों को स्वेटर उपलब्ध कराया गया। DG एम मुरुगनंदम, DGE आर गोपालकृष्णन और DGN आर वी एन कन्नन ने कार्यक्रम स्थल का दौरा किया और प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया।

रोटरी क्लब फरीदाबाद - मंडल 3011

ग्रीवा और स्तन कैंसर पर ध्यान केंद्रित करते हुए महिलाओं के लिए के एल मेहता दयानंद कॉलेज में स्वास्थ्य संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कैंसर रोग विशेषज्ञों और स्त्रीरोग विशेषज्ञों ने इस विषय से संबंधित विभिन्न समस्याओं का समाधान प्रदान किया। क्लब द्वारा संचालित मैमोग्राफी वैन का उपयोग छात्रों की जाँच के लिए किया गया।

विधियाँ

रोटरी क्लब अकोला - मंडल 3030

मस्तिष्क पक्षाघात से पीड़ित एक बच्ची को एक रीढ़.की पट्टी (थेरा टोग्स) उपलब्ध कराया गया जो ऑर्थिक समर्थन प्रदान करता है और व्यक्ति के समन्वय, संतुलन, शक्ति, धीरज और मुद्रा को सुधारने में मदद करता है। रोटेरियन सुमेधा हरशे बच्ची को इस दीर्घकालिक उपचार में मदद कर रहे है।

रोटरी क्लब गोधरा मिडटाउन - मंडल 3040

थायरॉयड का पता लगाने के लिए क्लब ने एक शिविर का आयोजन अपने रोटारैक्ट क्लब के साथ मिलकर किया, जिसमें हार्मोन की असामान्यताओं और रक्त शक्रा के लिए 25 मरीजों की जाँच की गई। जरूरतमंद मरीजों को दवाएं दी गई।

रोटरी क्लब भिवाडी- मंडल 3053

क्लब ने RILM के 'प्रत्येक व्यक्ति एक व्यक्ति को सिखाएं' कार्यक्रम के अंतर्गत एक घरेलू सहायक को कार्यात्मक रूप से साक्षर बनाने के लिए तीन छात्रों - नाव्या, अलीशा और वंशिका को 'परिवर्तन के देवदूत' के रूप में सम्मानित किया। यह कार्यक्रम UCSKM स्कूल द्वारा समर्थित है, जिसने 584 विद्यार्थियों को प्रशिक्षित करने का वादा किया था, जो बदले में 584 वयस्कों और बच्चों को सिखलाएंगे।

रोटरी क्लब लदवा - मंडल 3080

कुरुक्षेत्र के साइन्नस अस्पताल के सहयोग से एक निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया था, जिसमें विशेषज्ञ चिकित्सकों ने 150 से अधिक मरीजों के स्वास्थ्य की जाँच किया। क्लब के उपाध्यक्ष अमित सिंघल और रोट्रैक्ट के अध्यक्ष शिव गुप्ता ने अन्य रोटरियनों के साथ मिलकर जाँच शिविर में समन्वय किया।

रोटरी क्लब जयपुर - मंडल 3052

रोटरी क्लब जयपुर मेजेस्टी के साथ मिलकर क्लब ने सीकर के एक गांव में कृत्रिम हाथ फिट करने के लिए एक शिविर का आयोजन किया। 350 से अधिक LN4 हाथ फिट किया गया और इस प्रकार एक दिन में सबसे अधिक संख्या में कृत्रिम हाथ फिट कर क्लब ने अपना नाम गोल्डन बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज कराया।

रोटरी क्लब कानपुर शौर्य - मंडल 3110

क्लब ने माधपुरवा गांव में रोटेरियन दिनेश भवानी के अमर ब्रदर्स नामक ईट की भटटी में एक मोतियाबिंद जाँच शिविर का आयोजन किया। शल्यचिकित्सा की आवश्यकता वाले 30 से अधिक रोगियों का उपचार डॉ जवाहर लाल रोहतगी हॉस्पिटल, कानपुर में किया गया।

रोटरी क्लब दहानु - मंडल 3141

क्लब ने एक साइकिल रैली का आयोजन किया जिसमें स्वच्छ वातावरण और स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा देने के लिए 350 लोगों ने भाग लिया। समुद्र तट पर रेत कला का उपयोग करते हुए 22 फीट का एक रोटरी चक्र का निर्माण किया गया। रोटरियनों ने 20 छात्रों को साइकिल भी उपलब्ध कराया।

रोटरी क्लब सिल्क सिटी - मंडल 3190

क्लब द्वारा आयोजित दो दिवसीय RYLA में कक्षा 8 और 9 के लगभग 130 छात्रों ने भाग लिया। प्रशिक्षण सत्र में युवाओं में नेतृत्व के गुणों को विकसित करने और कैरियर विकास सहयोग पर जोर दिया गया।

रोटरी क्लब कल्याण - मंडल 3142

जैन चैरिटेबल ट्रस्ट के सहयोग से, क्लब ने अपने 'आशा का उपहार' कार्यक्रम के अंतर्गत, आयोजित किए गए विशेष शिविर में 270 व्यक्तियों को LN4 कृत्रिम हाथ फिट किया। रोटरीक्लब बैंगलोर पेंन्या, मंडल 3190 द्वारा कृत्रिम हाथ की आपूर्ति की गई थी।

रोटरी क्लब तिरुपुर वेस्ट - मंडल 3202

DG जयप्रकाश उपाधिया द्वारा तिरुप्पूर के वंजीपलायम हाईस्कूल में एक स्मार्ट कक्षा का उद्घाटन किया गया। क्लब द्वारा रू 2.5 लाख की लागत से स्थापित किए गए डिजिटल केंद्र से लगभग 350 छात्र लाभान्वित होंगे।

विधियाँ

रोटरी क्लब वेल्लोर प्रेसीडेंसी- मंडल 3230

क्लब ने एक मंडल स्तरीय फुटबॉल टूर्नामेंट आयोजित किया जिसमें 17 स्कूलों के खिलाडियों ने भाग लिया। DGN चंद्रबोब समापन सत्र में मुख्य अतिथि थे। क्लब के अध्यक्ष त कमल ने कहा कि यह क्लब के लिए एक बेहतर झठ कार्यक्रम था।

रोटरी क्लब ग्रीन लैंड सिलचर - मंडल 3240

मासीमपुर में BSF वाइफ्स वेलफेयर एसोसिएशन (BWWA) के सहयोग से गर्भाशय ग्रीवा और स्तन कैंसर के लिए स्त्रीरोग जाँच और जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में लगभग 50 महिलाओं की जाँच की गई और उन्हें आगे अनुवती प्रक्रियाओं और दवाइयों के संबंध में सलाह दिया गया।

रोटरी क्लब कटक महानदी- मंडल 3262

मलेरिया, डेंगू और अन्य कीटाणु-जनित रोगों के प्रकोप से बचने के लिए नारज के एक आदिवासी गांव के निवासियों के बीच मच्छरदानी वितरित किया गया।

रोटरी क्लब कलकत्ता ढाकुरिया - मंडल 3291

पुरुलिया जिले के एक ग्रामीण स्कूल आयनर पाठ्शाला में पेयजल सुविधा उपलब्ध कराया गया, जहाँ पेयजल का घोर आभाव है। नई सुविधा से इस आदिवासी क्षेत्र में कम से कम 500 बच्चें और ग्रामीण लाभांवित होंगे।

रोटरी क्लब लुम्बिनी सिद्धार्थनगर - मंडल 3292

बसंतपुर में आयोजित चार दिवसीय RYLA में 60 से अधिक रोट्रैक्टर्स ने भाग लिया, जिसका उद्घाटन DG जया शाह ने किया। शांति निर्माण, नेतृत्व कौशल और व्यक्तित्व विकास को कवर करने के अतिरिक्त, इस कार्यक्रम के दौरान एक पोलियो शांति रैली को झंडा दिखाकर रवाना किया गया।

वी मुथुकुमारण द्वारा संकलित; एल गुनाशेकरण द्वारा रूपरेखा

संक्षेप में

एयर इंडिया में वाई-फाई

जल्द ही एयर इंडिया के ग्राहक अपने मेल देख पाएंगे और व्हाट्सएप संदेशों को भेज पाएंगे, क्योंकि यह हवाई कंपनी भी कई अन्य हवाई कंपनियों की तरह जल्द ही वाई-फाई प्रदान करेगी। हवाई कम्पनियाँ जैसे कि एमिरेट्स, ब्रिटिश एयरवज़, इत्यादि पहले से ही अपने ग्राहकों को इंटरनेट प्रदान कर रही है, परन्तु लगभग हमेशा एक फीस पर। यूके में, सस्ती हवाई कम्पनियाँ जैसे कि नार्वेजियन और जेटब्लू भी मुफ्त वाई-फाई प्रदान करती है, परन्तु केवल कुछ हिस्सों में।

प्रसन्नता सूचकांक में भारत की गिरावट

क्या हम अप्रसन्न लोगों का एक अप्रसन्न देश है? हाँ बिल्कुल, यदि हम विश्व प्रसन्नता सूचकांक में प्रसन्नता को नापने वाले छह मापदण्डों के मुताबिक देखे तो। ये मापदण्ड है आय, एक स्वस्थ जीवन प्रत्याशा, आश्रय लेने के लिए किसी का होना, उदारता, स्वतंत्रता और विश्वास। हम पिछले वर्ष के 118वें स्थान से गिरकर 122वें स्थान पर पहुँच गए है। नवीनतम प्रसन्नता सूचकांक में क्रमानुसार नॉर्वे, डेनमार्क और आइसलैंड ने शीर्ष स्थान हासिल किये है। दुर्भाग्यवश, भारत के सभी पड़ोसी देशों का स्थान भारत से बेहतर है: चीन (79), पाकिस्तान (80), भूटान (97), नेपाल (99), बांग्लादेश (110) और श्रीलंका (120)।

यूएस 4.3 मिलियन पर्यटकों की कमी को दर्ज करेगा

संयुक्त राज्य अमेरीका की सरकार द्वारा हाल ही में लगाये गए यात्रा प्रतिबंधों के कारण, और घृणा अपराधों के बते मामलों में कारण, इस वर्ष वह देश पर्यटक संख्या में 4.3 मिलियन की बहुत बी कमी देखेगा। इस आंके का अनुमान पर्यटन अर्थशास्त्र, ऑक्सफ़ोर्ड अर्थशास्त्र के एक साझेदार, द्वारा लगाया गया है, जो कि दुनिया की सबसे अग्रणी स्वतंत्र वैश्विक सलाहकार फर्मो में से एक है और 190 देशों, 100 औद्योगिक क्षेत्रों एवं 2,600 से भी अधिक शहरों में रिपोर्ट, पूर्वानुमान एवं विश्लेषणात्मक साधन प्रदान करती है।

मनुष्यों की तरह नदियाँ

उत्तराखंड उच्च न्यायलय द्वारा गंगा और यमुना नदी को लोगों की तरह ही समान कानूनी अधिकार एवं जीवित मनुष्य का दर्जा प्रदान किया गया है। इसका मतलब नदी को प्रदूषित करना एक व्यक्ति को नुकसान पहुँचाने के समान है। इस फैसले का पर्यावरणविदों ने बहुत अधिक स्वागत किया है। न्यायालय ने तीन अफसरों को कानूनी संरक्षक के रूप में नियुक्त किया है जो इन नदियों एवं इनकी सहायक नदियों के संरक्षण और बचाव के लिए जिम्मेदार होंगे। न्यायाधीशों ने, माओरी जनजाति द्वारा पूजनीय व्हान्गानुई नदी को न्यूज़ीलैंड सरकार द्वारा जीवित इकाई घोषित किये जाने के फैसले का, अपना फैसला सुनाते समय उल्लेख किया।

4 साल में एक लाख बच्चों ने स्कूल छोड़ा

मेघालय में पिछले चार सालों में लगभग एक लाख बच्चों ने स्कूल छोड़ दिया। वर्ष 2013 में 33,557, वर्ष 2014 में 31,276, वर्ष 2015 में 14,957 और वर्ष 2016 में 17,299 बच्चों ने स्कूल छोड़ा। इसके लिए गरीबी, भाई-बहन की देखभाल और प्रवासन जैसे कारणों का हवाला दिया गया। राज्य सरकार ने अनेक पहलों जैसे कि प्रशिक्षण केंद्र, शिक्षक प्रशिक्षण, बच्चों के लिए अनुकूल समय, आवागमन और अनुरक्षक भत्ता, की शुरुआत की है ताकि बच्चों को दूरदराज के इलाकों से लाकर स्कूलों में रोका जा सके।

खोया और पाया

कितनी बार हमनें एक ऐसे उपकरण की कामना की है जो कि खोयी हुई कार की चाबी, बटुआ या चश्मा ढूंढने में या पार्किंग क्षेत्र में पार्क की गयी कार की सटीक स्थिति को भूल जाने पर पूरी कार ढूंढने में हमारी मदद कर सके? कैलिफ़ोर्निया की एक स्टार्टअप कंपनी द्वारा बनाया गया ट्रैकआर खोयी हुई चीज़ों को खोजने में मदद करता है। उपकरण को वस्तु से जोड़ दीजिये और अपने स्मार्टफ़ोन पर ट्रैकआर एप इंस्टाल कीजिये। अपनी खोयी वस्तु' को खोजने के लिए एप पर क्लिक कीजिये और उसका सटीक स्थान आपकी स्क्रीन पर देखा जाता है।

जयश्री द्वारा संकलित, एस कृष्णप्रथीश द्वारा रूपरेखा

भावी नेतृत्वकर्ता

मुंबई में आयोजित दिशा सभा में वर्ष 2017–18 के भावी DGयों का दल, रोई निदेशक मनोज देसाई, RIDE सी बास्कर और दिशा सभाध्यक्ष PDG भरत पंड्या के साथ।

REGN. NO. TN/CCN/359/2015-2017 LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT NO.TN/PMG(CCR)/WPP-421/2015-2017
REGISTERED WITH REGISTRAR OF NEWS PAPERS FOR INDIA TNHIN/2001/5271 ROTARY SAMACHAR PUBLISHED ON 1ST OF EVERY MONTH